# GURUJI HINDI BOOK

## VOLUME IV

*...एक बार मुझसे कह दिया तो*
*चिंता नहीं अपितु विश्वास ज़रुरी है*
*कि काम तो होगा ही होगा।*

*...गुरुजी*

सरल और विश्वास पूर्ण
हृदय वाले लोगों की
कमियों को,

जिस साधारणता से
गुरूजी दूर करते हैं,
देख कर मन
प्रफुल्लित हो उठता है।

**......गुरूजी,**
**त्रिकाल दर्शी हैं-**

# अविश्वसनीय झलकियाँ

## भाग-4

'राज्जे' - गुरुशिष्य
(राजपॉल सेखरी)

श्री राजपॉल सेख़री के पास
कॉपीराईट © 2010 सुरक्षित

इस पुस्तक के मुद्रण का, लेख़क के पास पूर्ण नैतिक अधिकार है। इस पुस्तक या इसके किसी भाग को,
किसी हालात में प्रकाशक की लिख़ित अनुमति के
बिना छापना, वर्जित है।

इस पुस्तक में लिखी घटनाओं का, सुन्दर रीति से वर्णन
करने के लिये, किसी बनावटी या झूठे चरित्र का निर्माण नहीं किया गया है। इसमें उल्लिखित नाम व घटनाऐं, सिर्फ लेख़क के नज़रिये से लिखी गयी है।

प्रथम संस्करण 2012
भाग-4

प्रकाशक
श्री राजपॉल सेख़री,
19/77, पंजाबी बाग (पश्चिम)
नई दिल्ली.110026,
भारत
mahaguru9@hotmail.com
www.gurujiofgurgaon.com

हिन्दी रूपान्तरण :
----गुलशन अरोड़ा

# मेरे गुरूजी

भाग-4

***लेखक की कलम से*** *........*

***अविश्वसनीय झलकियाँ* (Un-believable Glimpses)** *गुरूजी की स्तुति का गायन है, कोई पुस्तक नहीं है ये...। किसी भी भाग में कथित कोई भी घटना गुरूजी की आभा और उनके ईश्वर होने को दर्शाती है। कोई ऐसा कार्य जो सिर्फ भगवान ही कर सकते हैं, कोई मानव नहीं। ऐसा कार्य गुरूजी चुटिकियों में कर दें और बदले में कुछ भी नहीं लें तो अपनी बुद्धि के अनुसार क्या समझें...? कौन हैं गुरूजी....? क्योंकि वह सब कार्य, चाहे कोई बीमरी हो या कोई अन्य समस्या। संसारी या फिर मानसिक, सब एक इशारे से कर देते है।*

*यह सब जानकारी गुरूजी की इन पुस्तकों में उपलब्ध हैं, जिन्हें जानने के बाद एक नया सा विश्वास उत्पन्न होगा पढ़ने वाले की अन्तरात्मा में और विश्वास का होना, बहुत आवश्यक है। एक ऐसी भावना अंतरतल में जागृत होगी कि "अब कोई डर नही, गुरूजी हैं ...मेरी रक्षा के लिए।" जो कभी ना तो सुना या कभी सोचा, वह गुरूजी चुटकियों में कर देते हैं। बड़े ही सहज़ भाव से कह देते हैं कि "...जा बेटा मैंने तेरा काम कर दिया है।"*

*इसलिए इन पुस्तकों की श्रंखला नई पीढ़ी के लिए वरदान है। गुरूजी की कृपा के आधीन, संसार के दुखों से बचकर और फिर सुखों से पूर्ण तृप्त होकर, अवश्य ही एक इच्छा उत्पन्न होगी कि ईश्वर कौन है और कहाँ है। उसके उपरान्त "ईश्वर की प्राप्ति की इच्छा का जन्म होगा।"*

*अब गुरू की आवश्यकता अवश्यम्भावी है, क्योंकि अब यात्रा आत्मा की है अकेले शरीर की नहीं और इस यात्रा का दारोम्दार सिर्फ गुरू पर निर्भर होता है। कोई अकेले इस यात्रा पथ पर पैर तो रख सकता है लेकिन चार कदम चल नहीं सकता, यह नामुमकिन है। गुरू के बिना यह संभव नहीं। गुरू की कृपा से एक आध्यात्मिक समझ पैदा होगी जो भक्ति के मार्ग में ईश्वर तक पहुँचने के लिए एक सीढ़ी का काम करेगी और वह है "जो कुछ भी मैंने किया है उसका दायित्व ईश्वर पर है, मुझ पर नहीं" "कर्ता" मैं नहीं, सिर्फ ईश्वर है। यह समझ गुरूकृपा से ही आ सकती है और कोई रास्ता नहीं। गुरू कृपा का पा्त्र बनने के लिए गुरू के पास बार-बार जाना और उनकी सेवा करना एक मात्र् रास्ता है।*

पुस्तक का यह भाग आपकी सहायता करे, ऐसी मेरी भावना है और गुरूजी से प्रार्थना है।

कमाल की बात तो यह है कि पूर्णरुप से एक गृहस्थी जैसे दिखने वाले और संसारी लोगों की तरह ऑफिस में काम करके अपने परिवार का भरण-पोषण करने वाले गुरूजी, संसार से पूर्णतया भिन्न थे। जब भी देखा, वे लोगों की बीमारियाँ दूर करते नज़र आते थे। क्या सुबह और क्या शाम। बल्कि रात तक लोगों में घिरे रहते और हर एक का कष्ट दूर करते रहते थे। कोई भी दुखी पूर्ण अपनेपन के भाव से उनके पास आता और सन्तुष्ट होकर वापिस जाता। सबको यही कहते कि अब दवाई लेने की आवश्यकता नहीं, वे अपने आप ठीक कर देंगे और ऐसा ही होता रहा
लगातार....

परिवार में दो पुत्र एवं तीन पुत्रियाँ अपनी अपनी पढ़ाई में संलग्न थे और अपने प्रति पिता के स्नेह और परवरिश से पूर्णरुप से संतुष्ट नज़र आते थे। सुबह से रात तक लोगों में घिरे रहने वाले गुरूदेव, इन बच्चों से कब मिलते थे, इसका ज्ञान लेख़क के पास तो है नहीं।

यह सिलसिला लगातार बीस साल तक चलता रहा। लोग उमड़-उमड़ कर ऐसे चले आते जैसे कि उनका पूर्ण अधिकार हो गुरूजी पर और गुरूजी भी ऐसे मिलते थे जैसे कि उनका इन्तज़ार कर रहे हों। इस युग में ऐसा कहीं और देखने को नहीं मिला।
...धन्य हैं गुरूजी आप।

याद करके एक अछूते आनन्द की अनुभूति हो रही है। कितने ऊंचे भाग्य हैं हमारे कि हमने इस युग में जन्म लिया जिसमें गुरूजी ने अवतार लिया। बहुत भाग्यवान हैं हम सब और आप।

हो सकता है कि बहुत लोगों ने उनके शारीरिक दर्शन न किये हों मगर जिसने यह सौभाग्य प्राप्त किया, उसी की लेखनी से जितना बन पड़ा, आप तक पहुँचाने का प्रयास है।

आशा करता हूँ कि आप भी इस आनन्द सागर में शामिल होंगे और इस शानदार दिव्य आनन्द का अनुभव करेंगे जो शायद आपके इस जीवन में लगभग अनुपलभ्य है।

आईये --- इस आनन्द के सागर में उतरें
......और डूब कर सफ़र करें.......।।

राज्जे, गुरु शिष्य,
(राजपॉल सेख़री)
1 जनवरी, 2012

...आइए, अब चतुर्थ भाग का आनन्द लीजिए...

इससे पूर्व भाग-3 में, 103 से 153 तक झलकियाँ लिखी तथा प्रकाशित की जा चुकी है उसी श्रंखला को और आगे बढ़ाते हुए अब प्रस्तुत हैं कुछ और झलकियाँ ---

उसकी ओर देखकर गुरूजी ने कहा--
"...आजा, तेरा बुख़ार ख़त्म करता हूँ।"

## 154. चारु का निमोनिया, गुरूजी ने एक चुटकी भर तुम्बे की अजवायन से ठीक कर दियज्ञं

कुल्लू (रायसेन) में, मनीष व मन्जु सूरी के निवास पर गुरूजी ने अपना स्थान बनाया हुआ है। मातारानी व उनके बच्चे रेणु, इला, बब्बा, छुटकी व नीटू के साथ इन्दु, बिट्टू, रुचि, पोमी, रुबी, पप्पू और इनके साथ-साथ शिष्य सुरिन्दर तनेजा, ललित मदान, परवानू के गुप्ताजी तथा और भी बहुत से शिष्य अपने-अपने परिवारों के साथ वहाँ थे।

अचानक गुरूजी ने सब बच्चों को पानी के झरने (Waterfall) में प्राकृतिक स्नान करने की आज्ञा दी और सब बच्चे झरने में स्नान का आनन्द लेने में मस्त हो गये। इन बच्चों में मेरी बेटी चारु भी थी, जिसने शायद ज़्यादा देर तक आनन्द लिया और लौटने पर उसे बुख़ार हो गया।

प्रोग्राम के अनुसार गुरूजी सबको लेकर वापिस गुड़गाँव आ गये। लेकिन चारु का बुख़ार खत्म नहीं हुआ। इस तरह दिन बीतते गये मगर बुख़ार वहीं का वहीं था। दवाई खाने की आज्ञा नहीं थी, इसलिए चारु रोज़ गुरूजी से बुख़ार उतारने की प्रार्थना करती रहती।

इसी तरह की एक सुहानी शाम को, गुरूजी का कमरा लोगों से खचाखच भरा हुआ था, हल्के-फुल्के वातावरण का लाभ उठाकर चारु ने कहा, "गुरूजी आज मेरा बुख़ार उतार दीजिये ना ...प्लीज़"

उसकी ओर देखकर गुरूजी ने कहा--
"...आजा, तेरा बुख़ार ख़त्म करता हूँ।" इतना कहकर, उन्होंने प्लेट में रखे किसी मिश्रण में से एक चम्मच उठाया और चारु को बोला, "....खाजा।"

*मातारानी जी भी वहीं बैठीं थीं, कुछ घबरा कर कह उठीं, "ये क्या खिला रहे हो इसे..... !!"*

***गुरूजी ने कहा, "तुम्बे की अजवायन है।"***

*(वास्तव में वह अजवायन नहीं घुग्गी थी, जो तम्बाकू और चूने के मिश्रण से तैयार की जाती है। कुछ साधक, अपनी साधना के दौरान इसका प्रयोग करते हैं ...कभी-कभी।)*

*जैसे ही चारू ने उसे मुँह में डाला, उसका सिर घूमना शुरु हो गया। उसे लगा कि वह गिर जायेगी। अतः वह वॉश-बेसिन* (Wash Basin) *की तरफ भागी। बब्बा उसके पीछे भागा और उसे सम्भाला। इतने में उसने बड़ी ज़ोर से उल्टी कर दी और बहुत सारा कचरा बाहर निकल आया।*

*और बस....!!*

*...उसके बाद न कोई बुख़ार रहा और ना हीं कोई अन्य तकलीफ़।*

***आप कृपा कीजिए गुरूदेव कि हमें आपकी बातों और आपके कार्यों की समझ आ सके।***

*...प्रणाम जी।*

शर्माजी के इस कार्य को जानने के बाद अन्य शिष्यों ने भी उस दिन के बाद गुरु-पूजा शुरु कर दी।

## 155. गुरूजी के विख्यात शिष्य,एफ. सी. शर्मा शिष्यों में पहले हैं जिन्होंने, गुरु-पूर्णिमा पर गुरु-पूजा की शुरुआत की।

एक सुबह एफ. सी. शर्मा जी की माताजी ने, जो एक पवित्र आत्मा थी, मार्ग दर्शन हेतु अपने पुत्र से पूछा कि आज गुरु-पूर्णिमा है, तो क्या उसने अपने गुरु की पूजा नहीं करनी...?

शर्मा जी को लगा जैसे उन्हें किसी ने नींद से जगाया हो। उन्होंने एक नारियल और एक रुमाल लिया और गुरूजी के ऑफिस पहुँच गए। गुरूजी और शर्मा जी एक ही ऑफिस में काम करते थे।
गुरूजी अपने कमरे में बैठे थे कि शर्मा जी उन्हें उठा कर कमरा नम्बर एक में ले गए.. वहाँ एक टेबल पड़ा था और शर्माजी ने गुरूजी को उस पर बैठने की प्रार्थना की। हाथ में एक थाली और पानी का गिलास लेकर जैसे ही उनके समक्ष पहुँचे, गुरूजी ने कहा, "तो तुझे पता है कि आज गुरु-पूजा है...!!

शर्माजी ने नारियल और रुमाल गुरूजी को समर्पित किया, पानी से गुरूजी के पवित्र चरण धोये, उन्हें पौंछा और फिर उस चरणामृत को पी लिया।

गुरूजी ने नारियल और रुमाल अपने पास रख लिया।

शर्माजी की इस क्रिया को देखकर दूसरे शिष्यों ने भी गुरु-पूजा आरम्भ कर दी।

शर्माजी ने एक और कमाल का कार्य किया। गुरूजी की बड़ी बहन, बिमला बहनजी के घर गए और गुरूजी के जन्म की तिथि पूछी। उन्होंने बताया कि उनका जन्म, बसंत पंचमी को हुआ था।

उस दिन शर्माजी गुडगाँव पहुँचे मिठाई का डिब्बा लेकर और माताजी को भेंट किया तथा प्रार्थना की, कि उन्हें प्रसाद दें क्यूंकि आज बहुत बड़ा दिन है। माताजी ने बड़े दिन का विवरण पूछा तो उन्होंने बिमला बहन जी के साथ हुई मुलाकात और इस दिन का महत्व

बताया। सुनकर माताजी बहुत प्रसन्न हुईं और कहने लगीं, "हाँ बेटा, वाकई आज बहुत बड़ा दिन है।"
गुरूजी तो टूअर पर थे अतः उन्होंने माताजी से भरपूर आशीर्वाद प्राप्त किया।
लेकिन एक बात बहुत आवश्यक है, गुरूजी के शिष्यों और गुरूजी के भक्तजनों के लिए। बात का विवरण निम्नलिखित है :-

एक बसंत पंचमी के दिन मैं गुरूजी के कमरे में उनके चरणों में बैठा था कि कोई आया और कहने लगा,

"जन्मदिन की बधाई हो गुरुजी"

उसके जाने के बाद मैंने खुशी और आश्चर्य के साथ पूछा, "गुरूजी, आपका जन्मदिन है आज....?"

गुरूजी ने मेरी ओर बड़े ही प्यार से देखा और कहा, "बेटा, शिवरात्रि है मेरा जन्मदिन... तुम लोगों को मेरा जन्मदिन, शिवरात्रि को मनाना है।"

गुरूजी का समाधि-स्थल नीलकंठ-धाम कहलाता है। नजफगढ़ रोड, नयी दिल्ली पर स्थित इस सारे भवन को बसंत-पंचमी के दिन फूलों से सुसज्जित किया जाता है। समाधि और समाधि वाले कमरे को इस तरह सजाया जाता है कि देखते ही बनता है। इतना सुंदर कि ब्यान नहीं हो सकता। साथ ही बहुत बड़ा भंडारा होता है। सुबह से रात तक भंडारा यानि लंगर चलता है और मीठे पीले चावल का प्रसाद दिया जाता है सबको। ...हज़ारों लोग गुरूजी की समाधि पर पुष्प चढ़ाते और माथा टेकते हैं और लंगर खा कर अपने भाग्य की सराहना करते हैं। लंगर का आनंद गुरु भक्तों के अलावा हजारों अन्य लोग भी लेते हैं।

दृश्य देखने योग्य होता है. तकरीबन 3000 वर्ग फुट का बड़ा हाल सुबह से रात तक खचाखच भरा ही रहता है, लंगर खाने वालों के कारण। ...हज़ार-पंद्रह सौ लोगों को पंक्तियों में बिठाकर एक साथ खाना खिलाया जाता है।

लोगों को बड़े ही प्रेम से बिठाया जाता है...

* फिर सेवादारों का एक ग्रुप उनके आगे पत्तलें रखता जाता है...
* दूसरा ग्रुप सब्जी डालता जाता है...
* तीसरा ग्रुप दही का रायता डालता जाता है...
* चौथा ग्रुप पूरियां वितरित करता जाता है... तो
* पाँचवां ग्रुप मीठे पीले चावल परोसता जाता है।

खाने के बाद सब लोग अपनी-अपनी पत्तलें उठाकर हाल से बाहर खड़े सेवादरों को दे देते हैं। हाल खाली होने के बाद सफाई सेवा दल फर्श को पूर्णरुप से साफ़ करने में जुट जाते

हैं। सफाई कार्य सिर्फ 5 मिनट में पूरा हो जाता है। लोगों के बैठने और उठने के बीच कुल 15-20 मिनट का समय ही लगता है।

फिर बाहर प्रतीक्षा में खड़े दूसरे लोगों को अंदर आने के लिए आमंत्रित किया और बिठाया जाता है और पहले की भांति फिर खाना परोसा जाता है।

यह सिलसिला रात तक चलता ही रहता है। न जाने कितने हज़ार लोग इस भव्य लंगर को ग्रहण करते और आनंद लेते हैं। लंगर खाने वालों की संतुष्टि का अनुमान उनके चेहरों के भाव और उनकी निगाहों से साफ़ पता चलता है। उनका ह्रदय और मन आनंद से झूम रहे नज़र आते हैं।

यह सिलसिला और इतने बड़े कार्यक्रम का प्रबंध और उसका भार पूर्णरुप से मातारानी (गुरूजी की अर्धांगिनी) पर होता है। हजारों की संख्या में लोग और भक्तजन इस भव्य भोजन को ग्रहण करते हैं परन्तु न तो कोई धन का योगदान करता है और ना ही कोई दान देता है। ...गुरूजी के आदेशानुसार धन का व्यय सिर्फ गुरूजी का परिवार ही करता है।

बड़े साल पहले गुरूजी ने कहा था कि लंगर का एक ख़ास महत्व है। इसमें सिर्फ मेरा और मेरे परिवार का धन ही लग सकता है। ...स्पष्ट है कि गुरूजी के शिष्य उनके परिवार में सम्मिलित हैं। करीब तीस वर्षों में एक भी व्यक्ति नहीं मिला जो यह कहे कि इस लंगर के अन्न के लिए उसने कोई धन दिया है।

इस हाल के बाहर, खाना बनाने वालों का भी यही हाल होता है...

* कोई सब्जी बना रहा है तो
* कोई रायता बना रहा है...
* कोई आटा गूंद रहा है तो
* कोई पूरियां बेल रहा है...
* कोई पूरियां फ्राई कर रहा है तो
* कोई उन्हें टोकरों में भर-भर कर बगल में रखे 6-7 फुट बड़े कमरा नुमा चैम्बर में डालता जाता है। वहाँ से उठाकर उन्हें हाल में दे दिया जाता है, वितरण के लिए।

बनाने और वितरण करने वाले सारे सेवादार अपने सिर को कपड़े से ढ़क कर सेवा करते हैं, ताकि उनके बाल खाने में न गिरें।

एक अद्वितीय बात बताने योग्य है कि लंगर शुरु करने से पहले बड़े-बड़े बर्तन यानि कढ़ाईयों (फ्राईंग-वेसेल) और पतीलों को अच्छी तरह से साफ़ किया जाता है। यह पतीले इतने बड़े हैं कि साफ़ करने के लिए इनके अंदर घुसना पड़ता है। वज़न में भी यह इतने भारी होते हैं कि तीन-चार लोग मिल कर ही उठा सकते हैं। तकरीबन पचास सेवादार इस

*कार्य के लिए कुछ दिन पहले आकर सफाई कार्य संपन्न करते हैं। लंगर समाप्त होने के बाद भी यह लोग सारे बर्तनों को अच्छे ढंग से साफ कर अगले पर्व के लिए संभाल कर रख देते हैं। इस कार्य को करने में दो अथवा तीन दिन लग जाते हैं।*

*यह सेवादार हर वर्ष अबोहर (पंजाब) से आते हैं। इनका भक्ति-भाव सराहनीय है। इस सेवा के लिए ये सब सारा साल प्रतीक्षा करते हैं और इस अवसर के लिए अपने आप को धन्य मानते हैं।*

*इतना बड़ा और सुंदर प्रबंध देखने के बाद लगता है कि कोई बहुत बड़ी कम्पनी का यह प्रबंध होगा। लेकिन यहाँ ऐसा कुछ नहीं !*

*तो फिर कौन है जो यह सब आर्गनाईज़ कर रहा है !*
*अवश्य ही कोई ईश्वरीय शक्ति है।*
*उत्तर सिर्फ एक ही है ----*

*...गुरुजी।*
*अदृश्य रुप में,*
*...हर जगह और ...हर परिस्थिति में।*

***केवल आप ही आप हैं--***

***....हे परम पूज्य गुरु जी***
***...अपनी कृपा ऐसे ही बनाये रखना साहिब जी !!***

गुरूजी ने कहा, "उसकी आँखे ठीक तो हो जायेंगी परन्तु कुछ समय के बाद।"

## 156. जब एक लड़की ने आँखों की रौशनी माँगी।

यह तब की बात है जब मैं अपने पुराने घर में सेवा किया करता था। हमारा एक संयुक्त परिवार था और हम चारों भाई उसी घर में रहते थे।

1990 से पहले की बात है, भूमितल (Ground Floor) पर एक बड़ा सा लाउंज है जिसमें लगभग 150 या उससे भी अधिक लोगों के बैठने और स्थान पर जाने के लिए अपनी बारी का इन्तज़ार करने की जगह है। स्थान वाले कमरे में रखी सैटी पर बैठकर मैं लोगों से मिलता था। स्थान के कमरे में मेरे सामने करीब 10 लोग संगठित व अनुशासित तरीके से बैठ सकते थे और बारी-बारी से मुझे अपनी-अपनी समस्यायें व्यक्त कर सकते थे। 'गुरूजी' के विशेष शब्दों में इसे 'सेवा' कहा जाता है।

अपनी बारी आने पर, एक जवान लड़की बड़े ही आक्रमक अंदाज से बोली, "आज मैं वो सब प्राप्त करूंगी जो मैं चाहती हूँ।" ...और कहने लगी कि यहाँ हर एक की इच्छा पूर्ण होती है, तो फिर मेरी क्यों नहीं...?

सुनकर मैं भावुक हो गया। मैंने गुरूजी की बेहिसाब आध्यात्मिक शक्तियों का ध्यान किया और पूछा कि उसे क्या चाहिए...! उसने कहा, "आँखों की रौशनी" फिर कहने लगी कि आज के बाद वो बिना चश्में के, पूर्ण स्वस्थ आँखों से देखना चाहती है।

पता नहीं क्या हो गया मुझे, छूटते ही मैंने कहा, "जाओ, पानी की एक बोतल लाओ।" वह बोतल लाई और गुरूजी के आदेशानुसार, उनकी कृपा से मैंने जल बना कर उसे थमा दिया और बड़े आत्मविश्वास से कहा, "कल सुबह तेरी आँखें बिलकुल ठीक होंगी।" ...और वो लड़की आशीर्वाद लेकर बाहर चली गयी।

स्थान से बाहर जाने से पहले उसके मन में आया कि क्यों ना रसोई में जाकर थोड़ी बर्तनों की सेवा कर लूं। इस विचार से वो रसोई में जाकर काउंटर पर खड़ी हो गयी। जल की बोतल काउंटर पर रख कर, उसने प्लेटें धोना शुरु कर दिया। धोने के बाद उसने प्लेटें जैसे ही काउंटर पर रखी, उसका हाथ लगा और बोतल काउंटर पर गिर गयी।

*आश्चर्य* --

*बोतल गिरते ही बुरी तरह से फट गयी और टुकड़े-टुकड़े होकर बिख़र गयी। सारा जल बिख़र गया-- वो और बाकी की लड़कियाँ अचम्भे से देखती ही रह गयीं। रखी हुई बोतल तीन-चार इंच नीचे गिरी और इस तरह फटी, जो संभव नहीं था। सभी हैरान रह गए।*

*अगले दिन गुरूजी के दर्शनों के लिए और कल जो कुछ हुआ था, बतलाने के लिए, मैं गुरूजी के पास गुडगाँव पहुँचा। मैंने कहा, "गुरूजी, यह कैसे हो सकता है कि जल की बोतल तीन-चार इंच नीचे लुडकी और गिर कर टुकड़े-टुकड़े हो गयी जबकि बोतल शीशे की नहीं, नरम प्लास्टिक की थी।*

*"गुरूजी ने कहा, "मैं जानता हूँ।"*

*"ईश्वरीय शक्ति का प्रयोग करते समय तू इतना भावुक हो गया और भूल गया कि उसकी नज़र मालिक ने ही कमज़ोर बनाई है, उसके कुछ कर्मों की वजह से। उसके माँगने पर तूने आठ-दस घंटों में पूरी नज़र ठीक कर दी। तुमने यह भी नहीं सोचा कि ईश्वर ने किसी कर्म के कारण ही उसकी नज़र कमज़ोर की है। उसके माँगने पर दस घंटों में सारी की सारी ठीक करने के बजाय दस महीनों में करते ताकि वह दस बार गुरु स्थान पर फुल्लियाँ चढ़ाती और मालिक के रिकार्ड में उसकी श्रद्धा, भक्ति और गुरु के प्रति विश्वास दर्ज हो जाता।*

*तुम सबको भरपूर शक्तियों से संपन्न करने के बावजूद, मैं तुम पर नियंत्रण स्वयं् करता हूँ ताकि कहीं कोई भूल हो तो हाथ के हाथ सुधार भी कर दूँ। इसीलिए मैंने जल को, बोतल फाड़ कर गिराया था ताकि उस जल की एक बूँद भी उसके पास न रहे। उसकी आँखे ठीक तो हो जायेंगी परन्तु कुछ समय के बाद।"*
*वाह ! ...हे गुरुदेव -- वाह !*

*आप अतुलनीय हैं...*
*आप सब बड़ों से बड़े हैं।*

***संसार में कोई भी ऐसा नहीं कर सकता और न ही कह सकता है सिवाए देवो महेश्वरा के...! लेकिन मैंने तो सिर्फ आपको ही देखा है मेरे साहिब...!***

*---हे गुरुओं के गुरु, मुझे हमेशा अपनी शरण में रखना। मेरी प्रार्थना है कि जो भी आप की शरण में आयें, उन पर भी अपनी कृपा बनाये रखना।*

*......मैं प्रार्थना करता हूँ जी।*

*गुरुजी बोले, "हाँ, मैं सब जानता हूँ और उसे पहले ही ठीक कर चुका हूँ।"*

## **157. गुरुजी ने कहा, मुझे उसकी चिट्ठियाँ पढ़ने के लिए हैदराबाद जाना पड़ता है।**

*जैसा कि हमारी सामाजिक परिस्थितियों में होता है, एक नवविवाहिता युवती को अपने ससुराल में निबाह करने के लिए कुछ परेशानियाँ झेलनी पड़ती हैं और ऐसे ही एक लड़की को विवाह के पश्चात् दिल्ली से हैदराबाद जाना पड़ा। निश्चित् ही कुछ परेशानियाँ भी आयीं। अपनी पीड़ाऐं वह चिट्ठियों के माध्यम से गुरुजी को लिखा करती थी। लेकिन कभी डाक से भेजती नहीं थी उन्हें। केवल उनके रुप के पीछे, अपने घर पर बने स्थान में ही रख दिया करती थी।*
*साल में केवल दो बार, महा-शिवरात्रि और गुरु-पूर्णिमा पर ही आना होता था उसका। ... और ऐसे ही एक बार जब उसका आना हुआ तो गुरुजी से अकेले में बात करने का मौका मिला। अपनी व्यथा जैसे ही उसने ब्यान करनी शुरु की, तो गुरुजी बोले, "हाँ, मैं सब जानता हूँ और उसे पहले ही ठीक कर चुका हूँ।" वह आश्चर्य चकित होकर बोली, "लेकिन गुरुजी आप कैसे जानते हैं...? मैंने तो किसी से इस बारे में नहीं कहा।"*

*इस पर गुरुजी बोले, "बेटा, जो चिट्ठयाँ तू अपने स्थान पर रखती है, उन्हें पढ़ने के लिए मुझे गुड़गाँव से हैदराबाद जाना पड़ता है।"*

*वाह --हे गुरुदेव...वाह!*

***...हे लीलाधारी, ....कैसी पहुँच है आपकी....!***
***बिलकुल भगवान जैसी।***

***आपका तो गुणगान करना भी सम्भव नहीं लगता- प्रभु..!!***

*सिर्फ प्रणाम ही कर सकता हूँ मेरे साहिब--*
*स्वीकार कीजिए-स्वीकार कीजिए।*

गुरूदेव मुस्कुराये और बोले, "ठीक है... आने वाले सूर्य ग्रहण के दिन ठीक कर दूंगा।"

## 158. गुरूजी ने कहा, "मैं तेरी घुटने की दर्द आने वाले सूर्य ग्रहण के दिन ठीक कर दूंगा।"

एक 6 वर्षीया लड़की, जो पहली कक्षा में पढ़ती थी अपने दाहिने घुटने की दर्द से परेशान थी, डॉक्टरों ने उसकी माँ से कहा कि बचपन में भाग्यवश पोलिओ की दवा दी जाने के कारण वह बच गयी है, नहीं तो उसे पोलिओ हो सकता था।

दर्द इतना असह्य था कि वह दो महीनों तक स्कूल नहीं जा सकी। फिर शुरु हुआ डॉक्टरी जाँच और एक्सरे का सिलसिला। दवाओं का सिलसिला चलता रहा। जब वह छठी कक्षा में पहुँची तो घुटने के नीचे पस होने के कारण डॉक्टरों ने ऑपरेशन करना ठीक समझा। परन्तु एक समस्या यह थी कि शायद बच्चे की टाँग का बढ़ना बन्द हो सकता था। अतः वे पस को सुखाने की दवाईयाँ देते रहे।

इस बीच उस लड़की के पिता, गुरूजी के शिष्य बन गये थे और समस्त परिवार के साथ उनके दर्शनों के लिए गुडगाँव जाने लगे। जब उस लड़की ने लोगों को ठीक होते देखा, तो उसने भी गुरूजी से अपने घुटने की दर्द ठीक करने की प्रार्थना की। इस पर गुरूजी ने अपने किसी शिष्य से दर्द ठीक करने को कहा। शिष्य ने ठीक तो किया, पर दर्द फिर लौट आता था। कभी कुछ दिनों में, तो कभी महीनों में दर्द वापिस आ जाता था।

फिर एक रोज़ उस लड़की ने गुरूजी से दर्द से सदैव छुटकारा दिलाने की प्रार्थना की। इस पर गुरूदेव मुस्कुराये और बोले, "ठीक है... आने वाले सूर्य ग्रहण के दिन ठीक कर दूंगा।"

यह शिवपुरी स्थान की बात है, सूर्य ग्रहण के दिन गुरूजी हम सभी को लेकर स्थान की छत पर गए। उनके शिष्य आर.पी. शर्मा जी ने अपने हाथ से उस लड़की के घुटने को पकड़ा और ज़ोर से दर्द को खींचते हुए पैर के अंगूठे तक ले आये। यह नवम्बर 1977 की बात है। ...बस, इसके बाद न तो दर्द ही उठी और न ही किसी दवा का ज़िक्र ही आया।

*वाह क्या निर्णय है...!*

*कैसा अधिकार है....!*

*...जो न कभी साहित्य में देखा गया,*

*...और न ही भौतिक विज्ञान में!*

*ऐसी महारथ, ...ऐसा प्राधिकरण और*

*इस अंदाज़ में... !!*

***ऐसे दया निधान और कृपालु हैं गुरुदेव।***
***कभी न ठीक होने वाली बीमारी, कितनी सहज़ता से ठीक कर देते हैं।***

*एक आप ही हो, ...हे महागुरुदेव !!*

गुरुजी मुस्कुराये और हाथ को खोलकर बोले, "ले देख चमत्कार।" इतना सुंदर रुप, पूरा का पूरा शिव-परिवार, गुरूजी की हथेली पर नज़र आया।

## 159. गुरूजी ने सर्वव्यापी-सर्वज्ञता के एक हिस्से का ज्ञान दिया।

मेरे पति अक्सर गुरुजी के पास जाया करते थे। मगर मेरा विश्वास बिलकुल नहीं था। मेरे पति मुझे मनाने की भरपूर कोशिश करते, मगर मैं नहीं मानती थी।

एक दिन मैंने कहा, ...चलो आज मैं भी चलती हूँ। अपने पति के साथ मैं भी लाइन में खड़ी हो गई। गुरुजी आये और लाइन में लगे सब लोगों से मिले और जैसे ही मेरी बारी आयी, वो वापिस चले गए बिना मुझे मिले और मैं उनका आशीर्वाद लिए बिना, वापिस घर चली आई।
अगली बार फिर मैं चली गयी और इस बार भी लाइन में मेरे आगे 2 लोग रह गये कि गुरूजी फिर वापिस चले गए और मैं इस बार भी बिना आशीर्वाद लिए वापिस आ गई। ऐसे लगातार मैं 15 बार गयी मगर वे मुझे मिलने से पहले, हमेशा की तरह वापिस लौट जाते, बिलकुल पहली बार की तरह। सौलवीं बार घर से निकलने से पहले मैंने उनकी फोटो के सामने खड़े होकर कहा कि इस बार अगर आप ना मिले, तो मैं जिन्दगी भर नहीं आऊँगी।

मैं गई और हमेशा की तरह इस बार भी लाइन में खड़ी हो गई। गुरुजी आये और उन्होंने पहली बार मुझे आशीर्वाद दिया। मैंने उन्हें रोक लिया। मैंने कहा, आप से बात करनी है। उन्होंने कहा कि 2 दिन के बाद आना। मैंने कहा, "दर्शन दोगे ना..?" उन्होंने कहा "हाँ"।

तो इस तरह सौलवीं बार में मुझे, गुरूजी से बात करने का आश्वासन मिल ही गया।

मेरी आर्थिक स्थिति भी अच्छी नहीं थी। यहाँ तक कि मेरे पास बस के किराये का इन्तजाम भी नहीं था। मैंने गुरूजी के पास जाने का रात को ही प्रोग्राम बना लिया था। लेकिन कैसे..? अब मैंने उनकी फोटो के आगे खड़े होकर प्रार्थना की, कि गुरूजी मेरे लिए कुछ पैसों का इन्तजाम कर दीजिए ताकि मैं आपके पास आ सकूं। गुरूजी मैं आपके पास आना और आपके दर्शन करना चाहती हूँ और फिर मैं सो गई।

एक अविश्वस्नीय बात हुई।

सुबह जब मैं उठी तो मैंने देखा कि मेरे कमरे की शैल्फ पर पचास रुपये का एक नया नोट रखा हुआ था। मैं खुशी से उछली और मैंने महसूस किया कि कुछ भी हो, यह इन्तजाम गुरूजी ने ही किया है।

आख़िर मैं दो दिन के बाद गई और गुरूजी के कमरे के दरवाजे के बाहर खड़ी हो गयी। गुरूजी ने अन्दर आने का ईशारा किया तो मैंने कहा कि नहीं, मुझे डर लग रहा है। तब सेवादारों ने पकड़ कर मुझे अन्दर किया। लेकिन मैं डर रही थी, क्योंकि अन्दर साँप ही साँप दिखाई दे रहे थे। गुरूजी ने पूछा, "डर क्यों रही है...?"

मैंने बताया कि इतने साँप देखकर तो कोई भी डर जाएगा। गुरूजी ने पूछा, "कहाँ हैं ... साँप?"

मैंने कहा दीवारों पर लटके तो हैं। उन्होंने दूसरों से पूछा तो सबने इन्कार कर दिया। तब गुरूजी ने कहा कि अगर साँप होते तो सबको नज़र ना आते। तेरे को जो नज़र आ रहे हैं वो साँप नहीं, तेरे पाप हैं बेटा।

विश्वास तो मेरा पूरा हो गया परन्तु मैंने फिर कहा, गुरूजी मुझे कोई चमत्कार दिखाओ। गुरूजी मुस्कुराये और हाथ को खोलकर बोले, ....ले देख चमत्कार" इतना सुंदर रुप, पूरा का पूरा शिव-परिवार, गुरूजी की हथेली पर नज़र आया।

गुरूजी ने पूछा, देखा चमत्कार..?
ना जाने क्या हुआ, मैंने ऐसे ही बोल दिया कि मेरा मन नहीं भरा। ".....तब गुरूजी ने कहा,.... ले और देख।" तब उन्होंने फिर हाथ खोला और उनकी हथेली के बीचोंबीच ओम 'ॐ' लिखा हुआ था, पूरा लाल रंग का, जो 2 सैंकिड तक मैंने देखा फिर लुप्त हो गया और मेरा विश्वास जो कायम हुआ वो आज तक कायम है

हे भगवान.... यह तो अविश्सनीय है।

तब मैंने उनके समक्ष पूर्ण समर्पण कर दिया। कितनी भाग्यशाली है यह महिला... 'रानी' नाम है उसका....!!

समय बीतता गया और रानी के बच्चे बड़े हो गये। रानी लगातार गुड़गाँव तथा नीलकण्ठ धाम जाती है। मेरी फैक्ट्री की मैनेजर भी उसी कॉलौनी में ही रहती है और संयोगवश सितम्बर 1, 2011 के बड़े वीरवार के शुभ अव़सर पर वे गुड़गाँव स्थान पर मिले। उसने रानी की कार में ही दिल्ली वापिस आने का निर्णय लिया और पूरे रास्ते गुरूकृपा की चर्चा होती रही। रानी ने अपनी कहानी सुनानी शुरु की और मैनेजर भी पूर्ण दिलचस्पी से सुनती रही। अगली सुबह मैनेजर मेरे ऑफिस में आईं और जो कुछ उसने रानी से सुना था मुझे बता दिया।

अगली सुबह चार बजे, मुझे गुरूजी ने आदेश दिया कि मैं रानी से मिलूं। मैंने अपनी मैनेजर को भेज कर उसे बुलवाया। मैं फैक्ट्री नहीं गया और उससे पंजाबी बाग स्थान पर ही मिला और उससे महागुरू की महान कृपा के बारे में सुना।

उसने जो कुछ बताया वह नीचे लिख रहा हूँ---

<u>बात का वृत्तांत इस तरह था कि</u>---
सन् 2003 में, वह अपनी बाँह में दर्द के कारण वैसे ही दीन दयाल अस्पताल गई। डॉक्टर ने उसे इंजेक्शन लगाये। लेकिन दर्द का कम होना तो दूर, दर्द बढ़ती ही गई। ऐसा लगातार एक महीना चलता रहा। जिस कैमिस्ट से दवाई लेती थी, उसने कहा कि आप एक्सरे करवाओ ताकि इसका कारण तो पता लगे। ...आपकी बाजू नीली पड़ गयी है और सूज भी गयी है।

तब उसने एक्सरे करवाया और पता चला कि इंजेक्शन की सुई अन्दर ही रह गयी है। जाँच के बाद डॉक्टरों ने बताया कि ज़हर अन्दर फैल चुका है, इसलिए बाजू काटनी पड़ेगी। रानी और उसके बच्चे इस खब़र से डर गये। रानी गुरूजी की फोटो के आगे खड़ी होकर प्रार्थना करने लगी, "गुरूजी मेरी बाजू कटनी नहीं चाहिए। सिर्फ ऑपरेशन से ही ठीक कर दो इसे।" ऑपरेशन का दिन और समय तय कर दिया गया और उसे अस्पताल में सर्जरी के लिए भर्ती कर दिया गया।

आखिर मैं ऑपरेशन कक्ष में लेटी हुई थी और डॉक्टरों ने मेरी बाजू सुन्न करने के लिए इंजेक्शन दे दिया। उस इंजेक्शन ने काम नहीं किया और एक दूसरा इन्जेक्शन दिया गया और वह भी निष्फल हो गया। फिर एक तीसरा इन्जेक्शन दिया गया और आश्चर्य... वह भी निश्कृय साबित हुआ। अतः करीब ₹5000/- मूल्य के तीन इन्जेक्शन दिये गये लेकिन सभी बेकार साबित हुए और डॉक्टरों ने सर्जरी को स्थगित घोषित कर दिया।

उसने बताया कि मैंने दृढ़तापूर्वक कहा कि आप ऑपरेशन करो, मैं दर्द बर्दाश्त कर लूंगी क्योंकि गुरूजी यहाँ आ जायेंगे, मेरा ध्यान वे स्वयं् रखेंगे और मुझे दर्द नहीं होगी। लेकिन वे मेरी बात समझ नहीं सके। लेकिन बाद में सर्जन डॉक्टरों की टीम मेरी बाँह को सुन्न किये बगैर ऑपरेशन करने को तैयार हो गई। और ऑपरेशन शुरु हो गया।

रानी ने मुझे बताया ----

आप जानते हैं कि क्या हुआ....?

मैंने देखा कि गुरूजी आये हैं--- सफेद सफारी सूट में और मेरे सिर की तरफ खड़े हैं। उन्होंने आकर मेरी बाजू को पकड़ा है और उनका बांया हाथ मेरे सिर पर है। वो मुझे देख रहे हैं और मैं उन्हें देख रही हूँ.. डॉक्टरों ने ऑपरेशन शुरु कर दिया था जो लगभग ढ़ाई घन्टे तक चलता रहा।

***डॉक्टर अपने काम में व्यस्त थे और मैं सारा समय सिर्फ उन्हें ही देखती रही। सफलता पूर्ण ऑपरेशन हो गया। ऑपरेशन के बाद, वहाँ पर खड़े लोगों से मैंने कहा, "देखो-- मेरे गुरुजी खड़े है ...और मुझे आशीर्वाद दे रहे हैं। लोगों ने भी देखा ...सबने उनके दर्शन किए और मंत्र-मुग्ध से हो गए कि वे ऑपरेशन कक्ष में कैसे खड़े हैं।***

*ना मेरी बाजू कटी और ढाई घण्टे के ऑपरेशन में ना ही कोई तकलीफ़ ही हुई....।*

*उसने मुझे अपनी बाजू पर जख़्म के निशान भी दिखाए और कहा कि देखो, मेरा बाजू भी ठीक है और मैं सारा काम आराम से करती हूँ।*

पूरे विश्वास के साथ एक भोले-भाले भक्त द्वारा सादगी से की गई प्रार्थना सुनी गई और उसके लिए सम्पूर्ण व्यवस्था समय से पहले 'प्रभुओं के प्रभु' द्वारा कर दी गयी।

## 160. दिनेश ने 4 लोगों से एक फ्लैट की ख़रीद के लिए ₹12 लाख लिये।

यह झलकी न तो पूर्णतया संसारिक है और न ही पूर्णतया आध्यात्मिक। यह तो सिर्फ गुरूजी के प्रति समर्पण और अटूट विश्वास की है।

मुम्बई के दिनेश भंडारे के परिवार को एक बड़ा घर लेने की ज़रुरत आन पड़ी थी। लेकिन उसके पास बड़ा घर लेने के लिए पैसों का इन्तजाम नहीं था। इसलिए दिनेश को समझ नहीं आ रहा था कि इस परिस्थिति से वह कैसे निपटे। बच्चे बड़े हो गये थे, इसलिए बड़े घर की अब बहुत ज़रुरत थी। लेकिन उस समय पर्याप्त मात्रा में पैसे नही थे उसके पास।
भुगतान करने की अंतिम तिथि तेजी से नज़दीक आ रही थी और दिनेश चिंतित था। क्योंकि ₹बीस लाख पहले ही एड़वाँस के रुप में दे चुका था तथा ₹ग्यारह लाख की और सख़्त ज़रुरत थी और वह भी इतने कम समय में। वह बैठ गया और उसने गुरूजी से प्रार्थना की, "गुरूजी, पैसों का इन्तजाम नहीं हो रहा, कृपा करके आप ही कुछ कीजिए।"

जब वह चिंतित बैठा हुआ था तो, बिंदु (दिनेश की पत्नी) के करीबी एक व्यक्ति ने उससे उसकी उदासी का कारण पूछा और फिर तभी उसने खुशी-खुशी 2 लाख रुपये देने की पेशकश कर दी। कुछ समय बीत गया और एजेंट, जो इस सौदे में प्रमुख व्यक्ति था, उसने भुगतान करने की अंतिम तिथि के बारे में याद दिलाया। दिनेश ने उसके लिए धन जुटाने में असमर्थता व्यक्त की। एजेंट ने कहा कि चिंता करने की आवश्यकता नहीं, उसके पास 3 लाख रुपये पड़े हैं और वह उसे उधार दे सकता है। अब दिनेश को रवि पाटिल नाम का एक पुराना मित्र मिला और उसने ₹4 लाख दिया और बाकी का घाटा भी, बिना किसी अतिरिक्त प्रयास के पूरा हो गया।

काम हो गया। फ्लैट खरीदा गया और दिनेश आज तक निश्चित् तारीख़ तक फंड की व्यवस्था पर हैरान है। सोचता है कि आज के ज़माने में तो माँगने पर भी कोई नहीं देता लेकिन यह क्या हुआ कि बिना माँगे एक नहीं तीन चार लोगों ने अपने आप पूछा और फिर पैसे दे भी दिये, बड़ी खुशी के साथ।

*पूर्णरुप से ध्यान गुरूजी महाराज की ओर ही जाता है। मेरी प्रार्थना पर गुरूजी ने इन सबके मन के अन्दर मेरी सहायता करने का विचार डाला होगा और वे सब एक-एक करके चले आये पैसे देने के लिए और समय से पहले मेरा काम हो गया।*

***धन्य हैं गुरुदेव आप...***

***...कितना ख्याल रखते हैं साहिब जी।***

*पूरे विश्वास के साथ एक भोले-भाले भक्त द्वारा सादगी से की गई प्रार्थना सुनी गई और उसके लिए सम्पूर्ण व्यवस्था समय से पहले 'प्रभुओं के प्रभु' द्वारा कर दी गयी।*

*ऐसे गुरुओं के गुरु, हमारे प्यारे गुरूजी को कोटि-कोटि प्रणाम...*

*गुरुजी ने कहा--- "जहाँ गुरु होते हैं वहाँ लंगर ज़रुर चलता है। लोग आते हैं और खाना खाते हैं। कोई भूख़ा नहीं जाता और खाना कभी कम नहीं हो सकता।"*

## 161. जब गुरुजी नागपुर के द्वार पर सुरेन्द्र तनेजा, सीताराम जी व एस. के. जैन साहब को साथ ले गये।

*एक और सुन्दर घटना नागपुर में घटित हुई, जब सोमवार के उपवास के दिन भोजन पूरा पूरा ही था।*

*सोमवार की रात थी, आलू की सब्जी और चपातियाँ सीताराम जी ने बनाई। तीनों को बहुत ज़ोर से भूख़ लगी थी और सभी इन्तजार कर रह थे कि कब गुरुजी उपवास खोलने की आज्ञा देगें....!!*

*संयोगवश, आठ लोग और आ गये। गुरुजी ने सीताराम जी को आज्ञा दी कि वे सभी उपस्थित लोगों के लिए खाना परोसें। अब चार लोगों के लिए बनाया गया खाना, बारह लोगों में कैसे परोसा जा सकता था। इस पर ये कि सुरेन्द्र तनेजा और सीताराम जी को भूख़ भी बहुत ज़ोर से लग रही थी। परन्तु गुरुजी ने कहा कि परोसने के लिए खाना ले आओ।*

*अतः उन्होंने कारपेट, जहाँ गुरुजी और सभी भक्तजन खाने के लिए बैठे थे, सब्जी का पतीला और सभी चपातियाँ एक प्लेट में लाकर रख दीं।*

*सब्जी प्लेट में परोस दी गई। गुरुजी ने चपातियों की प्लेट हाथ में ले ली और सभी को चपातियाँ बाँट दी। गुरुजी ने दुबारा फिर, सभी को चपातियाँ बाँटी और चमत्कार हो गया। सभी लोग तृप्त हो गये और गुरुजी शिष्यों को और चपातियाँ लेने के लिए आग्रह कर रहे थे, लेकिन किसी के पेट में और जगह नहीं थी। अतः किसी ने भी और चपाती नहीं ली। कुछ चपातियाँ अभी भी उसी प्लेट में  थी, जो बच गयी थीं।*

*उन लोगों के जाने के बाद, गुरुजी ने सीताराम जी और सुरेन्द्र को भरपूर डाँट लगाई और कहने लगे - "मेरे शिष्य होकर तुमने कैसे सोच लिया कि खाना कम पड जायेगा और भूख़ा रहना पड़ेगा..?"*

***गुरुजी ने आगे कहा--- "जहाँ गुरु होते हैं वहाँ लंगर ज़रुर चलता है, ऐसा ईश्वरीय विधान है। जितने भी लोग आते हैं सभी खाना खा कर ही जाते हैं। कोई भूख़ा नहीं जाता और खाना कभी कम नहीं हो सकता।"***

लगता है कि उपरोक्त घटना के रचैयता गुरूजी स्वयं् थे।

* खाना कम पड़ जाना और
* शिष्यों के मन में विचार आना कि भूखा रहना पड़ेगा और
* अन्त में सबके मन के विचार जानकर अपने अन्तर्यामी होने का प्रमाण देना।
* 4 लोगों का खाना 12 लोगों को खिलाना और फिर भी कुछ बच जाए,
यह अविश्वस्नीय है।

**गुरूजी हमारी सोच की सीमाओं से बहुत ऊपर हैं।**

...धन्य हैं गुरूदेव आप
कोटि-कोटि प्रणाम है आपको... साहिब जी।

गुरूजी बोले---"जा, ...आज के बाद तू ठीक रहेगी।" उसके बाद उसे, ऐसा दर्द फिर कभी नहीं हुआ।

## 162. गुरूजी ने मोन्टी की माँ को चूरन दिया और रसौलियाँ पेट से बाहर निकल आईं।

सन् 1989 की बात है। मोन्टी सेठ और उसके माता-पिता, गुड़गाँव के सैक्टर 7 वाले स्थान पर गये और मोन्टी सेठ ने गुरूजी से अपनी माँ की सेहत के लिए कृपा करने की प्रार्थना की। वास्तव में वह हमेशा बीमार रहती थी और उसे जल्दी-जल्दी पेटदर्द की शिकायत होती रहती थी तथा रोज़-रोज़ दर्द-निवारक दवाईयाँ (Pain Killers) ले-लेकर तंग आ चुकी थी। इसी कारणवश मोन्टी अपनी माँ को लेकर अपने पिता के साथ, गुरूजी के पास गया था।

भाग्यवश गुरूजी प्रसन्न मुद्रा में बैठे थे। जब उसने गुरूजी को दर्द-निवारक दवाईयों (Pain Killers) से तुरन्त राहत के लिए प्रार्थना की, तो गुरूजी बोले----

"ठीक है....!! इसे मैं अभी ठीक करता हूँ।"

उन्होंने इन्दु को बुलाया और माताजी द्वारा बनाया गया चूरण मंगवाया। गुरूजी ने उसमें से थोड़ी सी मात्रा लेकर उसे दी और अगले दिन रात 10 बजे खाने के लिए कहा। अगले दिन उसने वह चूरन खा लिया और 10-15 मिनट में ही 7-8 रसौलियाँ उसके गर्भाशय से बाहर आ गई। यह एक बहुत बड़ा आश्चर्य था जबकि इन रसौलियों को बाहर निकालने के लिए डॉक्टरों ने ऑपरेशन करने की सलाह दी हुई थी।

अब सन् 2012 है। 22 साल बीत चुके हैं ऐसा दर्द या ऐसी कोई समस्या उसके सामने दुबारा नहीं आई।

यह सोचने का विषय है कि इतनी सारी रसौलियों (Tumor) को पेट के अन्दर पनपने में कितना समय लगा होगा...!! ...और यह अन्दाज़ा लगाना भी मुश्किल है कि कैसे माताजी द्वारा बनाया गया चूरन जो गुरूजी अक्सर पेट की गैस के लिए दिया करते थे, उसकी एक चम्मच खुराक से इतनी सारी रसौलियाँ (Tumor) बाहर आ गईं......!!

स्पष्ट है, कि गुरूजी ने कोई आध्यात्मिक आदेश ही दिया होगा कि उसने अपना काम कर दिया तथा रसौलियों (Tumor) को बाहर निकलने पर मजबूर होना पड़ा होगा, जो किन्हीं दवाईयों द्वारा सम्भव नहीं था।

गुरूजी का एक और चमत्कार, इसी सेठ परिवार ने दिसम्बर 24, 1990 को देखा। मोन्टी की माँ डॉक्टर सेहरा के अस्पताल में भर्ती थी। संयोगवश उन दिनों गुरूजी, पंजाबी बाग

में अपने ऊपर के कमरे में थे। मोन्टी उनके पास आया और उसने गुरूजी से प्रार्थना की। गुरूजी के पूछने पर मोन्टी ने अपनी माँ को अस्पताल ले जाने का कारण बताया। उसने बताया कि ह्रदय में गहन समस्या से उनकी हालत चिंताजनक है। उनके ह्रदय की धडकन उच्चतम सीमा पर है, अतः डॉक्टर भी चिंतित हैं। डॉक्टर ने कहा है कि उन्हें गंगाराम अस्पताल ले जाओ लेकिन मोन्टी दौड़कर गुरूजी के पास आ गया और उन्हें स्थिति की गम्भीरता से अवगत करा दिया।

गुरूजी ने मोन्टी से कहा, "तुम उसकी बांयी बाजू पकड़ो, बीच के जोड़ पर दबाव दो और तीन बार ऊपर की ओर सरकाओ। वह मूत्र त्याग कर देगी और मैं राज्जे (गुरूशिष्य) को भेज दूंगा फिर वो सम्भाल लेगा। उसके बाद तुम उसे घर ले जाना।

गुरूजी के आदेशानुसार मोन्टी अस्पताल गया और उसकी कोहनी के अंदर के भाग पर दबाव डालकर वैसा ही किया जैसा गुरूजी ने कहा था। परिणाम स्वरुप उसने पेशाब कर दिया। अब मोन्टी उसे घर ले जाने की तैयारी करने लगा।

उसके आचरण को देखकर डॉक्टर ने आश्चर्य से पूछा, "क्या तुम गम्भीर हो, क्या तुम अपनी माँ को जीवित नहीं देखना चाहते..?" उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि उन्हें घर नहीं, गंगाराम अस्पताल में भर्ती कराना चाहिए।

मोन्टी की बहन किरन भी वहाँ मौजूद थी। वह भी यही जानना चाहती थी कि उसने आगे क्या करने का विचार बनाया है...? मोन्टी ने दो टूक जवाब दिया और कहा कि वह वही कर रहा है जैसा गुरूजी ने उसे आदेश दिया है। वह उन्हें घर ले जा रहा है, ... अभी।

सुनकर किरण परेशान हो गयी और वह उससे सहमत नहीं थी। लेकिन मोन्टी अपनी बात पर अटल था। अन्त में उसने डॉक्टरों से एक बार दुबारा ई.सी.जी. करने का अनुरोध किया। डॉक्टरों ने एक बार पुनः ई.सी.जी. परीक्षण किया, परिणाम बिल्कुल सामान्य थे। डॉक्टर बहुत चकित हो गये और मोन्टी से कहने लगे कि एक घन्टे में हुआ क्या है..? क्योंकि कुछ समय पहले ह्रदय की हालत बहुत चिंताजनक थी। उन्होंने आगे पूछा, "वह व्यक्ति कौन है, जो कुछ समय पहले यहाँ आया था ...और उसने इसके साथ किया क्या था...?"

उसकी माँ तो ठीक हो गई लेकिन मैं समझ नहीं पाया कि कैसे...! यह कैसे सम्भव हो सकता है...! यह बात हज़म नहीं होती। एक घन्टा पहले जो अत्याधिक ख़तरे में थी, सिर्फ एक घन्टे में ही वापिस बिलकुल ठीक हालत में आ गयी... और वह भी आवश्यक उपचार के बिना! ...और आश्चर्यजनक बात यह कि ह्रदय की समस्या से पूरी तरह से बाहर है...!!

डॉक्टर कहने लगा कि उसके जीवन और चिकित्सा क्षेत्र में यह एक रहस्य ही रहेगा।

मेरी समझ में तो कुछ नहीं आ रहा। मोन्टी के हाथों से उसकी कोहनी को दबाकर और बाद में मुझे वहाँ भेजकर क्या किया था गुरूजी महाराज ने कि चिन्ताजनक हालत में ऐसा सुधार हुआ कि मरीज़ आज 20-21 वर्ष बीत जाने के बाद भी ठीक-ठाक है।

.....ऐसे और भी बहुत प्रश्न हैं जिनके उत्तर मेरे पास नहीं हैं। बस एक ही उत्तर है---

गुरूजी ---सर्वज्ञ गुरूजी।

आपको शत्-शत् प्रणाम ...हे भगवन्

***...हे गुरूओं के गुरू***

***---अपनी कृपा बनाए रखना। ...ऐ मालिक!***

गुरूजी मेरी ओर मुड़े, थोड़ी देर के लिए मेरी आँखों में देखा और फिर कहा, “तू नहीं, वो मैं ही था, ...राज्जे!”

## 163. उसने पूछा क्या वह कभी माँ बन सकेगी..? और गुरूजी ने कहा, एक नहीं, ...तुम्हें दो पुत्र होंगे।

गुरूजी गुड़गाँव में अपने शयनकक्ष में थे। उस दिन कुछ चुने हुए लोगों को, उनके दर्शन के लिए अनुमति दी गई थी। वहाँ मेरे भतीजे की पत्नी पिंकी को भी आशीर्वाद लेने का मौका मिला।

गुरूजी बहुत प्रसन्न मुद्रा में थे। जब उसने गुरूजी के पवित्र चरण-कमल छुए, तो गुरूजी ने उसे आशीर्वाद दिया। उन्होंने चारों ओर देखा, मुस्कुराए और व्यंग पूर्वक कहने लगे, इसके दो सुंदर जुड़वाँ लड़कों को तो देखो और फिर वे पिंकी की ओर देखने लगे। उसे पिछले साल हुई उस बातचीत और शब्दों को याद दिलाया, “...क्या मेरे भाग्य में संतान नहीं है? (क्या मैं कभी माँ नहीं बन पाऊँगी...?)” और मैंने कहा था, “एक नहीं दो बेटे होंगे ...और ...ये रहे इसके दो बेटे।”

यह सुनते ही कि गुरूजी ने ये क्या कह दिया ...मैं अपनी उन यादों में चला गया, जो पंजाबी बाग स्थान पर पिछले साल हुआ था। वह पल याद आ गया, जब मैं बैठा हुआ था कि स्थान पर पिंकी, बहुत दुखी मूड में मेरे पास आई और पूछने लगी, “मेरी किस्मत में क्या है? क्या मुझे कभी बेटा नहीं होगा...?” मैंने उसकी बात सुनी, उसे देखा और कहा था, “एक नहीं, तुम्हें दो बेटे होंगे।”

----अब गुरूजी ने उसे वही शब्द कहे। मैं अपने और गहरे विचारों में चला गया और थोड़ा हैरान हो गया कि यही शब्द तो मेरे द्वारा पिछले साल कहे गये थे...!! गुरूजी ने बिलकुल वोही शब्द दोहराए हैं ...और कहा है कि उन्होंने कहा था। उनका दोहराना बिलकुल उन्हीं शब्दों को इस बात की पुष्टि करता है कि वे गुरूजी ने ही कहा था ...और मैं तनाव के साथ गहरी सोच में डूबा हुआ था क्योंकि शब्द तो मैंने कहे थे। और--

अब हुआ एक चमत्कार---

गुरूजी मेरी ओर मुड़े, थोड़ी देर के लिए मेरी आँखों में देखा और फिर कहा, “तू नहीं, वो मैं ही था, ...राज्जे!” और मैं सुन्न हो उन्हें निहारता रहा।

अविश्वसनीय और अद्भुत -

*ज्ञान के एक नए चरण की अनुभूति हो रही थी। और मेरी 'मैं' की धज्जियाँ उड़ रही थीं। यानि मैं जो कुछ भी करता हूँ वो मैं नहीं--अपितु गुरूजी ही होते हैं और वोही करते हैं और मैं समझता रहा कि मैं कर रहा हूँ....*

***कमाल है, यह सारा कार्य गुरूजी द्वारा किया और निदेर्शित था और मुझे पता तक नहीं चला...!!***

*.....आफरीन गुरूजी ...आफरीन।*

*गुरूजी ने कहा, "पिछले साल का मेरा नाप है उसके पास। ....जाओ और उससे कहो कि पिछले साल के नाप के ही कपड़े बनाये।"*

### 164. *गुरूजी ने मुझे एक प्यार भरी डाँट लगाते हुए कहा, क्या तुमको लगता है कि मैं इसी तरह दुबला-पतला* (Slim) *ही रहूँगा...?*

*"गुरु-पूर्णिमा" यह अति विशिष्ट दिन था। लगभग दो-तीन दिन का समय गुरु-पूजा के लिए शेष रह गया था और गुड़गाँव स्थान पर हर जगह लोगों की असाधारण भीड़ देखी जा सकती थी। लगातार सेवा सामान्य रुप से हो रही थी। साहिब जी के आदेशानुसार मैं तहख़ाने* (Basement) *में सेवा कर रहा था।*

*साधारणतयाः इस दिन शिष्य, अपने गुरु को कपड़े अर्पण करता है तथा उनकी पूजा करता है और गुरु उन्हें सहर्ष स्वीकार करते हैं। यह प्रथा भारत के लगभग सभी भागों में प्रचलित है। सिर्फ यही एक दिन है जब गुरु अपने शिष्य को 'ना' नहीं कहते और शिष्य की हर बात के लिए 'हाँ' कहते हैं। यही एक दिन शिष्यों का होता है क्योंकि वह पूरे साल गुरु से माँगता है और गुरु उसे देने के लिए तैयार रहते हैं। दाता तो हमेशा दाता है, लेकिन फिर भी इस खूबसूरत दिन के लिए गुरु अपने शिष्यों को अपने तरीके से, अपने प्यार का इज़हार करने के लिए अनुमति देते हैं ।*

*मैंने एक जवान भक्त, जो पेशे से दर्जी था, गुरूजी की अनुमति से उसे अपने साथ लिया और गुरूजी के विशेष कक्ष में जाने और उनके कपड़ों का नाप लेने के लिए भेजा। लेकिन वह दुखी मन से वापिस आ गया। उसने बताया कि गुरूजी ने उसे नाप लेने की अनुमति नहीं दी। इसके बाद कपड़ों की सिलाई के लिए आगे समय भी बहुत ज़्यादा नहीं बचा था। कपड़ों की सटीक सिलाई के लिए समय की ज़रुरत थी, तो मैंने कुछ मिनट के लिए सेवा को निलंबित कर दिया और अपने स्वामी* (My Master) *के पास पूछने चला गया।*

*मैंने गुरूजी से कहा, "गुरूजी दो दिन बाकी बचे हैं आपने उसे नाप क्यों नहीं लेने दिया।" गुरूजी ने कहा,* ***"पिछले साल का मेरा नाप है उसके पास।"***

*कक्ष में गुरूजी और मैं बात कर रहे थे और कोई दूसरा व्यक्ति वहाँ नहीं था। मैंने कहा, "गुरूजी पिछले साल और आज के नाप में बहुत फर्क पड़ गया है। आपने पिछले 21 दिन से कुछ खाया नहीं, इसलिए आपका शरीर काफी दुबला हो गया है, पिछले साल के नाप के कपड़े, ढ़ीले लगेंगे जी।"*

"......बेवकूफ, तुम्हें क्या लगता है कि जैसा मैं आज हूँ, हमेशा ऐसा ही रहूँगा..? 10 से 15 दिनों में, मैं पुरानी स्थिति में आ जाऊँगा। ....जाओ और उससे कहो कि पिछले साल के नाप के ही कपड़े बनाये।"

मैंने गुरूजी के आदेश का पालन किया और जिस तरह गुरूजी चाहते थे, दर्जी को निर्देश दे दिया। लेकिन, मेरे दिमाग में सिर्फ यही चल रहा था--- कि गुरूजी ने अभी क्या कहा था, इस बात की संभावना डाइजेस्ट नहीं कर सका कि गुरूजी का शरीर 10-15 दिनों में पिछले वाली स्थिति में आ जायेगा...!!

कुछ आध्यात्मिक प्रक्रिया के कारण गुरूजी ने पिछले तीन सप्ताह में किसी प्रकार का भोजन नहीं लिया था और इसलिए काफी हद तक उनका वज़न कम हो गया था। मेरे आकलन के अनुसार पिछली स्थिति तक आने में कम से कम 3 महीने के समय की आवश्यकता थी। लेकिन, मुझे महान आश्चर्य तो तब हुआ जब 15 दिन अभी बीते भी नहीं थे कि नए कपड़े गुरूजी को बिलकुल फिट लग रहे थे। मैं गुरूजी को पिछले साल के रुप में वैसा ही देख रहा था, जैसा उन्होंने कहा था।

**गुरूजी सब जानते थे जैसे भगवान सब जानते हैं। भगवान के अलावा भविष्य कोई नहीं जानता, लेकिन ...गुरूजी जानते हैं।**

...प्रणाम जी

गुरूजी अपने हाथ में उपकरण लेकर  खेत में प्रवेश कर गये और मुझे निर्देश दिया कि खेत में जाने से पहले अपने जूते बाहर उतार दूं।

## 65. शिवरात्रि के लिए खेत से आलुओं की खुदाई।

'शिवरात्रि' के दिन थे। हम सब गुड़गाँव में पूर्णरुप से गुरूदेव की शरण में थे। शिवरात्रि के दिन की प्रतीक्षा कर रहे सभी शिष्यों और भक्तों ने देश के चारों ओर तथा विदेशों से आना शुरु कर दिया था। इस दिन सभी उपवास रखते हैं और उपारने के लिए रात 12 बजे के बाद आलुओं के प्रसाद की प्रतीक्षा करते हैं। अतः आलुओं का इस त्यौहार पर एक विशेष महत्व होता है। इसलिए आलुओं की बागवानी सु-नियोजित ढ़ंग से की जाती है और इस समय धरती माँ से आलुओं की खुदाई की जाती है।

गुरूजी ने मुझे अपने साथ फार्म पर चलने की आज्ञा दी ताकि वहाँ फसल की खुदाई शुरु की जा सके। हम खेत पर पहुँचे गुरूजी अपने हाथ में उद्यान उपकरण के साथ खेत में प्रवेश कर गये और मुझे निर्देश दिया कि खेत में जाने से पहले अपने जूते बाहर उतार दूं। फ़सल के खेत में जाने से पूर्व जूते उतारे जाते हैं, ऐसा मेरा कोई अनुभव नहीं था। मैंने गुरु-ज्ञान की ख़ातिर इसका कारण जानना चाहा कि खेत में नंगे पैर प्रवेश करते क्यों है...?

गुरूजी ने कहा, "तुम इन आलुओं को कोई साधारण आलू मत समझना। यह वो आलू हैं जिन से संसार का सबसे ऊँचा प्रसाद बनाया जायेगा,'शिवरात्रि का प्रसाद'। इसलिए तुम्हें ऐसे आलू चाहिए जो अपने गुणों में अद्वितीय हों। आध्यात्मिक गुणों, सुन्दरता और ढ़ेर सारी तादाद में ऐसे आलू लेने के लिए तुम किसी आम खेत में नहीं बल्कि बहुत ही ख़ास खेत में प्रवेश करने जा रहे हो। यह खेत जिस  धरती का हिस्सा है, उस धरती का सम्मान करो। उसे माँ की तरह  सम्बोधित कर, प्रसाद के लिए उचित आलू माँगो। जूता उतार कर अन्दर जाने का अर्थ होगा कि तुमने एक हलीम (सभ्य) बच्चे की भाँति उसका सम्मान किया है।"

...और बेटा, अब तुम स्वयं देखना अपने ऐसे भाव का परिणाम।

...और वाकई मैंने देखा कि बड़े-बड़े साईज़ के बड़े ही सुन्दर और ढ़ेर सारे आलू कई टोकरों में भरकर खेत से बाहर निकाले गये। रंग-रुप में और फैलाव में सचमुच अद्वितीय। आम खेत से जितने निकलते हैं, उससे कहीं अधिक मात्रा में। थोड़ा समय पहले जैसा गुरूजी ने बताया था बिलकुल वैसा ही पाया..... देखने योग्य।

अगर मैं यहाँ अपनी बुद्धि का प्रयोग करता हूँ तो ऐसा लगेगा कि मैं रूढ़िवादी विचार रखता हूँ। लेकिन मैं चाहता हूँ कि वे लोग जो आध्यात्मिक विकास के लाभ हेतु एक विस्तृत चर्चा चाहते हैं जोकि सांसारिक ज्ञान से थोड़ा आगे है। वे मुझसे संपर्क कर सकते हैं।

मुझे याद है कि एक बार गुरुजी ने कहा था कि मुझे यदि तुरन्त मुम्बई जाना हो तो भी पहुँचने में मुझे तीन मिनट लगते हैं--

## 166. जब गुरुजी ने मुम्बई की उपनगरी खार में स्थान खोलने और सन्नी को सेवा करने का आदेश दिया।

सन् 1991 की बात है, जब गुरुजी ने सन्नी (पुन्चू के पति) को पंजाबी बाग में अपने कमरे में बुलाया। उसे आध्यात्मिक शक्तियाँ देने के बाद आदेश दिया कि उसने मुम्बई में जो मकान ख़रीदा है, उसमें सेवा शुरु कर दे।

बड़े उत्साह से उसने वहाँ सेवा शुरु कर दी और गुरुजी की कृपा से स्थान पर लोग आने शुरु हो गये और स्थान पर माथा टेकने लगे और उससे आशीर्वाद प्राप्त करने लगे।

सन्नी का नया घर और स्थान उस ज़गह पर था, जहाँ क्रिश्चन लोगों की संस्था (Christian Society) थी और उसके घर के सामने चर्च भी था। क्रिश्चन संस्था (Christian-Society) की तरफ़ से उसे एक चेतावनी भरा पत्र मिला। जिसमें लिखा था कि वह यह कार्य तुरन्त रोक दे क्योंकि यह कार्य धर्म से सम्बन्ध रखता है और क्रिश्चन धर्म (Christianity) में ऐसा नहीं है। उन्होंने पुनः धमकी दी कि तुम यहाँ सेवा नहीं करोगे और न ही खिचड़ी का लंगर प्रसाद, लोगों को खिलाओगे क्योंकि यह क्रिश्चन कॉलोनी है।

एक रात सोने से पहले सन्नी बहुत परेशान था। उसने गुरुजी से प्रार्थना की, कि वह तो उनके आदेश पर ही ऐसा कर रहा है उसने पुनः प्रार्थना की, कि वे उसकी मदद करें और परिस्थिति को नियन्त्रण में करें।

उसने लाईट बन्द की और उसने जाग्रत अवस्था में ही एक स्वप्न देखा। उसने देखा कि "शिरड़ी वाले सांई बाबा, उसके बिस्तर पर अपनी लौकिक पोशाक, धोती-कुर्ता और छोटी-छोटी दाढ़ी में बैठे हैं। लेकिन उनकी दाढ़ी के बाल, उससे छोटे थे जैसे उसने उनकी तस्वीरों में देखे थे।"

सांई बाबा ने कहना शुरु किया-- "बस...!! इतने में ही घबरा गया? मुझे तो लोगों ने पत्थर तक मारे थे।"

*लेकिन सन्नी आश्वस्त नही हुआ ।*

*बाबा ने आगे कहना शुरु किया---"अच्छा--- तो ठीक है.... आज के बाद तुम्हें कोई परेशान नहीं करेगा, ये मेरा वादा है।"*

*उसके बाद आज तक न तो कोई पत्र आया और न ही किसी प्रकार की कोई शिकायत। उस दिन के बाद, आज तक, करीब बीस साल हो गये हैं निर्वि-विघ्न सेवा चल रही है।*

*...मुझे याद है कि एक बार गुरुजी ने कहा था कि मुझे यदि तुरन्त मुम्बई जाना हो तो मुझे तीन मिनट लगते हैं-- कारण रास्ते में मुझे दो ज़गह रुकना पड़ता है।*

*एक- अजमेर के मुस्लिम फ़कीर के पास और*

*दूसरा--शिरड़ी के सांईं बाबा के पास।*

***गुरुजी ने कहा था कि वे दोनों मेरा इन्तज़ार करते हैं क्योंकि इन दोनों को मेरे प्रोग्राम का पता होता है।***

*इसलिए स्पष्ट है कि सांईं बाबा को गुरुजी ने ही भेजा होगा स्थिति पर नियंत्रण करने के लिए और वह उन्होंने बाख़ूबी किया भी।*

महागुरूजी के राज्य में सोचना मनाह है क्यूंकि इससे मैं और मेरे अहंकार का सीधा सम्बन्ध स्थापित हो जाता है। अतः शिष्य का धर्म है, सुनो और प्रतीक्षा करो।

## 167. गुरूजी का फोन आया कि वापिस आने से पहले पुन्चू को एक कार ख़रीद कर दे दो।

मैं मुम्बई गया हुआ था और पुन्चू मेरी बेटी है।

अस्सी के दशक के शुरु की बात है कि गुरूजी ने मुझे कुछ दिनों के लिए बम्बई जाने का आदेश दिया। कोई फंक्शन अटेंड करना था और साथ ही अपनी दो बेटियों (पुन्चू और बिन्दु) तथा उनके परिवारों से भी मिलना था, जो मुम्बई में ब्याही हैं।

जब गुरूजी का फोन आया तो मैं अपनी छोटी बेटी बिन्दु के यहाँ ठहरा हुआ था। गुरूजी ने मेरी वापसी का प्रोग्राम पूछा तो मैंने उत्तर देते हुए पूछा कि मेरे लिए कोई आज्ञा हो तो बताऐं। उन्होंने मुझे दो-तीन दिन और रुकने का आदेश दिया और साथ ही कहा कि वापिस आने से पहले पुन्चू को एक नई कार लेकर दे आओ।
मैंने कहा .....जी गुरूजी।

लेकिन ना तो मैं इतने रुपये लेकर आया था और न ही गुरूजी ने मुझसे पूछा कि इतनी बड़ी ख़रीद के लिए पैसे का इंतजाम कैसे करूंगा..? उन्होंने सरलता से केवल इतना ही कहा और फोन रख दिया। गुरूजी के इस अछूते अंदाज़ से मैं प्रफुल्लित और गद्गद् हो गया। ऐसा लग रहा था ...मानों वे मुझे आदेश दे नहीं रहे थे, बल्कि आदेश फैंक रहे थे मुझ पर।

करीब दस हज़ार रुपये लेकर आया था और ज़रुरत थी करीब एक लाख की। इन महागुरूजी के राज्य में सोचना मनाह है क्यूंकि इससे मैं और मेरे अहंकार का सीधा सम्बन्ध स्थापित हो जाता है। अतः शिष्य का धर्म है, सुनो और प्रतीक्षा करो। प्रतीक्षा का अर्थ है कि देखो, मालिक कैसे इंतजाम करते हैं।

उधाहरणतयाः गुरूजी के आदेश अनुसार एक कार खरीदने के लिए मुझे एक लाख रुपया चाहिए और मेरे पास नहीं है। अब पढें और आनंद लें और अनुमान लगाऐं कि आगे क्या हुआ होगा..!! क्या हीला तैयार किया होगा गुरूजी ने वहीं गुड़गाँव में बैठकर।

सुबह बिन्दु के पति और ससुर ने मुझे उनकी फैक्ट्री चलने का आमंत्रण दिया, जो भिवंडी में है। रास्ते में उसके ससुर ने कहा, “राजपॉल जी, अब आपकी दो बेटियाँ यहाँ मुम्बई में रहती हैं इसलिए आपको एक कार, यहाँ पर भी रखनी चाहिए।”

मैंने कहा, "बिलकुल ठीक, चलो अभी खरीद लेते हैं।"

..और इस तरह हमने देखना शुरु किया और शाम तक एक नयी कार ख़रीदने में सफल हो गए और उसी शाम को कार पुन्चू को दे दी गयी।

गुरूजी का फोन सुबह आया था और उसी दिन शाम को काम हो गया। इंसानी दिमाग से या बुद्धि का प्रयोग किया जाये तो कोई नहीं मानेगा कि इतनी बड़ी खरीदारी बिना पैसों के और उस स्थिति में जब कारें सेल पर आज की तरह शोरुम में नहीं बिकती थीं। उस समय का तरीका आज के तरीके से भिन्न था। लोग कार की बुकिंग कराते थे और करीब दस महीनो के बाद डिलिवरी मिलती थी। लेकिन कुछ लोग लाभ कमाने के लिए, नयी कार बेच भी देते थे। --परन्तु

* ऐसे लोगों को ढूँढना,
* पैसो का इंतजाम करना,
* उस व्यक्ति तक पहुँचना, जिसने कार बेचनी है
* ...और फिर कार खरीदना !

यह सारे कार्य सिर्फ आठ घंटे में करना, कोई आसान काम नहीं था। मुझे पूर्ण विश्वास है कि अवश्य कोई ईश्वरीय शक्ति थी, जिसने यह सारे कार्य बाख़ूबी कर दिए, जिसे मैं और बिन्दु का पति शरीर में नहीं देख पाए।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि फोन पर आदेश देते समय गुरूजी ने सारे कार्य का पूरा प्रबंध कर दिया था।

उद्धाहरण के तौर पर...

* बिन्दु के ससुर के मुख से यह शब्द
  निकलवाना कि मुझे अब मुम्बई में भी एक
  कार रखनी चाहिए, क्यूंकि मेरी दो बेटियाँ वहाँ ब्याही हुई हैं और...
* मेरा उसकी सलाह का मान लेना...
* फिर कार की तालाश करना और...
* उसी के हाथों पैसे का प्रबंध करना, वह भी बिना अहसान जताए क्यूंकि यह उसी का विचार था।
* आख़िर में रात से पहले कार पुन्चू के हवाले करना इत्यादि-इत्यादि।

बाद में मुझे पता चला कि उसी सुबह पंचू ने गुरूजी को फोन पर शिकायत की थी कि सारे घर में एक ही कार होने के कारण उसे बहुत दिक़्क़त हो रही है।

*फोन पर शिकायत सुनने वाला संसार का सबसे बड़ा मालिक होने के कारण, पुन्चू ने अगली सुबह, बिना कार के नहीं देखी।*

***यह मेरे मालिक गुरुजी, अपने भक्तों की जायज़ माँग को कभी नहीं नकारते और हमेशा 'हाँ' कह देते हैं।***

*....प्रणाम साहेब जी*

*गुरूजी एकदम उठे और उसे बालों से पकड़ लिया और अपनी आध्यात्मिक शक्तियों से भरपूर पिटाई शुरु कर दी। जैसे ही उन्होंने पिटाई बन्द की, लड़की बिलकुल ठीक-ठाक थी।*

## 168. *एक तरुण कन्या जिसे पागलपन के दौरे पड़ते थे, गुरूजी ने अपनी आध्यात्मिक पिटाई से ठीक कर दिया।*

*रीटा नाम की एक तरुण कन्या, जिसे काफ़ी समय से पागलपन के दौरे पड़ते थे, गुरुजी के पास अक़्सर आती थी। उसके परिवार वाले इस बात को लेकर हैरान थे कि पागलपन के दौरे में उसे गुडगाँव ले जाते थे ...मगर जैसे ही वह गुरूजी के सामने जाती, तो बिलकुल ठीक हो जाती थी। कई बार से ऐसा ही होता रहा और परिवार वाले बड़े असमंजस में थे। करीब दो साल तक यही सिलसिला चलता रहा।*

*एकबार ऐसा हुआ कि गुरूजी अपने बिस्तर पर विराजमान हो लोगों से मिल रहे थे और लम्बी कतार उनके कमरे के बाहर लगी थी। उनके कमरे का वह दरवाज़ा, जो गली में खुलता था उसी से लोग अंदर आ रहे थे और मिलने के बाद दूसरे दरवाज़े से बाहर जा रहे थे। यह लड़की भी वहीं खड़ी अपनी बारी का इंतज़ार कर रही थी। लेकिन इसबार मामला विपरीत था। लड़की बिलकुल ठीक हालत में थी।*

*उसकी बारी आने पर जैसे ही वो अंदर गयी और उसने गुरूजी को देखा तो पागलपन का भयानक दौरा पड़ गया। पागलों की तरह अपने सिर और शरीर को झटके देने लगी। अब गुरूजी एकदम उठे और उसे बालों से पकड़ लिया और अपनी आध्यात्मिक शक्तियों से भरपूर पिटाई शुरु कर दी। जैसे ही उन्होंने पिटाई बन्द की, लड़की बिलकुल ठीक-ठाक थी। जीवन में उसकी बीमारी का वह अन्तिम दिन था। भली-चंगी वो लड़की अपने घर 'विशाल-एन्क्लेव' पहुँची और अपने माता-पिता और परिवार के साथ सुख से रहने लगी।*

*इस केस में अजीब बात यह है कि पिछले दो सालों में जब भी, वो गुरूजी के सामने आती तो बिलकुल ठीक होती थी, हालाँकि बाहर पागलपन का दौरा पड़ा होता था। आज पहली बार ऐसा हुआ कि बाहर ठीक थी और गुरूजी के सामने आते ही पागल हो गयी।*

*यह बताते हुए मुझे बड़े आनन्द का अनुभव हो रहा है कि गुरूजी ने एक कमाल की पिटाई करी और उस बेचारी का जीवन बदल गया। उसकी शादी हो गयी और सुखमय जीवन व्यतीत कर रही है।*

***यह घटना बताते हुए मेरा हृदय गद्‌गद्‌ हो रहा है कि उसका जीवन गुरूजी कि कृपा से सुधर गया और जीने लायक हो गया।***

*सैंकड़ों बार प्रणाम करता हूँ .......हे गुरुदेव।*

गुरूजी ने बड़े स्नेहपूर्वक कहा, "पुत्त कुछ नहीं होगा और तेरा पति बिलकुल नाराज़ नहीं होगा तेरे साथ, तू बिलकुल फ़िकर ना कर..."

## 169. गुरूजी का मेरी फरीदाबाद वाली बहन के प्रति इतना सुकोमल हृदय।

मेरी बहन दमन प्रकाश, जो फरीदाबाद में रहती हैं अपनी टाँग में होने वाली तीव्र दर्द से परेशान थीं।

सौभाग्यवश, एक बड़े वीरवार के दिन वह गुडगाँव पहुँच गयी और गुरूजी को मिलने के लिए लाइन में लगकर अपनी बारी का इन्तज़ार करने लगी। कुछ घंटों के पश्चात् उनकी बारी आई और जब वो गुरूजी के सामने आई तो सिसक-सिसक कर रोने लगी और कहने लगी, "गुरूजी, यहाँ मुझे बहुत देर हो गई है और मेरे पति मेरा इंतज़ार करते-करते परेशान हो रहे होंगे, हालाँकि उन्होंने आजतक मुझे कभी डाँटा नहीं, पर मुझे बहुत डर लग रहा है।"रोते-रोते उसने गुरूजी को यह भी बता दिया कि वह राजपॉल की बहन है।

मेरी बहन की बात सुन और उसकी आँखों में आँसू देख कर गुरूजी ने बड़े स्नेहपूर्वक कहा, "पुत्त कुछ नहीं होगा और तेरा पति बिलकुल नाराज़ नहीं होगा तेरे साथ, ...तू बिलकुल फ़िकर ना कर" ...और उसी समय गुरूजी ने अपने छोटे भाई गुल्लू को, मेरी बहन को कार में फरीदाबाद, उनके घर तक छोड़ने का आदेश दे दिया।

गुरूजी का यह प्यार से परिपूर्ण व्यवहार देखकर मेरी बहन दंग रह गई।

लम्बी-लम्बी लाइनों में हज़ारो की संख्या में खड़े स्त्री, पुरुष और छोटे-छोटे बच्चे जब गुरूजी के समक्ष पहुँचते तो उनके चेहरों पर कोई थकावट कभी भी ज़ाहिर नहीं होती थी। जब किसी की आँखों में आँसू देखते थे, ख़ासतौर पर स्त्रियों के प्रति तो वे बहुत प्रेम और धीरज का प्रयोग करते थे।

आज, 25 साल बीतने के पश्चात् भी मेरी बहन दमन प्रकाश इस सुंदर घटना और उन पर गुरूजी की उस विशेष कृपा का गुणगान करती हैं।

**यह है गुरूजी की मुहब्बत---**
**अपने पास आए भक्तों के प्रति।**
**आँसू भी पौंछे, अभयदान भी दिया और**
**घर तक पहुँचाया भी।**

---वाह ...हे गुरुदेव -- वाह।

गुरूजी अपने चरणों की छाया में रहने देना
...सदा-सदा के लिये।

गुरूजी ने मुझपर अपनी नज़रें गाड़ते हुए कहा, "क्यों बेटा दूसरा चम्मच खाया नहीं गया...?

## 170. गुरूजी ने कहा कि चावल का दूसरा चम्मच क्यों नहीं खा सका, जब तुझे बेहद् भूख् लगी हुई थी।

गुरूजी के आदेशानुसार मैं अपने घर पंजाबी बाग में हर शनिवार को सेवा करता था। यह सेवा सुबह से शाम तक चलती थी। दोपहर को दो बजे के बाद, आए हुए सब भक्तजनों को लंगर खिलाया जाता था। राजमा, सब्जी और चावल का यह लंगर सब लोग भरपेट खाते थे। साँयकाल जब सेवा सम्पूर्ण हो जाती और वहाँ कोई भी भक्त नहीं रहता, तब मुझे लंगर खाने की इजाज़त मिलती थी।

ऐसे ही सेवा का एक दिन था और शाम को जब मुझे लंगर दिया गया, तभी एक भक्त ने स्थान में प्रवेश किया और मैंने अपनी प्लेट उसे दे दी। तत्पश्चात् दूसरी थाली मेरे लिए लायी गयी परन्तु एक भक्त और आ गया तो मैंने वह थाली भी उसे दे दी। इसके पश्चात् मैंने इन्दु को दुबारा और लंगर देने के लिए कहा क्योंकि मुझे गुडगाँव गुरूजी के पास जाने में देर हो रही थी। इंदु ने कहा कि वह और लंगर बना रही है।

इतना सुनने पर मैंने उसे रोका और कहा कि और लंगर बनाने की कोई आवश्यकता नहीं, जो कुछ भी बर्तन में बचा हो, वही दे दो। इन्दु ने उत्तर दिया कि बर्तन खाली हैं इस पर मैंने उसे बर्तन दिखाने के लिए कहा। देखने पर कुछ चावल और राजमा, करीब डेढ़ चम्मच इकट्ठा हुआ और मैंने प्लेट में डाला और खाने लगा।

मगर एक विचार आया कि सुबह से शाम तक भूख़ा रहने के बाद अब बस इतना ही....? क्या बनेगा इतने में मेरा...!! इतना सोचने के बाद जैसे ही मैंने एक चम्मच मुँह में डाला और चबाकर गले से नीचे उतारा तो एक डकार आया और पेट इस कदर भर गया के दूसरा चम्मच खाने की हिम्मत नहीं हुई। बड़ी मुश्किल से खा पाया वो दूसरा चम्मच।

जब मैं गुडगाँव गुरूजी के पास पहुँचा और उनके चरणों में माथा टेका तो गुरूजी ने मुझपर अपनी नज़रें गाड़ते हुए कहा, "क्यों बेटा दूसरा चम्मच खाया नहीं गया...?"

नामुमकिन और आश्चर्यजनक...!
गुरूजी को मेरे मन में उठे उस विचार का पूरा पता था। मुझे बहुत शर्म महसूस हुई। यानि वो गुड़गाँव में बैठे मेरी सारी गति विधियाँ नोट कर रहे थे।

*----अद्भुत्....*

*गुरूजी कहने लगे,* ***"बेटा, मैंने तुम्हें इतना बलवान बनाया हुआ है कि तुम दूसरों को तृप्त कर सको और एक चम्मच भर चावल तो क्या, मैं तो चावल के एक दाने से तुम्हारा पेट भर सकता हूँ। तुमने सोचा कैसे कि तुम भूखे़ रह जाओगे...?***

*खूब डाँट पड़ रही थी और मैं था भी इसी के लायक --*
*मैंने माफ़ी माँगी और कृपा के लिए प्रार्थना की।*

***ऐसे है गुरूजी और उनका नियंत्रण।***
***चावल के एक चम्मच से मेरा पेट भर दिया।***

*असम्भव...*

*.... और इससे भी ज़रुरी जानने योग्य बात यह है कि गुडगाँव में बैठकर मुझे पंजाबी बाग में देख रहे हैं...!!*

*----बेमिसाल-- गुरूजी कृपा करते रहिये जी...*

संत ने कहा, "अब क्यूँ खाया, तुम तो कहते थे कि सिर्फ गुरुजी से ही लेकर खाता हूँ..."

## 171. जब एक संत, साधू के वेश में मुझे मेरे घर के गेट पर मिला और रोका जब मैं ऑफिस जाने के लिए निकलने ही वाला था।

अपने नियमित कार्यक्रम के अनुसार, मैं अपने शोरुम जाने के लिए अपनी गाड़ी में बैठा और जाने के लिए निकलने ही वाला था कि मुझे किसी संत ने, जो साधू वेश में था, रोका और बड़े प्यार से टोकते हुए कहा, "हम आए और तुम चल दिये......?"

गाड़ी की खिड़की में से उसे देखते ही मैंने ड्राईवर को गाड़ी रोकने के लिए कहा और उस संत को सम्बोधित करते हुए कहा, "क्यों, ....मैं अभी गया तो नहीं" ...और फिर मैं गाड़ी से बाहर आ गया। इतने में रसोईया एक गिलास नीम्बू पानी ले आया, जो मैंने उसे दे दिया। उसने वह खुशी से पी लिया और मैंने भी मुस्कुराते हुए उसे अंदर चलने के लिए कहा।

वह मेरे पीछे-पीछे बगीचे के रास्ते स्थान वाले कमरे की ओर चल पड़ा। इस बीच कुछ बच्चे उस संत की ओर आकर्षित हुए और उसे पुकारने लगे। इस पर उसने कुछ फूल तोड़े और वो जामुन में बदल गए जिसे उसने मेरी भतीजी रश्मि को दे दिये। फिर और फूलों को आम बनाकर बाकी बच्चों को दे दिये। वह संत इस जादुई शक्ति का प्रदर्शन बड़ी मुस्कुराहट के साथ करता हुआ स्थान वाले कमरे में चला आया।

हमेशा की तरह मैं स्थान की गद्दी पर बैठा और वह अपने चेलों के साथ नीचे बिछे कॉलीन पर बैठ गया। शिष्टाचार के नाते मैंने उसे भोजन के लिए पूछा ...तो उसने 'हाँ' कर दी।

मैंने रसोईये को भोजन लाने के लिए कहा। कुछ ही देर में जब एक प्लेट खाने की आई तो खाने से पहले संत ने उस रोटी की ऊपरी तह को खोला तो उसमें किशमिश थी जो उसने मुझे खाने को कहा। सुनकर मैंने कहा कि मैं केवल अपने गुरुजी का दिया हुआ ही खाता हूँ। इतने में वह किशमिश का दाना उड़ कर स्थान पर गिर गया, साधू ने मुझे उसकी ओर इशारा करते हुए उसे देखने और पहचानने के लिए कहा। मैं वहाँ से उठा और किशमिश का दाना उठाकर खा गया। उसने पूछा कि अब क्यूँ खाया तो मैंने जवाब

दिया, "तुमने देखा नहीं यह स्थान पर था...! मैंने इसे वहीं से लिया है ...यानि यह मुझे गुरूजी ने ही दिया है।"

बस अब तो उसने मेरी प्रशंसा में भजन गाना शुरु कर दिया अगले पाँच मिनट तक। उस भजन के शुरु के शब्द कुछ ऐसे थे..., "राजपॉल भगत, हमने तुझे दिल में बसाया है..."

वह साधू कुछ मिनटों के लिये लगातार रचना करता गया और गाता रहा। वह जो कुछ भी गा रहा था वह सब मेरी दिनचर्या की बातें थी और जो कुछ भी कृपा, गुरूजी ने मुझपर की हुई थी उसी को गाता जा रहा था। उसकी इस जानकारी की उपलब्धि पर मैं हैरान था। उसमें कोई भी खोट नहीं थी। केवल सत्य ही था और कुछ नहीं। इसके साथ-साथ उसके इस संगीत की रचना में भी कोई कमी नहीं थी। मानों कि कोई बहुत अनुभवी संगीतकार हो। यह थी उस नौजवान साधू के साथ मेरी मुलाकात।

शाम को जब मैं गुरूजी के पास पहुँचा तो मैंने उन्हें वह सब बड़ी उत्सुकता से बताया और उसके रहस्य की जानकारी प्राप्त करनी चाही तो गुरूजी ने उस पर कोई विस्तारपूर्वक जानकारी नहीं दी, बस मुस्कुरा दिए और फिर कुछ लोग, जो अंदर घुस आये थे, उनका ध्यान उनकी ओर हो गया।

**आज जब वह दृश्य मेरी आँखों के सामने आता हैं तो ऐसा प्रतीत होता हैं कि गुरूजी ने कोई दिव्य शक्ति की उपलब्धि, मुझ तक पहुँचाने के लिए यह सब रचना की थी।**

हालाँकि मेरे पास इस सब की कोई विशेष जानकारी नहीं है। यह जो कुछ भी हुआ वह बहुत ही असाधारण है, परन्तु मुझे गुरूजी से इस घटना के बारे में दुबारा जानने का मौका नहीं मिला।

गुरूजी ने कहा, “अच्छा...! जाओ, उसके संगल खोल दो और उसे ले आओ।”

## 172. ज्वाला माता मंदिर पर, --लोहे की चेनों से बंधा हुआ एक विक्षिप्त उन्मत्त तपस्वी।

सत्तर के दशक के शुरुआती दिनों में गुरूजी हिमाचल प्रदेश के पर्वतों में यात्राऐं किया करते थे।

हालाँकि इन यात्राओं का कार्यक्रम उनके ऑफिस वाले बनाते थे, परन्तु इनकी रुपरेखा गुरूजी स्वयं् तैयार करते थे। लेकिन यह होता अध्यात्मिक ही था। पहाड़ियो का सर्वेक्षण तथा वहाँ की मिट्‌टी के सैम्पल इक्कठा करना और इन सब की रिपोर्ट तैयार करने के इस ऑफिशियल कार्य के तुरन्त बाद, गुरूजी वहाँ एकत्र हुए लोगो की परेशानियाँ और समस्याऐं, दोनों को दूर कर देते थे।
कुछ दिनों के बाद वह अपने शिष्यों को बुलवाकर उन्हें गुरु और फिर भगवान बनाने की प्रक्रिया शुरु कर देते थे।

एक बार अपने टुअर्स के दौरान वे ज्वालाजी (जोकि माता ज्वालाजी का एक तीर्थ स्थल है।) में अपने कुछ शिष्यों के साथ कैम्प लगाये हुए थे, गुरूजी वहाँ पर सेवा शुरु करने का मूड बना ही रहे थे कि किसी ने आकर उनसे प्रार्थना की, “गुरूजी, यहाँ पर एक साधू है, जो बड़ी तकलीफ़ में है, तपस्या करते-करते वह पागल हो गया है और बहुत तोड़-फोड़ करता है। परेशान होकर, लोगों ने उसे लोहे की जंजीरों के साथ बाँध रखा है। कृपा कर आप उसे ठीक कर दीजिये।”

गुरूजी ने कहा, “अच्छा...! जाओ, उसकी जंजीरें खोल दो और उसे ले आओ।”

यह सुन कर किसी ने कहा कि उसके संगल खोलना ख़तरनाक हो सकता है और बिना संगलो की मद्‌द के उसे यहाँ लेकर आयेंगे कैसे...!!”

गुरूजी ने कहा, “उसके संगल खोल दो और कहो कि मैंने बुलाया है।”

फिर 4-5 लोग मिलकर गए, उसके संगल खोले और कहा कि गुरूजी ने उसे बुलाया है।

अविस्वस्नीय

जैसे ही उस पागल साधू ने गुरूजी का यह संदेश सुना उसके तेवर ढ़ीले हो गये और वह तुरन्त शाँत हो गया और उन लोगो के साथ हो लिया।
...वाह, गुरूजी का सन्देश सुनते ही इतना बड़ा बदलाव...!! असम्भव सा था और लोग उसे लेकर गुरूजी के पास पहुँच कर प्रतीक्षा करने लगे।

गुरूजी अपने कमरे में एक-एक कर सब लोगो से मिल रहे थे जब आख़िर में उसकी बारी आई तो गुरूजी ने एक सेवादार से दरवाजा बंद करने के लिए कहा और फिर गुरूजी और वह साधू उस बंद कमरे में कुछ देर तक रहे। लेकिन जब वह साधू बाहर आया तो उसे देखते ही हम सब हैरान रह गये।

सीतारामजी ने कहा,

"...राज्जे, जो आदमी अन्दर गया था और ये जो बाहर आया है, दोनों एक जैसे नहीं, बिलकुल ही अलग से लग रहे है। ऐसा अद्भुत क्या कर दिया है गुरूजी ने...!! उस साधू की सम्पूर्ण रुपरेखा, उसका व्यक्तित्व, सबकुछ जैसे फिर से जीवित हो उठा हो"

साधू ने टिप्पणी दी,

**"यह और कौन हो सकते हैं...!!**

**जो हमेशा सिर्फ देते ही देते हैं,**

**लेते कुछ नहीं किसी से...!!**

**...ये तो खुद़ ही सबके स्वामी हैं।"**

शत्-शत् प्रणाम .....गुरूजी

उन्होंने एक नारियल बिस्तर से उठाया और मुझे पकड़ा दिया और कहा, "ले-- दे दे अपना नारियल मुझे।"

## 173. गुरूजी ---एक फ़राक दिल मालिक --औपचारिक नारियल भेंट और एक शिष्य।

हर वर्ष की तरह, गुडगाँव स्थान पर 'गुरु-पूर्णिमा' मनाई जा रही थी। हज़ारों की संख्या में भक्तजन गुरूजी को नारियल भेंट कर रहे थे।

स्थान हाल में एक सुसज्जित सीट पर गुरूजी विराजमान थे और अनगिनत लोग बारी-बारी से अपने-अपने नारियल उनके चरणों में भेंट करते जा रहे थे और गुरूजी उन्हें माथे पर लगा कर आशीर्वाद के साथ, उन्हीं को लौटा रहे थे ताकि अपने घर पर अगली गुरु-पूर्णिमा तक रख सकें।

शिष्यों के लिए वे अपने कमरे में मातारानी के संग बिस्तर पर बैठते और शिष्य एक-एक करके आते, अपना नारियल उनके चरणों में रखते और दोनों से आशीर्वाद पाते थे। कुछ शिष्य उनके गले में फूलों के हार भी डालते और अपने हाथों से उन्हें मिठाई भी खिलाते और फिर प्रणाम करते। फिर एक थाली में उनके चरण रखवा कर केसर वाले जल से उन्हें धोते और उस जल को पी लेते थे। इस जल को गुरु-चरणामृत कहते हैं। यह चरणामृत गुरु की ओर से सबसे बड़ा वरदान होता है एक शिष्य के जीवन में। लेकिन यह सौभाग्य कुछ चंद लोगों को ही नसीब होता है।

इस चरणामृत का विवरण जानने के लिए पूरे वेदान्त की सहायता चाहिए।

एक बार जब सब शिष्य अपनी-अपनी गुरुपूजा औपचारिक रुप और विधि पूर्वक सम्पन्न कर चुके और उन सबके नारियल उनके बिस्तर पर रखे हुए थे, तो मुझे अपनी गलती का आभास हुआ।

मैंने कहा, "गुरूजी, सबने अपने-अपने नारियल आपको भेंट कर दिए, ...परन्तु मैंने तो किया नहीं, मैं तो भूल ही गया।" गुरूजी ने मेरी ओर देखा और मुस्कुराए। उन्होंने एक नारियल बिस्तर पर से उठाया और मुझे पकड़ा दिया और कहा, "ले-- दे दे अपना नारियल मुझे।"

विस्मयभरा आश्चर्य...
एक भारी गलती समझ कर, जिस वज़न के नीचे मैं दबा हुआ था, गुरूजी ने एक चुटकी में मुझे मुक्त कर दिया।

--वाह हे गुरुदेव !

**हे गुरुओं के गुरु, मेरे हृदयनाथ**
**-- आपको बारम्बार प्रणाम**

गुरूजी ने कहा, “जाओ, इस रुमाल को उसकी दाईं बाजू पर, कंधे और कोहनी के बीच बाँध दो।”

## 174. गुरूजी के रुमाल का स्वरुप और उसका कमाल...! लोगों के चहेते फिल्म स्टार को ईश्वर द्वारा निश्चित् मृत्यु से छुटकारा।

एक मशहूर अभिनेता किसी घाव के कारण बम्बई के एक विख़्यात अस्पताल में भर्ती था। हर तरह का उपचार करने के बावजूद, घाव से कुछ तरल पदार्थ बाहर आता जा रहा था। डॉक्टरों ने उसके परिवार वालों को बताया कि वे असहाय स्थिति में पहुँच चुके हैं। बहुत कोशिश करने के बावजूद वे इसका कारण नहीं समझ पा रहे हैं। अब तो जान बचाना भी मुश्किल लग रहा है।

उस अभिनेता का सचिव (Secretary), वीरजी के छोटे भाई संदीप सेठी को जानता था जोकि फिल्म उद्योग में था। वो जानता था कि वीरजी और संदीप, गुरूजी के शिष्य हैं अतः उसने अपने बॉस के लिए, गुरूजी के स्पेशल आशीर्वाद के लिए प्रार्थना की।

संदीप ने गुरूजी से फ़ोन पर बात की और अभिनेता की जीवन रक्षा के लिए प्रार्थना की। सुनकर गुरूजी ने कहा कि सचिव (Secretary), को गुडगाँव भेज दो। सुनते ही सचिव हवाई जहाज़ से गुडगाँव पहुँच गया। भाग्यवान था कि उसे गुरूजी के दर्शन हो गए।

संदीप के कहे अनुसार, सचिव ने गुरूजी के चरण पकड़े और बड़े ही विश्वास के साथ अपने बॉस की जीवन रक्षा और निकलते हुए तरल को रोकने की प्रार्थना की। गुरूजी ने जेब से अपना रुमाल निकाला और सचिव को देते हुए कहा, “जाओ, इस रुमाल को उसकी दाईं बाजू पर, कंधे और कोहनी के बीच में बाँध दो।”

रुमाल लेकर उसने फ्लाईट पकड़ी और वह सीधा अस्पताल पहुँचा और जैसा गुरूजी ने कहा था, रुमाल उसके बाजू पर बाँध दिया। उसी समय देखते ही देखते घाव के अन्दर से निकलता हुआ तरल बिलकुल बंद हो गया।

......एक अचम्भा था यह।

-- डॉक्टरों ने कहा, यह अविश्वस्नीय है।

और साथ ही घोषित कर दिया कि मरीज़ ख़तरे से पूर्णतया बाहर है। मैंने सुना कि उसकी पत्नी धन्यवाद देने और आभार व्यक्त करने और साथ ही आशीर्वाद लेने के लिए गुरूजी के पास आयी थी।

*उपरोक्त घटना की पूरी जानकारी होते हुए भी मैं उस अभिनेता, उसकी पत्नी और सचिव का नाम नहीं लिख रहा। ऐसा क्यो...? पता नहीं। लेकिन अगर किसी को जिज्ञासा हो और कुछ अधिक जानकारी चाहिए तो संदीप सेठी से मुम्बई में संपर्क कर सकता है।*

*पाठकों को विचार तो आ सकता है कि किस तरह का रुमाल होगा गुरुजी का, कि बाजू पर बाँधते ही संजीवनी की तरह कार्य किया जिसने।*

***...क्या किया होगा गुरुजी ने उस कॉटन के रुमाल को, जिसके छूते ही मरीज़ ठीक हो गया और वो शब्द और आवाज़ कैसी थी, "......जाओ, इसे उसकी बाजू पर बाँध देना-- वो ठीक हो जाएगा।"***

*अब कैसे हो ...आपकी असली पहचान गुरुजी...?*

*कोटि-कोटि प्रणाम*
*हे ---गुरुओं के गुरु '...गुरुजी'*

गुरुजी ने कहा, “जब सारा ज़माना सोता है तो मैं जागता हूँ।”

## 175. गुरुजी ने मुझे धर्मशाला चलने का संदेश भेजा, और मेरी माँ उस समय मृत्यु-शैय्या पर थी।

सुबह का समय था। मेरे निवास स्थान पंजाबी बाग पर मेरे भाई बहनें और उनके परिवारों के समस्त सदस्य एकत्रित थे। काफी समय से बीमार रहने के कारण आज डॉक्टर ने बताया कि अब हमारी माँ का जाने का समय करीब आ गया है। यह समाचार पाकर सब एकत्र हो गये।

मेरी माँ सबको बेहद प्रिय और बहुत आदरणीया थीं। प्यार बेहद होने के कारण सब बड़े और छोटे उदास तथा चिंतित थे। एकत्रित लोगों में मेरी बहनें, उनके पति और बच्चे, मेरे भाई और उनके बच्चे सब शामिल थे। सब उनसे बहुत अधिक प्रेम करते थे।

तकरीबन दो दर्जन लोग, इस विचार से कि इतनी महान आत्मा, हमारी माताजी, हमें और इस संसार को छोड़ कर हमेशा के लिए जाने वाली हैं। सभी एक गम्भीर उदासी के वातावरण में पूर्णरुप से लिप्त नज़र आ रहे थे। कोई भी ऑफिस, फैक्ट्री या फिर किसी अन्य काम के लिए बाहर नहीं गया था।

इतने में एक गुरु-भक्त सुंदर सिंह, मेरे पास गुरुजी का सन्देश लेकर आया और कहने लगा कि गुरुजी रिंग रोड पर मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं। मुझे उनके साथ धर्मशाला (हिमाचल-प्रदेश) जाना है। मैंने नज़र घुमाकर परिवारजनों को और फिर माताजी कि तरफ देखा, जो बिस्तर पर लेटी थीं।

मैंने एक रुमाल लिया, उसे धोया और निचोड़ते हुए माताजी के कमरे में गया। उन्होंने मेरी ओर देखा और कहने लगी कि उनके पैर जल रहे हैं और इस कारण बड़ी तकलीफ महसूस कर रही हैं। मैंने वो गीला रुमाल उनके पैरों पर रख दिया और कहा कि इससे ठण्ड पड़ जाएगी। मैंने उनसे कहा कि गुरुजी बाहर सड़क पर मेरा इंतज़ार कर रहे हैं और मुझे उनके साथ धर्मशाला जाना है। कुछ दिन के बाद मैं वापिस आकर आपसे यह रुमाल ले लूँगा।

बड़ी कमाल की माँ थीं मेरी माताजी। कहने लगी कि अच्छा... ठीक है। अब मैं सुंदर सिंह की तरफ मुड़ा और कहा, “...चल चलते हैं।” और सारे परिवार के बीच में से होता हुआ बाहर निकल गया।

हो सकता है कि कुछ सदस्यों ने मेरे इस कार्य की निंदा भी की हो कि माँ को इस मुश्किल घड़ी में छोड़ कर चला गया। ...मगर ज़रुरी नहीं। परन्तु किसी ने मुझसे कोई सवाल नहीं किया। कारण... कि मैं गुरुजी के आदेश पर जा रहा था।

वहाँ पहुँचकर मैंने गुरुजी को प्रणाम किया और उन्होंने मुझे आशीर्वाद दिया ...और गाड़ी चल दी अपनी मंजिल की तरफ। गुरुजी ने मुझसे माँ के बारे में कोई प्रश्न नहीं पूछा क्यूंकि वे मेरे अंदर-बाहर का सब-कुछ जानते ही थे। बाकी शिष्यों में पंडित रामकुमार एवं आर. पी. शर्मा भी थे। गुरुजी की छाया में हम धर्मशाला पहुँच गए। गुरुजी की अध्यात्मिक छत्र-छाया में यह एक ऐसी यात्रा थी, जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता।

गुरुजी ने हमें भागसुनाथ कुंड में स्नान करने का आदेश दिया। यह एक अद्वितीय बर्फीला और दिव्य सरोवर है..। यहाँ ऋषि भागसुनाथ ने घोर तप किया और भगवान शिव से वरदान प्राप्त किया था। यहाँ सारा साल बर्फीला पानी बहता रहता है और सरोवर खूबसूरत पहाड़ियों से घिरा हुआ है। गुरुओं के गुरु, गुरुजी द्वारा पूर्ण सुरक्षित यह स्नान, हम कभी नहीं भूल पायेंगे। अपने प्रभु के साथ 5-6 दिन बिताने के बाद और कुछ और स्थानों के भ्रमण कराने के बाद, गुरुजी हमें वापिस ले आये और मैं वापिस पंजाबी बाग पहुँच गया।

...निसन्देह, मैं माताजी से मिलने के लिए उत्सुक था। अतः मैं सीधा उनके कमरे में गया। नज़ारा देख, मैं गद्गद् हो गया। अपने बिस्तर पर बैठ कर वे कुछ खा रही थीं। एक झटके के साथ, छलाँग मार कर मैं उनके बिस्तर पर चढ़ गया और उन्हें बांहों में उठा लिया ...और फिर कहा, माताजी वो मेरा रुमाल मुझे वापिस कीजिये।

यह कैसा चमत्कार किया गुरुजी ने...?
छः दिन पहले डॉक्टर और सब सम्बन्धी, जो माता जी को विदाई देने के लिए एकत्रित थे, कोई नज़र नहीं आ रहा था सिवाये, संसार के सबसे बड़े गुरुजी के शिष्य राज्जे के।

....गुरुजी ने मुझे एक पूर्ण तंदुरुस्त और भली-चंगी माँ के साथ अकेले बिठा दिया। यह वह नहीं थी जिसे कुछ दिन पहले डॉक्टरों ने जवाब दे दिया था। मुझे लगता है कि गुरुजी का यह ईश्वरीय कार्य उसी समय शुरु हो गया था जब गुरुजी कार में जा रहे थे और जैसे ही मैं उनके साथ कार में बैठा था, माँ की बीमारी की रिपेरिंग चल रही थी...! मुझे वहाँ से हटा दिया और खुद़ सारा समय वे उन्हीं के पास थे।

...वाह मेरे गुरुदेव, मेरे मालिक वाह...

...मुझे याद आया जब कुछ समय पहले माताजी ने मुझे कहा था कि मैं गुरुजी की एक तस्वीर उनके बेड़ के सामने वाली दीवार पर लगा दूं ताकि वे लेटे-लेटे उनके दर्शन करती रहा करें। गुरुजी की तस्वीर को देखते हुए, एक वाक्य वे अक़्सर बोला करती थीं,

**"...ओ ! जग के रखवाले, ...मैं तेरे हवाले।"**

मेरे धर्मशाला जाने से पहले जो लोग वहाँ आये हुए थे उनको आख़िरी विदाई देने के लिए सब अपने-अपने घरों को चले गए ...और सो गए, मगर गुरुजी जागते रहे। वे कभी नहीं सोते। मैं जानता हूँ, गुरुजी ने कहा था,

***“जब सारा ज़माना सोता है,***
***...तो मैं जागता हूँ।”***

*प्रणाम ....प्रणाम। ......हे गुरुदेव !!!*

*गुरूजी कहने लगे, "...राज्जे दिखाऊँ तुझे कि हड्डी कैसे जोड़ी जाती है. ..?"*

## 176. गुरूजी ने उसकी जाँघ और घुटने पर हाथ रखे और पुन्चू की टाँग की टूटी हड्डियाँ जोड़ दीं।

*सन् 1985 की घटना है जब बहुत सारे लोग हरिद्वार जा रहे थे। रास्ते में एक बस के साथ टक्कर हुई और कार में बैठी मेरी बड़ी बेटी पुन्चू की टाँग की दो हड्डियाँ टूट गयीं। किसी दूसरी गाड़ी से लाकर उसे दिल्ली के विलिंग्डन अस्पताल में दाख़िल करा दिया गया।*

*हड्डियों का बड़ा डॉक्टर गुरूजी का भक्त था और उसने ऑपरेशन करने का प्लान बनाया। पुन्चू ऑपरेशन के लिए तैयार नहीं थी लेकिन डॉक्टर पूरी तैयारी कर चुका था। सिस्टम के अनुसार पुन्चू को ड्रेस पहनाकर और स्ट्रेचर पर लिटाकर ऑपरेशन-कक्ष के दरवाज़े तक ले जाया गया।*

*अब एक अद्भुत घटना घटी। पुन्चू ने अपना कड़ा माथे पर लगाया और मन ही मन गुरूजी को पुकारा और प्रार्थना की, कि ...हे गुरूदेव मेरा ऑपरेशन रोक दीजिये।*

*...थोड़ी देर में बड़ा डॉक्टर आया और कहने लगा कि उसने ऑपरेशन का प्रोग्राम कैंसिल कर दिया है इसलिए मरीज़ को वापिस कमरे में भेज दो। तद्-उपरान्त उसे तख़्ती* (Splint) *लगाकर पट्टी बाँध दी गयी।*

*आफरीन गुरुदेव, आपने दूर बैठे-बैठे अपने बच्चे की पुकार सुन ली और ऑपरेशन रोक दिया। ...कुछ समय बीता और पुन्चू को तख़्ती* (Splint) *लगी पट्टी के साथ ही घर ले आये।*

*एक रात को करीब तीन बजे कराहने की आवाज़ से मेरी नींद खुली। मैं भागा और देखा के पुन्चू फर्श पर गिरी, दर्द से कराह रही थी। मैंने उसे उठाया और वापिस बिस्तर पर लिटाया और धीरज बंधाते हुए कहा कि सुबह होते ही गुडगाँव चलेंगे गुरूजी के पास। इस तरह पुन्चू को लेकर करीब सात बजे हम गुरूजी के पास पहुँच गए और गुरूजी ने उसे छोटे कमरे में बिस्तर पर लिटा दिया।*

*तकरीबन डेढ़-दो घंटे के इंतजार के बाद गुरूजी आये और कहने लगे, "...आ राज्जे, अब मैं इसकी टाँग की हड्डियाँ जोड़ता हूँ।"*

*टाँग में लोहे की तख़्ती* (Splint) *लगी हुई थी जिसमें टूटी हुई टाँग को कसकर नीचे की तरफ से बाँधा हुआ था। गुरूजी कहने लगे, "...चल खोल इसे और टाँग को ढीला कर दे।" जैसे ही मैंने पट्टियाँ खोली गुरूजी ने अपना एक हाथ उसकी जाँघ पर और दूसरा उसके घुटने के ऊपर रखा। गुरूजी कहने लगे,"...राज्जे दिखाऊँ तुझे कि हड्डी कैसे जोड़ी जाती है...?"*

*मैंने कहा,"...जी गुरूजी।"*

*उन्होंने हाथ नीचे की ओर खिसकाते हुए मुझसे कहा, "अपना हाथ जाँघ पर रख और खिसकती हुई हड्डी को महसूस कर। मैं दंग रह गया। मेरी हथेली के नीचे से बिलकुल साफ़ महसूस हुआ कि हड्डी नीचे कि ओर चल रही है।*

*गुरूजी आहिस्ता-आहिस्ता अपना हाथ नीचे की ओर खिसकाते जा रहे थे और मैं हथेली के नीचे से हड्डी का धीरे-धीरे खिसकना महसूस कर रहा था। बहुत बड़ा अचम्भा था यह मेरे जीवन में। मैंने कभी सोचा तक नहीं था कि ऐसा भी हो सकता है। कौनसी शक्ति का प्रयोग कर रहे थे गुरूजी, मेरी समझ से बहुत परे था। टाँग के ऊपरी भाग पर हाथ रख कर नीचे कि ओर खिसका रहे थे और हड्डी अंदर से खिसक रही थी। असम्भव--असम्भव।*

*कुछ मिनटों के बाद कहने लगे, "ले बेटा, ऊपर चढ़ी हुई हड्डी अब आमने-सामने आ गयी है, अब इसे तख़्ती* (Splint) *के साथ बाँध दे।" मैंने वैसा कर दिया। गुरूजी वहाँ से फिर दूसरे कमरे में चले गए जहाँ बहुत सारी पब्लिक उनका इंतज़ार कर रही थी।*
*बेटी को लेकर मैं दिल्ली, पंजाबी बाग वापिस आ गया। कुछ समय बीतने पर टाँग को तख़्ती* (Splint) *से बाहर निकाल दिया गया और टाँग बिलकुल ठीक हो चुकी थी। कोई कह नहीं सकत था कि कभी इस टाँग में फ्रैक्चर हुआ था।*

*दिल और दिमाग, दोनों शक्तियाँ बिलकुल बेकार सिद्ध हुई। जो गुरूजी ने किया, उसे समझने के लिए किसी अलग तरह के ज्ञान की आवश्यकता होगी, जो मेरे पास उपलब्ध नहीं है। इसलिए, मैं हाथ जोड़, नत्-मस्तक होकर गुरूजी से प्रार्थना करता हूँ कि चिकित्सा विज्ञान में एक्सरे मशीन और कैमरे की सहायता से टी.वी. स्क्रीन पर देख कर पता लगता है कि हड्डी ऊपर से उतर कर आमने-सामने आ गयी है, तभी अगली कार्यवाही* (Action) *करते हैं और डॉक्टर लोग तख़्ती* (Splint) *से बाँध देते हैं। ...लेकिन*

***गुरूजी के पास कौन सा कैमरा था जिसे देख कर उन्होंने मुझे आदेश दिया था कि "राज्जे, हड्डी ऊपर से उतर कर सामने आ गयी है, अब बाँध दे इसे तख़्ती* (Splint) *के साथ।"***

सभी दिशाओं और समस्त देवी-देवताओं को सम्मिलित कर मैं आपको माथा टेकता हूँ।

प्रणाम स्वीकार कीजिये ...गुरुवर

गुरूजी ने कहा, बेटा, रोना नही। जिस काम के लिए तुम दिल्ली से आये हो, वो काम मैंने कर दिया है।

## 177. गुरुजी ने, एक वृद्ध दम्पति के लिए अपने कमरे में आधा घंटा प्रतीक्षा की।

एक दिन सुबह-सुबह गुरूजी अपने कमरे में बैठे थे। बिट्टू उनकी सेवा में था। उन्होंने कहा, बेटा मुझे खाना दे दो और फार्म के लिए कुछ लोगों के लिए खाना पैक कर लो, मुझे फार्म पर जल्दी जाना है। सारी तैयारी करने के बाद, बिट्टू उन्हें बुलाने के लिए आया तो वो ध्यान-मुद्रा में थे। बिट्टू बाहर चला गया और प्रतीक्षा करने लगा।

15 मिनट के बाद वह आया लेकिन अभी भी गुरूजी उसी मुद्रा में ही थे। 15 मिनट बाद वह फिर आया तो गुरूजी ने कहा कि चलो, ...अब चलते हैं और पिछले दरवाज़े से बाहर चल दिये। बिट्टू गाड़ी चला रहा था और वे पीछे बैठ गये।

अभी थोड़ी ही दूर गए थे कि बिट्टू को गाड़ी रोकने का आदेश दिया। सड़क पर एक वृद्ध पति-पत्नी पैदल जा रहे थे। गुरूजी के कहने पर बिट्टू ने उन्हें गाड़ी में पीछे गुरूजी के साथ ही बैठा लिया और पूछा कि वह कहाँ जा रहे हैं। ...उन्होंने कहा कि वो दिल्ली से आये हैं और गुरूजी के दर्शन करने स्थान पर गए थे। बिट्टू ने पूछा कि क्या गुरूजी मिले...? तो उन्होंने कहा नहीं। वे कहने लगे कि सेवादार ने मिलने नहीं दिया और कहा कि गुरूजी आज किसी से नहीं मिलेंगे। उदास मन से उस वृद्ध ने जवाब दिया।

बिट्टू से अब रहा नहीं गया और कह उठा कि ये ही तो हैं गुरूजी... जो आपके साथ बैठे हैं। वृद्ध पुरुष भौंचक्का रह गया और एकदम सीट से उतर कर नीचे बैठ गया और पाँव पकड़कर रोने लगा। गुरूजी ने उसे उठाया, सीट पर बिठाया और आशीर्वाद दिया। फिर उन्होंने जेब से पैसे निकाल कर उन्हें दिए और कहा, बेटा, रोना नही। जिस काम के लिए आये हो, वो काम मैंने कर दिया है और बिट्टू से कहा कि वह उन्हें बस स्टाप पर छोड़ दे।

बस स्टाप पर छोड़ने के बाद गुरूजी कहने लगे, “बेटा, स्थान पर यह बड़ी मिन्नतें करते जा रहे थे और मेरे सेवादार बच्चे ने इन्हें दया से नहीं सुना। अपने कमरे में बैठा हुआ, आधे घंटे से मैं इन्हें ही देख और सुन रहा था और अपने सेवादार बच्चे का रवैय्या नोट कर रहा था। इनके पास दिल्ली जाने के लिए किराया तक नहीं था और दोनों आत्महत्या करने का विचार कर रहे थे। इसी कारण से मैंने इन्हें अपने पास बैठाकर आशीर्वाद के साथ पैसे भी दिए। इन दोनों के कारण ही मैंने आधा घंटा प्रतीक्षा की अपने कमरे में।

***...हे गुरुदेव, आप अपने कमरे में बैठकर या लेटकर बाहर का सब-कुछ देख लेते हैं, पर कैसे गुरूजी...? यह सब तो भगवान के अलावा और कोई नहीं कर सकता!***

*जन्म से लेकर अब तक यही ज्ञान मेरे और बाकी सबके पास है। ईश्वर सबका पालन करता है और सबका ख्याल रखता है। उसकी इस मेहरबानी की वज़ह से ही हर जीव, सुबह-शाम उसकी स्तुति गाता है।*

*ऊपर लिखी घटना को ध्यान से पढ़ें, सोचें ...तो लगेगा कि ईश्वर और गुरूजी दोनों एक ही हैं, ...दो नहीं।*

*...मगर गुरूजी, यह सोच और समझ आप देंगे,*
*तो ही आएगी...! आप के बिना कभी नहीं*
*...कभी नहीं !!!*

गुरूजी ने कहा, "बेटा, जब तक तुम्हारे हाथ में मेरा कड़ा है, तुम्हें मौत नहीं आएगी, इसे कभी नहीं उतारना।"

## 178. गुरूजी के आशीर्वाद का कड़ा मनुष्य की सोच से बहुत आगे....

(गुरूजी का कड़ा "एक उत्कृष्ट शक्ति")

आमतौर पर इसका नाम चूड़ी, कंगन इत्यादि जाना जाता है और आम लोग इसे खरीद कर सजावट के लिए अपने आप पहन लेते हैं। महिलाऐं सोने, चाँदी इत्यादि की धातु से बनवा कर पहनती हैं। कुछ धार्मिक संस्थानों जैसे मंदिर या गुरूद्वारों में भक्त लोग स्टील से बना कड़ा खरीद कर ख़ुद़ ही पहन लेते हैं। लेकिन, जो कड़ा गुरूजी पहनाते हैं, उसे उन्होंने ख़ासतौर पर ख़ुद़ डिजाईन किया है, जो तॉम्बे से बना और जिसमें चाँदी का टाँका होता है। कुछ भक्त जिन्हें आर्थिक कष्ट हैं उन्हें आधा तॉम्बा और आधी चाँदी का कड़ा लाना होता है।

गुरूजी उसे हाथ में लेकर अपने माथे से छूकर और उसमें ईश्वरीय शक्तियाँ डालकर अपने भक्तों के दाहिने हाथ में पहनाते हैं मगर महिलाओं को बाँये हाथ में। कड़ा पहनाने के बाद भक्त का 24 घंटो का गुरूजी से सीधा संपर्क हो जाता है। इसलिए इस बात पर ज़ोर दिया जाता है कि इसे कभी भी उतारा न जाये चाहे बाथरूम ही क्यों न हों। इसे सिर्फ दो मौकों पर, जहाँ जन्म हुआ हो या जहाँ मृत्यु हुई हो, उतार कर घर पर रखना या फिर दूसरे हाथ में डालना आवश्यक है। यह परहेज़ कम से कम 21 दिन का होता है।

गुरूजी कहते हैं कि तॉम्बे में भगवान शिव और चाँदी में माँ की शक्तियों का वास करते हैं और इसके आलावा गणेश जी की शक्तियों का भी वास किया जाता हैं। ऐसी सूरत में जब किसी के जीवन में धन की समस्या अधिक हो और बरक़त न हो तो उसे वो कड़ा पहनाते हैं जिसमे आधा भाग तॉम्बे का और आधा चाँदी का हो।

जिस तरह गुरूजी का कड़ा कार्य करता है, वो इंसानी सोच से बहुत परे है। सभी को ज्ञात है कि जैसे ही कोई गुरूजी का कड़ा पहनता है, उसकी 40% प्रतिशत समस्याएँ समाप्त हो जाती हैं। लेकिन पूर्ण विश्वास का होना परम-आवश्यक है।

सत्तर के दशक में जब मैंने गुरूजी के पास जाना शुरु किया था तो मेरे साथ मेरा मित्र दीप शाही जो मेरी पत्नी का भाई भी था, अक़्सर मेरे साथ होता था। वह एक

अध्यात्मिक पुरुष था, उसने भी कड़ा पहना था। वह कुछ कम जाया करता था। शायद उसमें विश्वास की कमी थी।

एक बार उसे दिल का दौरा पड़ा और उसे दिल्ली के कपूर अस्पताल में भर्ती करा दिया गया। क्योंकि मैं उसे बहुत प्रेम करता था अतः मैंने गुरूजी के पास उसे ठीक करने की प्रार्थना की और किसी तरह गुरूजी को मना कर उन्हें अस्पताल ले गया। हालाँकि यह कोई साधारण बात नहीं थी कि गुरूजी किसी के लिए अस्पताल जायें।

जैसे ही हम अस्पताल के कमरे में पहुँचे, दीप बिस्तर पर लेटा हुआ था। मैंने खुशी से पुकारा, “देखो दीप, ...कौन आये हैं?” वह एकदम उठा और उनके चरणों में गिर पड़ा और बड़ी उत्सुकता से फर्श पर बैठ गया। कहने लगा, “गुरूजी, मैं अपनी पत्नी से बहुत प्यार करता हूँ इसलिए मरना नहीं चाहता।”

इतना सुनते ही गुरूजी ने कहा,

**“बेटा, जब तक तुम्हारे हाथ में मेरा कड़ा है,**
**तुम्हें मौत नहीं आएगी, इसे कभी नहीं उतारना।”**

कुछ दिन वहाँ रहकर दीप अपने घर आ गया और पत्नी, छोटे भाई और उसकी पत्नी के साथ एक आम जीवन बिताने लगा।

उसके भाई की पत्नी गर्भवती थी और इर्विन अस्पताल, मेडिकल चैकअप के लिए अक़्सर जाया करती थी। ऐसे ही एक दिन अस्पताल में चैकअप के लिए सब लोग गाड़ी में जा

रहे थे। अस्पताल पहुँचने से चन्द मिनट पहले दीप ने कहा कि उसे उसकी तबीयत खराब लग रही है, उसकी पत्नी ने उसे धीरज बंधाते हुए कहा कि थोड़ी देर में अस्पताल पहुँचने वाले हैं अतः डॉक्टर से चैक करा लेंगे। लेकिन तबीयत कुछ और बिगड़ने पर वह पत्नी पर क्रोधित हो, कहने लगा कि वह उसकी हालत समझ नहीं रही है।

इस तरह 2 मिनट और बीतने पर वह अपना संतुलन खो बैठा। अपने कड़े को देखते हुए कहने लगा कि यह कड़ा बहुत भारी लग रहा है और मैं इसका वज़न सह नहीं पा रहा।

पत्नी ने समझाया कि थोडा सबर करें, अस्पताल बिलकुल नज़दीक है। पत्नी कि सलाह पर उसका क्रोध और बढ़ गया। उसने हाथ से कड़ा उतारा और कहा कि मेरी खराब हालत, इस कड़े के ही कारण है और कड़ा उतार कर गाड़ी से बाहर फेंक दिया। उसकी हालत में एकदम सुधार आ गया और उसने आँखें बंद कीं तथा सीट पर लेट गया, जैसे सो रहा हो।

अस्पताल पहुँच कर वे सब एमरजैंसी वार्ड की तरफ भागे। बहुत से डॉक्टरों ने दीप का मुआइना किया ....लेकिन वह जीवित नहीं था।

उसके भाई के फोन पर, मैं अस्पताल पहुँचा तो देखा कि डॉक्टर अपनी आखरी कोशिशें कर रहे थे। बिजली के शॉक दे रहे थे और छाती पर पम्पिंग कर रहे थे। आख़िर उसे मृत घोषित कर दिया गया।

इस घोषणा को मानने के लिए मैं बिलकुल तैयार नहीं था, क्यूंकि चन्द माह पहले गुरूजी के कहे शब्द मेरे कानों में गूँजने लगे, "जब तक मेरा कड़ा तुम्हारे हाथ में है, तुम्हें मौत नहीं आएगी।" मैं उस पर झुका और उसे पुकारने लगा। जब उसने उत्तर नहीं दिया तो मैंने उसका हाथ देखा...

कड़ा नहीं था...!!!

उसकी पत्नी से पूछा तो उसने पूरी कहानी सुना दी और गाड़ी में जो कुछ हुआ था और कैसे उसने गुस्से में कड़ा उतार कर फेंका, सब सुना दिया।

----तो कड़ा उसके हाथ में नहीं था---

गुरूजी के शब्द मेरे कानों में और मेरे सिर के मध्य में गूँजने लगे,

**"बेटा, जब तक तुम्हारे हाथ में मेरा कड़ा है,**
**तुम्हें मौत नहीं आएगी**
--**इसे कभी नहीं उतारना।"**

...बहुत भाग्यशाली हूँ मैं, कि गुरूजी की आभा और उनकी स्तुति का गायन कर रहा हूँ ...और साथ-साथ बारम्बार गुरूजी के कड़े का यश गा रहा हूँ...

बारम्बार--प्रणाम
--हे गुरूदेव !

मातारानी ने कहा, "कल मैंने सरसों का साग बनाना है। इसलिए सभी आ जाना। मक्की की रोटी भी पकाऊँगीं।"

## 179. माताजी ज्ञान की अवतार हैं।

माताजी ने शिष्यों को लुभाने और उन्हें उनके आध्यात्मिक लक्ष्यों तक पहुँचाने का कार्य चुपचाप किया।

शक्ति की अवधि, दीवाली पूजा की रात के बाद सुबह से शुरु होती है। क्योंकि गुरुजी स्वयं् शिव हैं इसलिए शिवरात्रि तक शिष्यों के साथ शारीरिक संपर्क से बाहर रहते थे। लेकिन कुछ विशेष परिस्थितियों में शिष्यों से मिलना आवश्यक हो तो गुरुजी रुमाल से अपने माथे को ढककर मिलते थे और अपने शिष्यों को भी इस अवधि में भक्तों से मिलने के लिए इसी तरह के नियम का पालन करने का निर्देश देते थे। इस अवधि को गुरुजी द्वारा 'शक्ति की अवधि' (Shakti Period) का नाम दिया गया है।

गुरुजी के आदेशानुसार शिष्यों को सेवा जारी रखनी होती है, लेकिन क्योंकि भगवान शिव समाधि अवस्था में रहते हैं इसलिए माँ शक्ति की आध्यात्मिक शक्तियों का ही प्रयोग किया जा सकता है। यह शक्तियाँ माताजी से ही उपलब्ध हो सकती हैं, इसलिए शिष्यों को माताजी से सम्पर्क करना आवश्यक है ताकि उनसे आशीर्वाद प्राप्त कर अपनी सेवा बिना किसी कमी के जारी रख सकें।

**इसी कारण गुरुजी ने आदेश दिया कि सब शिष्य कम से कम ग्यारह बार गुड़गाँव स्थान पर चक्कर लगाऐं और माताजी से प्रणाम करके आशीर्वाद प्राप्त करें।**

यह अवधि गणेश चर्तुथी तक होती है।

माताजी बड़ी दयालु हैं। उन्होंने सोचा कि गलती से कहीं कोई ग्यारह से कम चक्कर न लगाऐ इसलिए उन्होंने एक कमाल का तरीका अपनाया।

एक दयालु और देखभाल करने वाली माँ होने के नाते, मातारानी यह जानती हैं इसलिए उन्होंने एक नायाब़ तरीका अपनाया ताकि शिष्य स्थान पर उनके पास आयें और उनका आशीर्वाद, उनको दिया जा सके। मातारानी ने सभी शिष्यों को बुलाया और घोषणा की, "कल मैंने सरसों का साग बनाना है। इसलिए सभी आ जाना। मक्की की रोटी भी पकाऊँगीं।"

वे यह अच्छी तरह से जानती थी कि सरसों का साग हममें से कईयों की कमजोरी है। हम सब के लिए यह एक विशेष दावत किसी उत्सव से कम नहीं थी और वो भी तब जबकि मातारानी द्वारा खुद़ दी जाये। इसके लिए तो किसी अन्य कार्यक्रम को भी स्थगित किया जा सकता था।

अतः “मातारानी” जब कभी हमारा गुड़गाँव का दौरा कराना चाहतीं, वे साग और मक्की की रोटी पकातीं और हमें तद्नुसार सूचित कर देतीं और हम स्थान पर पहुँच जाते तथा माँ का दिव्य आशीर्वाद लेते और साग और मक्की की रोटी का आनन्द भी लेते। एक बढ़िया तरीका था उनका, हम पर आशीर्वादों की बौछार करने का। ...क्या विशेष माँ है और क्या रास्ता अपनाया उन्होंने।

माता जी ने हमारा इतना ख़्याल रखा और दीवाली से गणेश चर्तुथी के दौरान ग्यारह बार स्थान का दौरा पूर्ण करने में हमारी मद्द की। यह सिर्फ आध्यात्मिक उत्थान के लिए, हमारे लिए किया। गुरूजी ने बताया कि आध्यात्मिक उत्थान के लिए, स्थान पर पहुँचना बहुत महत्वपूर्ण और अत्यन्त आवश्यक है।

जब भगवान शिव समाधि में प्रवेश करते हैं तो शिवरात्रि तक उसी अवस्था में रहते हैं। प्रभु जब वापिस जाग्रत अवस्था में आते हैं तो सम्पूर्ण जगत और ख़ासकर वे लोग जो उन्हें प्यार करते हैं और उनकी पूजा की प्रतीक्षा करते हैं, वे कुछ महीनों तक इस अवधि में, महाशिवरात्रि के इस शुभ दिन की मिनट दर मिनट रात के 12 बजे के समय की उत्सुकता पूर्वक प्रतीक्षा करते हैं।

गुरूजी ने कहा, "सुरिन्दर, उसको बेटी  होगी बेटा नहीं...।"

## 180. गुरूजी ने नागपाल को एक बेटे के लिए वरदान दिया।

गुड़गाँव का नागपाल, गुरूजी का ऐसा शिष्य था, जिसे वे बहुत प्यार करते थे। उसकी तीन बेटियाँ थी लेकिन उसे चौथे बच्चे की तम्मना थी। लेकिन वह बेटे के लिए सुनिश्चित कर लेना चाहता था। वह गुरूजी के बहुत करीब था और जानता था कि अगर गुरूजी 'हाँ' कह देते हैं तो बिना किसी शक के बेटा ही होगा। तो उसने गुरूजी से पूछा और गुरूजी ने 'हाँ' कह दिया कि इस बार बेटा ही होगा।

गर्भ को छह महीने का समय बीत गया। एक दिन वह गुरूजी के कक्ष में बैठा था, वह दुबारा से आश्वास्त होना चाहता था। वह बोला, "गुरूजी पक्का है ना। लड़का ही होगा ना...?" गुरूजी ने पुष्टि की और उसे लड़के के लिए आश्वासन दिया और कहा कि तुम्हें संदेह नहीं होना चाहिए, क्योंकि उन्होंने स्वयं् आशीर्वाद दिया है। जब नागपाल के साथ इस विषय पर चर्चा हो रही थी तो एक अन्य शिष्य सुरिन्दर तनेजा भी कमरे में बैठा हुआ था।

नागपाल के जाने के बाद एक अज़ीब घटना घटी।

गुरूजी ने कहा,"सुरिन्दर, उसको बेटी होगी, बेटा नहीं...।" सुनकर सुरिन्दर हैरान रह गया। उसने कहा,"गुरूजी, आपने अभी तो उसे कहा था कि कोई फ़िकर ना करे, लड़का ही होगा और आपने इस पर ज़ोर भी दिया कि फ़िकर ना करे...!! गुरूजी तब उस पर क्या बीतेगी, जब उसकी पत्नी चौथी बार फिर एक लड़की को जन्म देगी...!!" वह तो किसी भी तरह का जोख़िम लेने के लिए तैयार नहीं था। अगर उसे मामूली सा भी अंदेशा होता कि उसकी चौथी सन्तान फिर लड़की होगी तो वह इसके लिए प्रयास ही नहीं करता।

गुरूजी गंभीर हो गये और सुरिन्दर से कहा, "बेटा, इसकी जिन्दगी सिर्फ दो साल ही बची हुई है, अगर इसका बेटा होता है, तो ये उसका क्या आनन्द लेगा। बच्चा गोद में ही होगा और बाप चल बसेगा। क्या मिलेगा नागपाल को...?  ....और जो बेटी होने वाली है उसका कन्या दान किये बिना, नागपाल मर नहीं सकता। यह सच्चाई सिर्फ मैं जानता हूँ और तुम वो दूसरे व्यक्ति हो, जिसके साथ मैंने इस गुप्त रहस्य को बाँटा है।
**....मैं गुरू हूँ बेटा।"**

अन्ततः नागपाल के घर बेटी ने जन्म लिया। नागपाल बहुत परेशान हुआ और गुस्से में गुरूजी के पास चला आया और उनसे शिकायत तथा बहस करने लगा। वह बोला कि मुझे चौथी लड़की की कोई ज़रुरत नहीं थी और अगर मुझे लड़का ना होने का ज़रा सा भी शक होता, तो मैं कभी भी इसके लिए प्रयास नहीं करता। अन्त में उसने अपना कड़ा उतारा और गुरूजी के साथ अपने रिश्ते को अलविदा घोषित कर दिया।

गुरूजी धैर्यपूर्वक उसकी बाते सुनते रहे, लेकिन उन्होंने क्या किया था, इसका उन्होंने उसे कोई जवाब नहीं दिया। जब नागपाल थक गया, गुरूजी ने कड़ा लिया और बड़े प्यार से उसे दुबारा पहना दिया। लेकिन यह रहस्य उस पर प्रकट नहीं किया।

कुछ दिनों के बाद जब सुरिन्दर तनेजा को नागपाल से मिलने का मौका मिला, तो उसने उसे इस सच्चाई के बारे में बताया जो गुरूजी ने उसे लड़के और बच्ची के जन्म के बारे में विस्तार से बताया था। नागपाल कई वर्षो तक जीवित रहे, वह बच्ची बड़ी हुई और उसकी शादी हो गयी। ज़ाहिर है नागपाल ने उसका 'कन्या दान' किया और फिर गुरूजी के चरणों में पहुँच गया।

**हमारा भाग्य बनाने वाले परमेश्वर तथा**
**जीवन का भविष्य जानने वाले और**
**बने हुए भाग्य को बदलने में सक्षम।**

**...हे गुरूदेव, आप महान हैं।**
साष्टाँग प्रणाम हैं। हे गुरूवर!

गुरूजी ने कहा, "ठीक है तुम जो भी खाना चाहो खा सकती हो और हाँ जितना चाहो उतना घी खा सकती हो। आज से तुम्हें किसी भी दवाई लेने या कभी किसी चिकित्सा जाँच के लिए जाने की ज़रुरत नहीं है।

## 181. गुरूजी ने जम्मू के राजू को अपनी माँ की मेडिकल जाँच कराने से मना कर दिया।

करीब 1988-89 की बात है। जम्मू में राजू नाम का एक भक्त सेवादार है। लेकिन गुरूजी के प्रति विश्वास में उसकी माँ, उससे कहीं आगे है। वह अपना एक आरामदायक सामान्य जीवन जी रही थी।

एक बार उसे दर्द हुआ, जिसके लिए उसने डॉक्टर से सलाह ली। डॉक्टर ने उसे कुछ चिकित्सा परीक्षाऐं (Medical Investigations) कराने की सलाह दी। रिपोर्ट में यह स्पष्ट रुप से कहा गया कि वह एक विकट (Acute) दिल की समस्या से पीड़ित है। उसे दवाओं की भारी खुराक के तहत रखा गया और कई सावधानियाँ जैसे मक्खन और घी का परहेज़ तथा कुछ खाद्य पदार्थों को भी उसके आहार से हटा दिया गया।

समय बीतता गया और वह लगाये गये प्रतिबंधों से थक गई। उसने बहुत सी शिकायतों की एक सूची गुरूजी के समक्ष रखने हेतु योजना बनाई और गुड़गाँव पहुँच गई। वह पूरी तरह से कुंठित दिखाई दे रही थी। उसने गुरूजी से प्रार्थना की, "गुरूजी, मैं ऐसा जीवन नहीं जीना चाहती जिसमें मुझे रोज़ाना दवाईयों और दर्जनों गोलियों पर निर्भर रहना पड़े। मैं अपनी पसंद का खाना नहीं खा सकती और ना ही घी खाने की अनुमति है, जो मेरे खाने की कमजोरी है। घी मुझे बहुत पसन्द है और मैं घी खाये बग़ैर नहीं रह सकती। मुझे यदि मजबूरी में जीवन ऐसे ही जीना पड़ेगा तो मुझे ऐसे जीना पसंद नहीं है बजाय इसके ...हे गुरूदेव मुझे मौत दे दीजिए।"

जिस तरह से वह प्रार्थना कर रही थी, आश्चर्य..!!

काम हो गया। गुरूजी भावुक हो और भी मधुर हो गये। उन्होंने कहा, "ठीक है आज से तुम्हें किसी भी दवाई लेने की ज़रुरत नहीं है। तुम जो भी खाना चाहो खा सकती हो और हाँ जितना चाहो, उतना घी भी खा सकती हो। फिर उसके बेटे राजू को बुलाया और आज्ञा दी कि कोई भी प्रतिबंध लगाने की और कभी किसी भी चिकित्सा जाँच के लिए ले जाने की ज़रुरत नहीं है।

*....और राजू ने उनकी आज्ञा का पालन किया। तब से बीस साल से अधिक बीत चुके हैं और वह अभी भी जम्मू में एक सामान्य जीवन जी रही है। वह नियमित खाने का सभी आनंद ले रही है, लेकिन कोई दवाई नहीं......*

*मुझे लगता है....,*

** ना तो मैं सोच सकता हूँ,*

** ना कल्पना कर सकता हूँ*

** ना ही अनुमान लगा सकता हूँ और...*

*अन्त में ना ही इस पर विचार कर सकता हूँ कि गुरूजी के कुछ शब्द कहने पर उसकी धमनियों की नाकाबंदी* (Blockage of Arteries) *का क्या हुआ और इससे उसके जिगर, गुर्दे और दिल को क्या अनुभव हुआ कि उसके दिल की बीमारी सम्पूर्ण रुप से समाप्त हो गई।*

***कृप्या गुरूजी बताईये, किया क्या आपने....? ऐसा तो कभी नहीं देखा, ना सुना.....।***

*आप ही आप हैं.... हे भगवन्...!*

*प्रणाम .....हे गुरूजी।*

गुरूजी ने कहा, "राज्जे, मेरी चेतावनी गुनाहगार जानता है। वो, जिसके पास इसकी चेन है, वो भुगतेगा।"

## 182. दो महिलाऐं आई और एक ने दूसरी महिला की गुम सोने की चेन की पुनः प्राप्ति (Recovery) की प्रार्थना की।

यह घटना शिवपुरी स्थान से सम्बन्धित है, जहाँ गुरूजी ने मानव जाति के लिए एक अनदेखी व अभूतपूर्व सेवा शुरु की थी। वहाँ हर एक व्यक्ति चाहे वह किसी भी समस्या के समाधान के लिए क्यों न आया हो, उसका स्वागत होता था। फिर वो समस्या चाहे शारीरिक हो, बुरे वक्त से सम्बन्धित हो, मानसिक हो या आध्यात्मिक। गुरूजी अपने स्थान पर बैठते और लोगों के आने और उनका अपनी समस्याऐं उनके समक्ष रखने का सिलसिला शुरु हो जाता तथा उनकी समस्याओं का निवारण हो जाता।
यह दृश्य देखने लायक होता था। वे किसी को भी मना नहीं करते थे। आने वाले हर व्यक्ति को चाय का प्रसाद दिया जाता था।

एक बार गुरूजी स्थान पर बैठे और मैं अपनी सेवा के हिसाब से वहाँ खड़ा था। नया होने के नाते मैं भी अभी गुरूजी के अधिक निकट नहीं आया था। लेकिन जिज्ञासावश रोजाना गुरूजी द्वारा किये जा रहे अविश्वस्नीय कार्यो को करते देखता रहता था। वहाँ जो भी दिन बीतता था वह अचरज व चमत्कारों से परिपूर्ण होता था।

तभी दो महिलायें आई और गुरूजी के सामने बैठ गई। उनमें से एक महिला बोली, "गुरूजी यह मेरी पड़ोसन है और बहुत उदास है क्योंकि इसकी सोने की चेन किसी ने चुरा ली है। मैं इसे यहाँ लेकर आई हूँ कि आप इसकी चेन, इसे वापिस दिला दें और मैं यह जानती हूँ कि आप ऐसा कर सकते हैं।"

गुरूजी ने उसकी तरफ देखा और कहा, "जिसके पास इसकी चेन है, वो भुगतेगा। उसके बेटे को आज बुख़ार हो जायेगा। रात के नौ बजे उसका बुख़ार बढ़ना शुरु होगा और कल सुबह सूर्योदय से पहले वह मर जायेगा।"

वह दोनों महिलाऐं चली गई। मैं वहाँ असमंजस में बुत बना खड़ा था मैंने गुरूजी से पूछा कि गुरूजी गुनाहगार आपकी चेतावनी को कैसे जानेगा....? उसे तो उसके बेटे के बुख़ार और मृत्यु के बारे में कोई जानकारी है ही नहीं...! कैसे समझेगा कि अगर चेन न लौटाई तो इतना बुरा हो सकता है उसके साथ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि अगर कहीं उसे इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना के बारे में पता चलेगा, तो वह तुरन्त चेन लौटा देगा। मगर उसे तो पता तक नहीं।

*गुरूजी ने बताया, "राज्जे, गुनाहगार मेरी चेतावनी जानता है।"*
*"सो कैसे ...गुरूजी...?", मैंने पूछा।*

*गुरूजी ने बताया, "वह दूसरी महिला जो उसे साथ लेकर आई थी और उसकी चेन गुम होने के बारे में बता रही थी, वही गुनाहगार है। उसी ने ही उसकी चेन चुराई है। वह सिर्फ दिखावे के लिए ही उसकी शुभ-चिन्तक बन रही थी।"*

*...और फिर ऐसा ही हुआ उसके बेटे को बुख़ार हो गया और रात्रि के नौ बजे उसका बुख़ार बढ़ना शुरु होकर 104 डिग्री तक पहुँच गया। वह डर गई और पूरी रात जागती रही। रात्रि के तीन बजे उसका बुख़ार बढ़कर 105 डिग्री तक पहुँच गया, जो उसके लिए चेतावनी की घन्टी थी।*

*वह व्याकुलता से सुबह होने की प्रतीक्षा करने लगी। जैसे ही सुबह के छः बजे, वह दौड़ती हुई पड़ोसन के घर पहुँची और अच्छी तरह से ढूंढने के लिए उसका पर्स माँगा। जैसे ही उसने उसका पर्स लिया, उसे खोला, और बोली चेन मिल गई। असल में उसने वह चेन पहले से ही अपने हाथ में रखी हुई थी। पहले उसने चेन नीचे गिरा दी और फिर उठा कर उसे दिखा दी और कहा कि ढूंढने पर मिल गई है। आख़िर वह चेन मिल ही गई। चेन वापिस करते ही उसके बच्चे का बुख़ार बिलकुल उतर गया।*

*गुरूजी ने कहा, "बेटा, मैं कभी-कभी ये खेल-तमाशे किया करता हूँ ताकि लोग पाप करने से बच जायें।"*

***गुरूदेव...!***
***आपके खज़ाने में क्या और कितना कुछ है...!!***
***आपके द्वारा किये गये कार्यों व चमत्कारों के बारे में कोई सोच भी नहीं सकता।***

***आप महान हो ...सर जी, आप कुछ भी कर सकते हो बिलकुल वैसा, जैसा भगवान् करते हैं।***

*अपनी कृपा बनाये रखना, ओ महानतम्.....!!*

गुरूजी ने उसे आशीर्वाद दिया और बड़े प्यार से बिस्तर पर बैठने के लिए कहा। वह घबरा गयी और कहने लगी नहीं-नहीं, मेरी जगह यह है कहकर ज़मीन पर बैठ गयी।

## 183. 'पहचान'-- एक पूर्णतयाः पुष्ट मान्यता।

इस जीवन क्षेत्र में, जो कुछ भी होता है, लगता है कि पहली बार हो रहा है। लेकिन वह पहली बार नहीं बल्कि दोहराया जा रहा होता है। कहीं तो कई-कई बार तक दोहराया जा चुका होता है। तो कहा जा सकता है कि पिछले छूटे हुए अधूरे कार्य को पूरा करने के लिए फिर से शुरु होता है, दुबारा नई सी लगने वाली मुलाकातों का सिलसिला। किसी को मिलने पर लगता है कि पहली बार मिल रहे हैं, ...हो सकता है कि पहले भी मिल चुके हों भूतकाल में। पिछला रिश्ता नये रिश्ते में बदल कर सामने आया हो, शरीर और स्थान में आये समय के बदलाव के कारण। मगर आत्माऐं वोही होती हैं। पुरानी यादें बिलकुल खत्म हो जाती हैं। ...लेकिन कुछ ऊँची और पहुँची हुई आत्माऐं जब मिलती हैं तो पुरानी यादें उभर आती हैं और फिर 'पहचान' होने लगती है, भूतकाल के मिलाप की। हालाँकि शरीर बदल चुका होता है मेरा ख्याल है इसी को कहते हैं... 'पहचान'।

परन्तु यह आम बात नहीं। चन्द लोग जिन पर गुरु की भरपूर कृपा हो, वो ही होते हैं इस उपलब्धि के हकदार...।

इसका मतलब है, मन और आत्मा की पुष्टि में किसी पंजीकरण की ज़रुरत नहीं, यह सुनिश्चित लगता है। यह बहुत दुर्लभ है और मात्र उन्हीं तक ही सीमित है जो 'गुरु-कृपा' के लायक हैं। ....लेकिन कैसे और कहाँ से आता है, यह विषय गुरूजी और केवल गुरूजी के अधिकार क्षेत्र में है।

एकबार गुरूजी मुम्बई में थे। भक्तगण घर के ड्राईंगरुम में, सीढ़ियों में और यहाँ तक कि ड्राईव-वे पर भी खड़े थे और गुरूजी के दर्शन की प्रतीक्षा कर रहे थे।

गुरूजी पहली मंजिल पर संदीप सेठी के कमरे में उसके बिस्तर पर बैठे थे और मैं खड़ा था, ताकि समय-समय पर उनके आदेश पर लोगों को उनकी कृपा के लिए उनके कमरे में भेज सकूं।

तभी एक संदेश आया कि एक विख्यात 'महिला-सन्त' गुरूजी के दर्शन की इच्छा से आई हैं। करीब 10 मिनट (Minutes) के इन्तज़ार के बाद गुरूजी ने उसे बुलाया। वास्तव में मैं उस महिला को अच्छी तरह से जानता था। (उस महिला-सन्त के मुम्बई में बहुत से

अनुयायी होने के नाते कई लोग प्रार्थना और आध्यात्मिक प्रवचन के लिए सुबह और शाम उसके आश्रम में आते थे।) उसे बुलाया गया।
वह अपने दो शिष्यों के साथ आयी। उसने गुरूजी के चरणों में प्रणाम किया। गुरूजी ने उसे आशीर्वाद दिया और बड़े प्यार से बिस्तर पर बैठने के लिए कहा। वह घबरा गयी और कहने लगी नहीं-नहीं, मेरी जगह यह है कहकर ...ज़मीन पर बैठ गयी।

मैं उसके जीवन से परिचित था। उसके इस तरह के दृष्टिकोण और व्यवहार की मुझे उम्मीद नहीं थी। वह अत्याधिक विनम्र लग रही थी, ऐसा मैंने पहली बार देखा क्योंकि उसके आश्रम में मैंने सैंकड़ों लोगों को उसके आगे झुकते हुए देखा था। उसके इस रवैय्ये की मुझे आशा नहीं थी।

उसके इस बदलाव को देखकर मैं सोचने पर विवश हूँ कि अवश्य ही उसने गुरूजी को पहचान लिया था।

इतनी बड़ी 'पहचान'......??
बिना किसी ख़ास आत्मिक पहचान के और किसी पुराने रिश्ते के। वो महिला कभी इस तरह इतना नहीं झुक सकती थी जबकि उसके पाँव छूने वालों की संख्या सैंकडों में हो। या फिर हो सकता है कि गुरूजी ने अपनी ख़ास कृपा की ...और उसे वो दृष्टि दी कि वो उन्हें पहचान गयी।

......कैसे....?
--- मैं जानना तो चाहता हूँ, लेकिन पता नहीं है।

मेरा नत्मस्तक प्रणाम स्वीकार करें महानतम्...!

गुरूजी ने कहा, “बेटा, मध्य पूर्व से कुछ हवाऐं इधर आ रही हैं और कुछ दिनों में पहुँच जायेंगी उससे आँखों की एक बीमारी आने वाली है, इसीलिए उसकी रोकथाम के लिये कर रहा हूँ।”

## 184. गुरूजी ने ‘नजर फ्लू’ (Eye Flu) को बम्बई पहुँचने से कुछ दिन पहले ही देख लिया था।

गुरूजी कुछ शिष्यों को साथ लेकर बम्बई पहुँचे और हमेशा की तरह सेवा शुरु कर दी। इतने में अचानक उन्होंने संदीप सेठी को बुलाया और आदेश दिया कि वह फौरन कुछ चीजें जैसे नींबू, काली मिर्च, नीम की पत्तियाँ आदि का संग्रह करे और तरल मिश्रण तैयार करे।

मिश्रण तो तैयार हो गया, परन्तु किसी को इसके बनाने का कारण मालूम नहीं था। मिश्रण अच्छी तरह से पीस कर तरल की सूरत में शीशे की बोतल में डाल दिया गया। फिर गुरूजी ने बुनाई की सलाई से सबकी आँखों में डालना शुरु कर दिया। यह इतना पीड़ा दायक था कि लोगों की चीखें निकल गई और आँसुओं की धाराऐं बहने लगीं।

हममें से किसी को कुछ भी ज्ञान नहीं था कि गुरूजी यह क्या कर रहे थे। फिर जब हमने इसका कारण पूछा तो गुरूजी संजीदा हो गये और कहने लगे, “बेटा मध्य एशिया से कुछ हवाऐं इधर आ रहीं हैं और दो दिन के बाद यहाँ पहुँच जायेंगी। उससे आँखों की एक बीमारी आएगी। उसी की रोकथाम के लिए यह सब पहले से ही कर रहा हूँ। जिन-जिन लोगों की आँखों में यह दवाई डाल दी है उन पर उसका कोई असर नहीं होगा।”

...और ऐसा दो दिनों के बाद हुआ। अचानक कई लोगों की आँखें लाल हो गयी और कोई भी कारण और बीमारी का नाम समझ नहीं आया। डॉक्टरों को सतर्क कर दिया गया और लोगों को बीमारी से बचाने के लिए बहुत से उपचार किये गये। बाद में यह पूरे देश में फैल गया और इसे ‘नजर फ्लू’ 'Eye Flu' के नाम से जाना गया। कई लोगों को इसका सामना करना पड़ा, लेकिन गुरूजी के वे भक्त सुरक्षित थे जिन्होंने गुरूजी के तरल का इस्तेमाल किया था। उन्होंने उनको इस मुसीबत से पूरी तरह से दूर रखा।

अद्‌भुत-----

**गुरूजी “नजर फ्लू” “Eye Flu” के आगमन के बारे में पहले से जानते थे और उससे लड़ने के लिए आध्यात्मिक चिकित्सा से मिक्सचर का निर्माण भी कर दिया।**

-- धन्य हैं गुरूदेव आप।

.......कोटि कोटि प्रणाम।

गुरूजी ने कहा, ''बेटा, जीत-हार का फैसला तो हम, मैच शुरु होने से पहले ही कर देते है।''

## 185. गुरूजी ने कहा कि मैच का फैसला तो पहले से ही हो चुका है।

गुरूजी क्रिकेट के शौकीन थे। वे कभी-कभी टी.वी. पर मैच देख लेते थे। अक़्सर सीताराम जी, एस.के.जैन साहब तथा कुछ अन्य शिष्यों के साथ टी.वी. पर मैच देखने का आनन्द लेते थे।

संयोग से एक दिन टी.वी. पर टेनिस का मैच आ रहा था और गुरूजी के साथ मैं भी बैठा, देख रहा था। एक टेनिस का खिलाड़ी होने के नाते, मैं उस मैच में बहुत मज़े ले रहा था और सोच रहा था कि गुरूजी भी इस खेल में आनन्द ले रहे होंगे।
जब वह मैच अपने अन्तिम चरण तक पहुँच गया तो मैंने गुरूजी को एक खिलाड़ी की तरफ इशारा करते हुए कहा, "गुरूजी ये खिलाड़ी अब मैच जीत जायेगा....!!" गुरूजी बोले--- "नहीं बेटा, ....मैच वो दूसरा खिलाड़ी जीतेगा।"

मैंने गुरूजी की बात को ज़रा हल्के से लिया और अपना पक्ष रखते हुए बोला, "पर गुरूजी, उसे तो सिर्फ एक अंक ही चाहिए, वो तो एक मिनट में ही जीत जायेगा....!!" गुरूजी ने दुबारा कहा, "पर मैच तो दूसरे ने जीतना है, बेटा।"

मुझमें इतनी क्षमता नहीं थी कि मैं गुरूजी से इस पर और अधिक वार्तालाब कर सकूं। अतः मैं चुप हो गया। तभी उस खिलाड़ी ने वह अंक गवां दिया, जिससे मैं उसकी जीत की उम्मीद कर रहा था।

<u>आश्चर्य</u>-------
उस खिलाड़ी ने अपना दूसरा, तीसरा और चौथा अंक भी गवां दिया और आख़िर वह गेम हार गया। ऐसा मैंने सोचा भी नहीं था, लेकिन ये तो खेल था।

परन्तु आगे जो कुछ हुआ वो तो एक यादगार पल है। वह खिलाड़ी जो हार रहा था, अपना अगला गेम और फिर अन्तिम गेम जीत कर पूरा मैच जीत गया...!! जो किसी तरह से भी सम्भव नहीं लग रहा था....!!

<u>अविश्वस्नीय</u>
पहले वाला खिलाड़ी जो दो गेम जीतने के बाद सिर्फ एक अंक लेता और पूरा मैच जीत सकता था वो बेचारा एक अंक भी नहीं ले सका और सारी गेम दे बैठा। विश्वास नहीं होता कि हारने वाला उसके बाद चौथी और फिर पाँचवी गेम लेकर तीन दो के अनुपात से पूरा मैच जीत गया।

*बुद्धि का प्रयोग करुं तो विश्वास ही नहीं होता सिर्फ एक मिनट ही चाहिए था पर यह क्या और कैसे हुआ, जब कोई जवाब नहीं मिलता तो मैं गुरूजी की तरफ देखता हूँ...!! और उनके शब्द.... कि वो नहीं, दूसरा जीतेगा क्योंकि जीत हार का निर्णय हम पहले से ही तय कर चुके हैं राज्जे...।*

*इसमें कोई शंका नहीं, कि वह मैच 'गिनीज़ बुक ऑफ वल्ड रिकार्डज़' में दर्ज होने लायक था। हाँ, लेकिन गुरूजी ने इसकी पूर्व घोषणा कर दी थी जिसे मेरे अलावा और कोई नहीं जानता। जो खिलाड़ी जीत रहा था उसे हारने वाले ने हरा दिया और सारे संसार ने इसे टी.वी. पर देखा। परन्तु गुरूजी इसका परिणाम जानते थे और इसका अन्दाज़ा ना तो मैच व्यवस्थापक* (Organiser) *और ना ही दर्शकों को ही था।*

*इस अद्भुत मैच का परिणाम देखते हुए, मेरे पास कोई और शब्द नहीं, सिवाय गुरूजी की निम्न लिखित पंक्तियों के--*

***"बेटा, जीत-हार का फैसला तो हम, मैच शुरु होने से पहले ही कर देते है।" गुरूजी भविष्य के सम्पूर्ण ज्ञाता हैं, ...जैसा भगवान। वह ही जानते हैं कि अगले क्षण क्या होने वाला है।***

*सिर्फ और सिर्फ भगवान् ही हैं*
*जो ऐसा जान सकते हैं।*

आधी रात के समय किसी ने मुझको दो-तीन बार थप्पड़ मारा, लेकिन मैं वहाँ किसी को देख नहीं सका। मैं डर गया था और डर के मारे कमरे से बाहर भागा।

## 186. आधी रात, गुरूजी का बेडरुम पंजाबी बाग में इन्दु प्रकाश के चेहरे पर थप्पड़।

चारु को संगीत सिखाने वाला अध्यापक, इन्दु प्रकाश यहाँ अक़्सर आया करता था। एक दिन अभ्यास कराते समय उसे देर हो गयी और वो रात को पंजाबी बाग ही रुक गया। ऊपर गुरूजी के कमरे में फर्श पर गद्दा और बिछौना लगा दिया गया और वो वहीं सो गया।

सुबह जब मैं उठकर बाहर गया तो देखा कि वह ड्राईंग रुम के सोफे पर लेटा हुआ था। वह मुझे देखकर उठ गया और मुझे नमस्ते (Good Morning) कहा। विस्मय से मैंने उससे पूछा कि वह ड्राईंग रुम में क्यों सो रहा है तो उसने कुछ चौंकाने वाली बात बताई।
कहने लगा, “मैं गुरूजी के कक्ष में सो रहा था। आधी रात के समय किसी ने मुझको दो-तीन बार थप्पड़ मारा, लेकिन मैंने वहाँ किसी को देखा नहीं। मैं डर गया और कमरे से बाहर भागा। मैं तो घर जाना चाहता था, लेकिन बाहरी फाटक बन्द था। अतः मैं घर तो नहीं जा सका पर ड्राईंग रुम में आकर सोफे पर बाकी की आधी रात गुज़ारी।” ताकि सुबह हो और गेट खुलने पर घर जा सकूं।

पंजाबी बाग स्थान में ऊपरी मंजिल पर गुरूजी का कमरा है। यह वो कक्ष है जहाँ 1991 में गुरूजी स-शरीर विराजमान थे। गुरु-पूर्णिमा के दिनों में हजूर साहिब ने शरीर का तो त्याग कर दिया पर अदृश्य रुप में वहाँ आज भी विराजमान हैं। उनको प्रणाम करने, धूप जलाने के लिए या उनको चाय पिलाने के लिए गुरूजी का शिष्य अथवा परिवार का कोई सदस्य प्रतिदिन जाता है। कोई गुरुभक्त भी कुछ ख़ास प्रार्थना हेतु वहाँ जा सकता है। इस कक्ष का प्रबन्ध गुरूजी के कुछ ख़ास बच्चों के नियंत्रण में है। जिनमें प्रमुख हैं सुखवंत सिंह, तिवारी और नीलमा। नीलमा अनूप ऑबराय की धर्मपत्नी है।

यह कक्ष विशेष पूजा का स्थान है। परिवार के सदस्यों के अलावा वहाँ कोई प्रवेश नहीं करता और वो भी यदि कुछ प्रार्थना आवश्यक है तो। कोई भी इसे लापरवाही से नहीं ले

सकता और शायद ही वहाँ कोई सोता हो, जब तक गुरूजी के शिष्य या कुछ प्रमुख परिवार के सदस्य के द्वारा अनुमति न हो।

कोई वरदान पाने के इच्छुक भक्तजन, उनके चरण-कमलों में माथा टेकना चाहते हैं उन्हें उनके कक्ष में जाने और बिस्तर पर पैरों की तरफ माथा टेकने की अनुमति दी जाती है। शांति या कुछ आध्यात्मिक कारणों के लिए, वे शिष्य से अनुमति की प्रार्थना कर सकते हैं लेकिन केवल दिन के समय में, जब तक सेवा जारी रहती है।

उपरोक्त कथन से स्पष्ट है कि---

**गुरूजी रात्रि के समय अपना कमरा किसी दूसरे के साथ बाँटना पसंद नहीं करते हैं। ...मालिक हैं जिसे चाहेंगे वो तो सो सकता है, अन्यथा दूसरा कोई नहीं**---

हालाँकि इस बात के सबूत हैं कि कुछ लोगों को विशेष रुप से उनके कमरे की सफाई करने की अनुमति मिल जाती है और कुछ लोगों को वहाँ फर्श पर रात बिताने की अनुमति मिल जाती है और उनकी इच्छाऐं पूर्ण हो जाती हैं। जैसे कि मुम्बई के एक जोड़े को पुन्चू बिटिया ने आदेश दिया था कि वह 21 दिन गुरूजी के कमरे में सोये...! परिणाम अद्‌भुत था। शादी के कई साल बाद उन्हें बच्चे की प्राप्ति हो गयी।

वह जोड़ा मुम्बई स्थान पर नियमित रुप से आता है जहाँ गुरूशिष्य सन्नी और उसकी पत्नी पुन्चू सेवा करते हैं। तो इन्दु प्रकाश को रात को थप्पड़ पड़ने का भेद खुल सा गया। हमने स्पष्ट जान लिया कि गुरूजी अपने कक्ष में विराजमान रहते हैं यह भी स्पष्ट हो गया कि बिना उनकी आज्ञा के वहाँ रात बिताने की अनुमति नहीं। यह काफ़ी ध्यान देने वाली बात है।

*"हुन तू मेरे अग्गों लंगेंगी.......?"*
*लौटने पर वह कुर्सी के पीछे से चली गयी और कमरे से बाहर आयी तो उसे अहसास हो गया कि ....ओह---गुरूजी तो कुर्सी पर बैठे थे।*

## ***187. नीलमा गुरूजी के बिस्तर की साईड टेबल पर रोज़ाना एक गिलास पानी रखा करती थी।***

*जब गुरूजी पंजाबी बाग में थे तो नीलमा प्रतिदिन उनके बैड के साईड टेबल पर एक गिलास पानी रखा करती थी। यह कार्यक्रम गुरूजी के शरीर छोड़ने के उपरान्त भी जारी रहा और नीलमा उसी तरह रोज़ाना पानी का गिलास उसी जगह पर रखती चली आ रही थी।*

*गुरूजी को शरीर छोड़े करीब़ तीन महीने हो चुके थे। उनके बैड के पास एक रॉकिंग चेयर रखी रहती थी, जो आज भी वहीं पर मौजूद है।*
*कभी-कभी गुरूजी उस पर बैठा करते थे। नीलमा ने पानी का गिलास लिया और कुर्सी के पीछे से होती हुई गिलास उनके बैड साईड़ टेबल पर रख दिया। लेकिन वापसी पर कुर्सी के आगे से होकर जैसे ही निकली तो गुरूजी ने आवाज़ दी, "ते हुन, तूं मेरे अग्गों लंगेंगी...?-- सुनकर उसे थोड़ी शर्म आई और सुनी अनसुनी करके जल्दी-जल्दी कमरे से बाहर आ गयी। बाहर आते ही उसे अहसास हुआ कि अरे --गुरूजी तो कुर्सी पर बैठे थे...!!*

*वह एक दम मुड़ी और बड़े उत्साह के साथ कमरे में दुबारा दाखिल हुई। सोचा ...कि यह तो कमाल हो गया, दर्शन होंगे। पर अफ़सोस--- कुर्सी तो हिल रही थी परन्तु गुरूजी आँखों से नज़र नही आ रहे थे। पहली बार जब आयी तो वहाँ बैठे थे पर अब नहीं थे।*

***यह क्या है गुरूजी.....!!***
***आप आज भी शरीर के साथ रहते है, लेकिन कुछ चुने हुए लोगों को ही दर्शन करने की अनुमति देते हैं।***

*नीलमा शायद उन भाग्यशाली बच्चों में से एक है।*

*मेरी और हम सबकी प्रार्थना है कि*

*...ऐसा सौभाग्य हमें भी प्राप्त हो साहेब जी!!*

गुरूजी ने कहा, “ठीक है...! आपको दो दिनों के बाद मिलेगें और ठीक दो दिनों के बाद मैं क्रीम बिस्कुट खा रहा हूँ।

## 188. मुम्बई के श्रीकृष्णा ने ---क्रीम बिस्कुट खरीदे।

श्रीकृष्णा मुम्बई के एक स्थान पर सेवा करता है और गुरूजी को निरपेक्ष रुप से समर्पित है। कुछ सालों पहले, गुरूजी ने गुड़गाँव स्थान पर ही गुड़गाँव की एक और भक्त कन्या कमलेश के साथ उसकी शादी कर दी थी। शादी के बाद वे मुम्बई में रह रहे है और दो होनहार बेटों के साथ खुश हैं।

जब पहले बेटे का जन्म हुआ था और श्रीकृष्ण उसे गुड़गाँव लाया तो गुरूजी बहुत खुश हुए और बच्चे को गोद में बिठा लिया। मुझे याद है, गुरूजी ने लड़के को देखा और उसे “मराठा” नाम (महाराष्ट्र का पारम्परिक नाम) से संबोधित किया। तब से, मैं उसे ‘मराठा’ के नाम से ही पुकारता हूँ ....हालाँकि वह अब बड़ा हो गया है और अपने नियमित जीवन में उमेश के नाम से प्रसिद्ध है। श्रीकृष्णा की तरह ‘मराठा’ भी गुरूजी का एक असाधारण प्रेमी और भक्त है।

वर्ष 2007 की बात है।
एक दिन रात का समय था। खाने के बाद श्रीकृष्णा अपने बिस्तर पर बैठा था और सोने की तैयारी कर रहा था कि अचानक वह उठा और घर से बाहर निकल गया। उसे नहीं मालूम कि वह कहाँ जा रहा था। वह एक अनजान गन्तव्य स्थान की तरफ खिंचा चला जा रहा था। वह अपने आपे में नहीं था और एक अनजान दिशा की ओर बढ़ रहा था। ऐसा लग रहा था कि जैसे कोई अदृश्य शक्ति उसे नियंत्रित कर रही हो।

वह चलता गया और फिर एक ब्रैड-बिस्कुट की दुकान पर पहुँच गया। उसने ₹130/- मूल्य के क्रीम बिस्कुट ख़रीदे और अपने घर लौट आया। बिस्कुट टेबल पर रखने के बाद वह सो गया। सुबह उसकी पत्नी ने इस तरह की थोक खरीद के बारे में पूछा। क्योंकि उनके परिवार में कोई ऐसा नहीं था जो क्रीम बिस्कुट का शौकीन हो। श्रीकृष्णा ने उत्तर दिया कि वास्तव में ही उसे याद नहीं कि उसने इस तरह के कोई बिस्कुट खरीदे हैं। किसी तरह यह चर्चा थोड़ी बहस के बाद समाप्त हो गई।

शाम को श्रीकृष्णा का बेटा ‘मराठा’ श्रीकृष्णा के पास आया और पूछने लगा, “पिताजी, .. .किसी ने आपको कहा था क्रीम बिस्कुट खरीदने के लिए...?” अब श्रीकृष्णा आक्रमक हो गये। ‘मराठा’ ने कहा कि उसकी पूछताछ का एक ठोस कारण है। उसने बताया कि दो

*दिन पहले रात में उसने एक शानदार सपना देखा था जब गुरूजी आए और उसे आशीर्वाद दिया। तब उसने एक बच्चे के तरह कहा था, "गुरूजी, मैं क्रीम बिस्कुट खाना चाहता हूँ।*

***गुरूजी ने कहा, "ठीक है...! तुम्हें दो दिनों के बाद मिल जायेंगे ...और आज ठीक दो दिनों के बाद मैं क्रीम बिस्कुट खा रहा हूँ।***

*मैं सिर्फ आश्वस्त होना चाहता हूँ कि क्या गुरूजी ने आपको आदेश दिया था या फिर आप इन्हें अपनी मर्जी से लाये हो।*

*श्रीकृष्णा स्तब्ध रह गया। क्योंकि एक अदृश्य शक्ति जिसने कल रात को उसे बिस्तर से उठाया और क्रीम बिस्कुट की दुकान पर पहुँचने के लिए बाध्य किया था। जब तक 'मराठा' ने श्रीकृष्णा को नहीं बताया तब तक श्रीकृष्णा को इस सच्चाई का पता नहीं था कि वह अदृश्य शक्ति जिस पर वह संचालित था और उसे बिस्कुट की दुकान तक घसीटा था, वे स्वम् "गुरूजी" ही थे।*

*अतुल्यनीय......!*

***गुरूजी अपने बच्चों की माँगों को***

***अद्वितीय तरीके से पूरा करते है।***

*अकल्पनीय दिव्य मास्टर!*
*सर्वज्ञ एवम् सम्पूर्ण गुरूदेव,*

*आपको प्रणाम जी*

हम प्रार्थना के लिए या अपनी किसी इच्छा पूर्ति के लिए उनके कमरे में जाते हैं। क्यूंकि वे आत्मिक रुप में हैं और इसलिए खुली आँखों से उन्हें देखा नहीं जा सकता।

## 189. जब गुरूजी ने 1991 में 'मोक्ष' पद प्राप्त कर लिया।

अपनी दुर्लभ ईश्वरीय यात्रा से पहले गुरूजी पंजाबी बाग स्थान की ऊपरी मंजिल पर अपने जिस कमरे में विराजमान होते थे वो कमरा आज भी उसी तरह से सजा हुआ है और उनके शिष्यों को या फिर उनके चुने हुए भक्तों को ही अंदर जाने की आज्ञा होती है।

हम प्रार्थना के लिए या अपनी किसी इच्छा पूर्ति के लिए उनके कमरे में जाते हैं। क्यूंकि वे आत्मिक रुप में हैं। इसलिए साधारण दृष्टि और खुली आँखों से उन्हें देखा नहीं जा सकता। लेकिन उनके शिष्यों को आन्तरिक ज्ञान है कि वे वहाँ पर और ख़ासतौर पर उस कमरे में हमेशा विराजमान रहते हैं। इसलिए उन्हें हर सुबह चाय प्रस्तुत की जाती है ठीक वैसे ही जैसे पहले की जाती थी, जब वे शरीर में थे। हम उनसे अपनी बातें कहते हैं और अपने भाव व्यक्त करते हैं, इस विश्वास के साथ कि गुरूजी वहाँ हैं, वे हमें सुन रहे हैं और देख रहे हैं।

उनकी एक अनन्य भक्त है जिसका नाम है नीलमा। वह हर रोज़ चाय का प्याला लेकर उनके कमरे में उन्हें पिलाने जाती है। एक दिन सुबह 9 बजे के करीब वह चाय का प्याला हाथ में लेकर उनके कमरे में पहुँची, तो सुखवंत सिंह का एक मिस्त्री कुछ बिजली का काम कर रहा था। नीलमा ने उससे कहा कि वह थोड़ी देर के लिए बाहर चला जाए, उसने गुरूजी को चाय पिलानी है। थोड़ी देर के बाद वह आकर दुबारा काम कर सकता है।

कुछ समय बाद जब वह चाय का प्याला हाथ में लिए लौटी और मिस्त्री के सामने से गुज़री तो हँसते हुए उसने मज़ाक से पूछा, **"...चा पी लई ने..?"**

उसका लहज़ा टिचकर से भरा (ताना मारने का व्यंगपूर्ण अंदाज) और भावना को ठेस पहुँचाने वाला था। एक ख़ास गुरुभक्त होने के नाते, नीलमा को इतना दुख हुआ कि उसके आँसू निकल आये। उसे लगा कि जैसे वह उसकी गुरुभक्ति को चुनौती दे रहा हो।

इस प्याले की चाय को बाकी की चाय में मिला दिया जाता है और प्रसाद के रुप में चाय सब भक्तजनों में वितरित की जाती है जो बड़ी उत्सुकता से इस भोग की प्रतीक्षा करते हैं।

कोई दस मिनट बीते होंगे कि गुरूजी के कमरे में से कुछ भारी चीज़ गिरने कि आवाज़ आयी। आवाज़ सुनकर नीलमा भागी और देखा कि सरदारजी नीचे फर्श पर गिरे हैं और दर्द से कराह रहे हैं। शायद छत पर काम करते समय स्टूल से गिरे होंगे।

उनकी कमर में चोट आयी और दर्द इतनी थी कि उठ नहीं सकते थे। दो-तीन लोगों की सहायता से उन्हें नीचे लाया गया और घर भेज दिया और काम रुक गया। सुखवंत सिंह ने बाद में बताया कि पांच-छः महीने तक वह काम पर नहीं आ सका। उसके बाद से आज तक वह गुरूजी के कमरे में कभी नहीं गया।

अनुमान लगाने की इजाज़त होती है सबको, उसी के आधार पर मेरे विचार से किसी ईश्वरीय शक्ति ने जो हर समय गुरूजी के कमरे रहती हैं, उसे सजा के तौर पर नीचे गिराया होगा। नीलमा के आँसू और उसके दिल का दर्द देख लिया होगा, उसी ईश्वरीय शक्ति ने। लेकिन मैं पूरे यकीन के साथ तब तक कोई टिप्पणी नहीं कर सकता जब तक गुरूजी की तरफ से मुझे पूरे विवरण का सीधा सन्देश नहीं आ जाता।

साथ ही, अगर मेरा अनुमान ठीक है तो दो बातें सिद्ध होती हैं :

1. बिना किसी संशय के गुरूजी हर समय वहाँ विराजमान होते हैं ..
2. किसी को ऐसा कोई शब्द उच्चारण नहीं करना चाहिए जिससे उनके किसी भक्त का विश्वास डोल जाए, क्यूंकि वे गुरूजी को अत्याधिक प्रिय हैं।

ऐ--मेरे मालिक,

मेरे हज़ारों दंडवत प्रणाम स्वीकार कीजिये और

हम सब पर अपनी असीम कृपा बनाए रखिये।

गुरूजी आये, उसे जगाया और सीधे बैठने का आदेश दिया। तब, उन्होंने उसका हाथ पकड़ा और खींच कर उसकी पीठ तक ले जाकर ऊपर उठाया और गर्दन की ओर ले गए और.....

....और-- कर दी अपनी कृपा।

## 190. गुरूजी ने आधी रात को अपने शिष्य को दर्शन दिये और उसका जुड़ा हुआ कन्धा खोल दिया।

बात तब की है जब गुरूजी शरीर छोड़कर मोक्ष पद प्राप्त कर चुके थे।

गुरूजी के एक शिष्य का कन्धा जुड़ चुका था। उससे एक भूल हो गई थी जिसका बाद में एहसास भी हो गया लेकिन अपनी बाजू हिलाने पर उसे दर्द होती थी। ऊपर तो कर ही नहीं सकता था।

बहुत सारी मरहम, गर्मी पहुँचाने वाले बिजली के यंत्र इत्यादि सभी का खूब प्रयोग करने के पश्चात् भी कोई लाभ नहीं हुआ। दर्द और कष्ट के साथ कई महीने बीत गए। अब तो सौ ग्राम वज़न उठाना भी कठिन हो गया। अपनी बाजू को चंद इंच हिलाने पर भी असहनीय दर्द होता था। यहाँ तक कि स्थान पर सेवा करते समय लोगों को आशीर्वाद देने के लिए दांये हाथ को उठाने के लिए अपने बांये हाथ का सहारा लेना पड़ता था।

बात कुछ फैल गयी और भक्तजनों को पता तो चल गया मगर पूछने से घबराते थे सब... कारण यह कि शिष्य अपनी तकलीफ़ भक्तजनों से छिपा कर रखें और शांत रहें, ऐसा गुरूजी का आदेश है। मगर कुछ गुरुभक्त रुक नहीं पाए। टिंगु, मिंगु और उनकी बहन इन्दु ने मजबूर किया और अपने साथ एक्सरे करवाने के लिए गंगाराम अस्पताल ले गए और हड्डियों के सबसे बड़े डॉक्टर अनिरुद्ध से उसकी जाँच कराई।

डॉक्टर अनिरुद्ध ने बड़ी ईमानदारी से बताया कि कन्धा जुड़ चुका है इसलिए बाजू का हिलना असंभव है। उसने दर्द सहन करने हेतु कुछ दवाऐं लिख दीं और अपने आप को असमर्थ बता दिया कि जुड़े हुए कंधे का कोई इलाज नहीं है। बाकी का जीवन अब ऐसे ही बिताना होगा।

तत्पश्चात्, वे लोग उसे विलिंग्डन अस्पताल के सबसे बडे डॉक्टर कोछड़ के पास ले गए। गुरूजी का भक्त होने के कारण उसने ख़ासतौर पर, अपने घर पर उसकी पूरी जाँच की। एक घंटे की पूरी जाँच के बाद उसने अपना फैसला सुनाया और कहा कि यह कन्धा अब पूरी तरह से जाम हो चुका है, अतः बाकी का सारा जीवन बाजू हिलाई नहीं जा सकेगी---सो, जाँच बिना किसी समाधान के समाप्त हो गयी।

कुछ महीने बीते और कंधे की बात माताजी के पास पहुँच गयी।

एक बार जब वह शिष्य माताजी के कमरे में बैठा हुआ था कि उन्होंने एकदम अपना हाथ उठाया और उसके कंधे की ओर ले जाकर, क्रोध में बोलीं, "वे, दिखा मुझे...! कहाँ है दर्द तेरे कंधे में...?" शिष्य, फुर्ती से एक तरफ हट गया और कहने लगा, "ना ...मातारानी, हाथ नहीं लगाना ...वैसे ही ठीक कर दो। क्यूंकि, आपने दर्द अपने कंधे में ले लेनी है, इसलिए दूर से ही कह दो, यह अपने आप ठीक हो जाएगी।"

...और इस तरह दर्द के साथ कुछ और समय बीत गया और फिर संसार का सबसे बड़ा दिन, 'गुरु-पूर्णिमा' आ गई।

तकरीबन सारे शिष्य एक सप्ताह के लिए गुडगाँव स्थान पर दिन और रात रहते हैं। अन्य शिष्यों के साथ-साथ वह भी गुडगाँव स्थान पर था। फिर एक दिन आधी रात के समय जब वह स्थान के सामने वाले कमरे में सो रहा था तो एक ऐसी घटना घटी, जिसका वृतान्त पहले कभी नहीं सुना...

मध्य रात्रि में 'गुरु पहर' का यह वृत्तान्त काफी लम्बा और पूर्णतया अध्यात्मिक है।

रात्रि के करीब दो बजे थे। गुरुजी आये, उसे जगाया और सीधे बैठने का आदेश दिया। फिर उन्होंने उसका हाथ पकड़ा और खींच कर उसकी पीठ तक ले जाकर ऊपर उठाया और गर्दन की ओर ले गए और --

......और-- कर दी अपनी कृपा।

साथ ही एक आदेश दिया, "सुबह उठने के बाद विभूति लेकर कंधे पर लगा लेना।"

सुबह उठकर शिष्य मातारानी के पास गया और रात का पूरा वृत्तान्त सुना दिया---माताजी बड़े खुश हुए और कहा, "विभूति यहीं से ले ले बेटा और यहीं लगा ले।" गुरुजी के बेड के सिरहाने एक ट्रे में रोज़ धूप जलाई जाती है अतः उसने वहीं से विभूति उठाई और मातारानी के सामने ही अपने कंधे पर लगा ली।

'गुरु-पूर्णिमा' का पर्व मनाया जा रहा था। रात्रि के समय वह रसोई के साथ वाले कमरे में गया, जहाँ और लोग भी नीचे दरी पर बैठे हुए थे। वहाँ पर रखी एक सेट्टी पर बैठने को उसका मन हुआ। अब हुआ यह कि बैठने से पहले उसे सीट पर एक तिनका नज़र आया। उसने सहज़ ही उसे हटाने के लिए अपने हाथ के उलटे हिस्से से झाड़ दिया। ऐसा करते ही इतनी तेज़ दर्द हुई कि वह चीख़ उठा। ...हे भगवान...!!! इसे असह्य कहना गलत होगा-- यह तो उससे भी अधिक दर्द थी। उसे समझ नहीं आया कि हुआ क्या है...!! इतने हलके से हाथ घुमाने पर इतना दर्द...!!

उसने सोचा कि एक बार फिर करके देखते हैं। और अब की बार भी वैसा ही दर्द हुआ। आश्चर्य की बात तो यह हुई कि उसने बार-बार ऐसा किया और हर बार दर्द हुआ मगर अब वह चीख़ नहीं रहा था बल्कि उसका आनन्द ले रहा था।

आमतौर पर ऐसा देखा गया है कि अगर कुछ करने पर किसी को पीड़ा होती है तो वह अपने आप को वैसा करने से रोकता है। उसका बचाव करता है। पर वह शिष्य तो आनन्द ले रहा था। बड़ी ही अजीब सी बात है यह, क्यूंकि दर्द तो कभी भी किसी को अच्छी नहीं लगती। तो फिर यह क्या हो रहा था...?

वाह .....गुरूजी ....वाह !!

पहली बार देखने को मिला कि दर्द से भी कोई आनन्दित होता है। यह एक अनोख़ी रचना थी गुरू महाराज की।

वह कंधे की दर्द और वह जुड़ा हुआ कन्धा --सब का सब वहीं एक मिनट में समाप्त हो गया।

----अविश्वस्नीय

* सेट्टी पर तिनके का होना -- एक रहस्य।

* उसी दर्द वाले हाथ के ऊपरी भाग से तिनके को हटाना, --समझ से परे की बात हैं।।

* हलके से एक तिनका हटाने पर इतना दर्द...? --असम्भव- हो ही नहीं सकती... !!!

* दर्द हो, इस लिए दोबारा वही प्रयत्न करना...?
--फिर असंभव--कोई भी सही दिमाग वाला
ऐसा कभी नहीं करेगा।

असली बात तो यह है कि छोटे-छोटे भागों में वितरित यह सब कुछ गुरूजी कि कोई रचना थी।

पाठक, यदि अध्यात्म की मंजिल पाना चाहता है तो इसे ध्यान से समझे कि...

* गुरूजी का आधी रात को आना

* शिष्य का हाथ पकड़ कर पीछे ले जाकर उसकी
गर्दन तक पहुँचाना -

* कंधे पर सुबह को विभूति लगाना -

* तिनके को हटाने के प्रयत्न पर इतनी सारी पीड़ा।

---सारी की सारी गुरूजी की ही रचना थी---बस।

....खैर दर्द और समस्या दोनों हमेशा के लिए समाप्त।

...जी गुरूजी,

आप ही आप हो ----

वह आश्वस्त नहीं हो सकी और अधिकार-पूर्ण रुप से पूछने लगी कि वह मुझसे क्यों नहीं मिल सकती...?

## 191. एक अस्सी साल की बूढ़ी औरत जो पंजाबी बाग स्थान पर नियमित रुप से आती थी।

अस्सी वर्ष की, सुन्दर दिल वाली एक आकर्षक महिला जो राजौरी गार्डन में रहती थी और जिसे सब लोग प्यार से राजौरी गार्डन वाली माता के नाम से सम्बोधित करते थे, कुछ ख़ास बातों के कारण प्रसिद्ध थी, जैसेः -

* गुरुजी के प्रति अपार भक्ति और मेरे लिए अत्याधिक प्रेम--
* कभी लाईन में अपनी बारी की प्रतीक्षा न करना और सीधा मेरे पास चले आना--
* हर बार अपनी सेहत के खराब होने की शिकायत करना--
* एक दो लोगों की सहायता से मुरझाये हुए चेहरे के साथ, धीमे-धीमे चलकर मेरे पास आना--
* मुझसे मिलने के बाद खिले हुए चेहरे के साथ, एक आश्चर्यजनक स्फूर्ति और बिना किसी सहारे के हंसते हुए वापिस जाना--
* जब भी मिलना, मुझसे अपने घर आने का वचन लेना--
* मेरे सिर पर 50 या 100 रुपये का नोट घुमाकर पास ख़डे किसी व्यक्ति को दे देना--
* हर बार मुझसे एक गिलास जूठा जल लेकर पीना--
* मेरा हाथ अपने हाथों में लेकर चूमना--
* मेरे कमरे में टंगी मेरी पत्नी गुलशन की तस्वीर को प्रणाम करना--
* मेरे कमरे में गुरुजी के चरणों की तस्वीर को माथा छूकर प्रणाम करना--
* जब भी आना मुझसे अवश्य मिलना चाहे मैं स्थान पर हूँ अथवा अपने कमरे में विश्राम कर रहा हूँ इत्यादि-इत्यादि।

एक दिन एक ख़ास घटना घटीः -
हुआ यूं कि मैंने सब सेवादारों को निर्देश दिया कि मैं अपने कमरे में हूँ और मुझे किसी से मिलना नहीं है, उपरोक्त निर्देश मैंने गुरुजी के आदेशानुसार ही दिया था। तभी वो महिला आई और मिलने के लिए सन्देश भेजा। सेवादारों ने मना कर दिया लेकिन वो

जिद्द करके बैठ गई। मैंने दुबारा मना किया तो उसने कहा कि जब तक मुझसे मिल नहीं लेगी वह स्थान पर ही बैठी रहेगी।

यह सुनकर मैं बाहर गया और उसे समझाने का प्रयत्न में कहा कि अनुशासन सभी के लिए आवश्यक होता है इसलिए सभी को इसका पालन करना चाहिए। लेकिन वो नहीं मानी और जिद्द करने लगी और अधिकारपूर्ण अंदाज के साथ पूछने लगी कि क्यों नहीं मिलूंगा मैं उसे। उसके इस रवैय्ये को देखकर मैंने उसे डाँट लगा दी और अपने कमरे में वापिस आ गया।

अगले दिन शाम को वो फिर आई तो मैंने उसे अंदर बुला लिया और सोचा कि आज ज़रा नरमी से पेश आना चाहिए। वो आई तो उदास सी लग रही थी, आते ही पंजाबी लहज़े में कहने लगी, "कल तुसी मैंनूं डाँट लगाई सी ते मैं सारी रात रोंदीं रई आं" फिर एकदम उसका अन्दाज़ बदला और वो मुस्कुराने लगी, कहने लगी, "रात नूं गुरूजी ने दर्शन दित्ते सी और मैंनूं डाँट लगा के कैन लगे कि तू मेरे पुत्तर नूं तंग करनी ऐं, ओनूं परेशान ना कराया कर। मैं आख्या, गुरूजी ओ मैंनूं झिड़कदे बहुत नें। गुरूजी कैन लगे, फेर की होया झिड़कदे ने ते...!" कहकर वो हंसने लगी और आनन्द विभोर हो गयी।

***यह घटना कोई सांसारिक नहीं दिखती, एक साधारण सी महिला, कितनी नज़दीक है दुनिया के सबसे बड़े गुरूजी के साथ, आत्मिक दर्शन देकर उसे डाँट लगाना और अछूता ज्ञान देना***--

वाह--

* क्या सादगी है उस महिला की और उसकी गुरूभक्ति की--
* ---और क्या कृपा है गुरूजी की उसपर कि रात को
  जगाकर उसे यह बताना कि उनके शिष्य को परेशान ना किया करे--

यह कोई आम उद्हारण नहीं लगता--

इतना ख़ास है कि मन धरती पर टिकता ही नहीं।

***...गुरूजी, आपको और आपके भक्तों को सराहने के लिए शब्द नहीं मिल रहे-- ऐसे भक्त संसारी लोगों को नींद से जगाने के लिए रौशनी का काम करते हैं।***

प्रणाम साहिब जी--

*“.....मैं हूँ यहाँ का चौकीदार , तुम मुझे अपनी समस्या बता सकते हो।”*

## 192. एक व्यक्ति पंजाबी बाग स्थान पर आया और उसने वहाँ के चौकीदार के बारे में पूछा।

शाम का समय था, सामान्य रुप से स्थान पर लोग आ-जा रहे थे। दूसरे शिष्य जैसे जैन साहब और महाराज किशन सेवा कर रहे थे, जबकि मैं सेवा समाप्त कर, अपने कमरे में आराम कर रहा था।

इसी बीच तिवारी, जो वरिष्ठ प्रबन्धन से सम्बन्धित है, आया और मुझसे कहने लगा कि बाहर कोई व्यक्ति चौकीदार के लिए पूछ रहा है लेकिन वह इसका कारण नहीं बता रहा। मैंने उससे मिलने का सोचा और उससे चौकीदार से मिलने का कारण पूछने के लिए बाहर आया। असल में उन दिनों स्थान पर कोई चौकीदार नहीं था।

उसने कहा कि वह नीलकण्ठधाम गया था तथा उसने समाधि पर माथा टेका और अपनी इच्छा पूरी करने हेतु प्रार्थना की। अचानक उसने गुरूजी की आवाज़ सुनी, जिसमें उन्होंने उसे पंजाबी बाग स्थान के चौकीदार से सम्पर्क करने का निर्देश दिया और कहा कि तुम्हारा काम वह कर देगा।

मैंने तुरन्त जवाब दिया, “मैं ही यहाँ का चौकीदार हूँ, तुम मुझे अपनी समस्या बता सकते हो।” यह सुनकर वह दंग रह गया और उसने मुझे प्रणाम किया और कहा, “मेरी एक घर खरीदने की इच्छा है जिसके लिए मैंने कुछ धन भी एकत्र किया है लेकिन उसमें दस हज़ार रुपये कम हैं जिसकी व्यवस्था करने में मैं असमर्थ हूँ अतः यह सौदा मेरे हाथ से निकलता दिख रहा है इसलिए मैं नीलकण्ठधाम चला गया और गुरूजी से सहायता की प्रार्थना की।”

मैंने सेवादारों को बुलाया और उन्हें निर्देशित किया कि वे सभी मिलकर पैसे एकत्र करें और जितने कम पड़ें वो मुझसे ले लें। उसका काम हो गया उसने वह घर ले लिया जो वह चाहता था।

सरल और विश्वास पूर्ण हृदय वाले लोगों की कमियों को,
जिस साधारणता से गुरूजी दूर करते हैं,
देखकर मन प्रफुल्लित हो उठता है।

गुरुजी ने कहा, चल आज मैं तेरे को तेरे से ही ठीक कराता हूँ।

## 193. गुरुजी के साथ
## भानू का व्यक्तिगत अनुभव।

12 साल का भानू, जो जैन साहब (दिल्ली के डी.एस. जैन) का बेटा है। गुरुजी के शिष्य होने के नाते, जैन साहब अपने साथ अपने बच्चों को, आशीर्वाद और सेवा भक्ति के लिए अक़्सर ले जाते थे। साधारणतयाः शिष्यों के बच्चे स्वतन्त्र रुप से गुरुजी के कमरे में चले जाते और गुरुजी को दिव्य तरीकों से, आये हुए भक्तजनों की तकलीफों को दूर करते हुए देखा करते थे। बाकी समय में, वे शिष्यों के बच्चों के साथ आनन्द लिया करते थे।

ऐसे ही एक दिन जैन साहब भानू को लेकर गुड़गाँव पहुँचे। जब उन्हें दर्शन हुए, गुरुजी भानू को देखने लगे और बोले, "क्या बात है बेटा, परेशान क्यों है। उन्होंने कहा, "...इधर आ और मेरे पास आकर बिस्तर पर बैठ।" उसने तुरन्त आज्ञा का पालन किया। भानू ने उन्हें अपने पेटदर्द के बारे में बताया।

वे दयालु और उदार रुप में बैठे थे। उन्होंने बड़े प्यार से उसे देखा और कहा, "...चल आज मैं तेरे को तेरे से ही ठीक कराता हूँ।" उन्होंने उससे कहा कि अपना दाहिना हाथ अपने बांये हाथ के साथ एक विशेष स्थिति में रखे। फिर उसे करके दिखाया कि कैसे करना है। उसके बाद बोले, "अब जो पाठ मैंने तुझे दिया है, उसे मन में करना शुरु करो...?" भानू ने मन ही मन में मंत्र कर पाठ करना शुरु कर दिया और दो मिनट से भी कम समय में, वह बिलकुल सामान्य हो गया।

भानू कहने लगा किः --

उन्होंने इन्तजार नहीं किया कि उन्हें मैं बताऊँ कि दर्द गायब हो गया है। उन्होंने स्वयं ही कहा, "दर्द अब खत्म हो गया बेटा" मैंने जवाब दिया और कहा "हाँजी, खत्म हो गया है।" तब उन्होंने कहा, "तुमने गुड़गाँव के लिए निकलने से पहले दूध पिया था" मैंने दुबारा "हाँजी" कहा। तब वे बोले, "तुमने उसका रंग बदलने के लिए उसमें कुछ नहीं मिलाया था, तुमने सफेद दूध पिया था" मैंने फिर "हाँजी" कहा। वे बोले, "बेटा तूने आज के बाद सफेद दूध नहीं पीना। सब लोगों को नहीं पर तेरे को सफ़ेद दूध पीना मना है ...और कभी भी दर्द नहीं होगी।"

हमने अपने अद्वितीय कुछ घण्टे उनकी उपस्थिति में बिताये और फिर मेरे माता-पिता ने वापिस घर जाने की आज्ञा माँगी, उन्होंने मुझे बुलाया और कहा, "तू आज यहीं मेरे बिस्तर पर सो जा मेरे पास, कल सुबह चला जाईओ।"

वास्तव में मैं उस उम्र में स्कूल से छुट्टी लेने से डर गया था क्योंकि मेरे पिताजी इस मामले में बहुत सख़्त थे। मैंने गुरूजी से कहा, "गुरूजी, मैं तो रुक जाऊँगा, लेकिन अगर कल स्कूल नहीं गया तो पापा डाँटेंगे।" ...और गुरूजी ने कहा, अच्छा बेटा तुम उनके साथ वापिस जा सकते हो। उस नासमझ उम्र में मैं इसका अंदाजा नहीं लगा सका कि मेरे पिता गुरूजी के पास रुकने पर मुझे कभी मना नहीं करते और ना ही डाँटते। बल्कि वह तो बहुत रोमांचित होते।

बाद में समझ में आया कि सफ़ेद दूध पर प्रतिबन्ध हर एक पर नहीं लगता। यह सिर्फ मेरे ऊपर ही लगा और फिर मुझे अपने साथ सुलाना, इन दोनों बातों के बीच कोई सीधा सम्बन्ध अवश्य रहा होगा। अन्यथा गुरूजी किसी बच्चे को अपने साथ सुलाऐं, ऐसा कभी सुना नहीं था पहले।

**मैं गुरूजी से प्रार्थना करता हूँ, कि वे मुझे हमेशा अपनी गोद में रखें। वे अपनी गोद से कभी नीचे ना उतारें। यही गुरूजी की असीम कृपा है।**

...हे गुरूदेव।

कृप्या सभी पर अपने अनुग्रह और
आशीर्वादों की बौछार करते रहें।

गुरूजी कहेंगे, “बड़ा सेठ बना फिरता है, और बेटे के जन्मदिन पर इतनी सी बर्फी लाया है।”

## 194. गुरूजी ने जन्म दिन पर 40 लोगों में बर्फी के टुकड़े वितरित किये।
## : : गुरूजी का एक संदेश : :

भानू ने बताया, वो मेरा 9वाँ जन्मदिन था और उसे मनाने के लिए हम गुरूजी के पास गुडगाँव जा रहे थे। यह परिवार के किसी भी सदस्य के जन्मदिन के अवसर पर गुरूजी का आशीर्वाद लेने तथा मिठाई बाँटने की नियमित प्रथा थी। गुड़गाँव पहुँचकर हम एक मिठाई की दुकान पर रुके और मेरे पिताजी एक किलो मिल्क केक, जो उस समय की मशहूर मिठाई थी, ले आये। मिल्क केक के बड़े आकार के टुकड़े थे और वह एक किलो में करीब 18-20 टुकड़े ही आये।

जब हम स्थान पहुँचे तो गुरूजी अपने कमरे के बाहर स्टोर-रुम में करीब बीस-बाईस लोगों के साथ बैठे थे। जैसे ही हम पहुँचे तो उनके आशीर्वाद लेने से पहले मेरे पिताजी के मन में एक विचार आया (उस समय मैं छोटा था फिर भी मैंने यह महसूस किया) कि 20-22 लोग यहाँ पहले से बैठे हैं और हम भी तीन लोग हैं कुल मिलाकर हम सब 25 लोग होंगे और कुल 18 या 20 बर्फी के टुकडे ही हैं। तभी करीब 4-5 लोग और आ गये। गुरूजी आमतौर पर मेरे पिताजी को ‘धन्ना-सेठ’ के नाम से बुलाया करते थे। उन्होंने सोचा कि अब गुरूजी कहेंगे, “बड़ा सेठ बना फिरता है, और बेटे के जन्मदिन पे इतनी सी बर्फी लाया है।” ऐसा उन्होंने सोचा ही था, हुआ कुछ नहीं था। गुरूजी ने बड़े प्यार से मुझे आशीर्वाद दिया और मेरे पिताजी के हाथ से मिठाई का डिब्बा ले लिया। जो कुछ मेरे पिताजी के मन में चल रहा था, वह उन्होंने पहले ही देख लिया था। इस घटना के लिए शायद गुरूजी ने उसी दिन का समय चुना था कि मेरे पिताजी के दिमाग में तिलमात्र भी संदेह बाकी ना रह जाये कि उनका हर बात पर पूर्ण अधिकार है।

अब कुछ अद्‌भुत हुआ।
वहाँ लगभग 25-30 लोग थे, जो मेरे पिताजी ने गिने थे और बर्फी के टुकड़े 18-20 से ज़्यादा नहीं थे, यह भी उन्होंने देख लिये थे। जब गुरूजी ने मिल्क केक के टुकड़े बाँटने शुरु किये तो उन्होंने किसी भी टुकड़े के दो हिस्से नहीं किये और वहाँ पर उपस्थित हर किसी को पूरा टुकड़ा देते चले गये। कमरे में उपस्थित सभी लोगों को बाँटने के बाद उन्होंने स्थान के बाकी लोगों को बुलाया और कहा कि भानू का जन्मदिन है, सभी लोग आओ और मिठाई खाओ।

गुरूजी के पुकारने पर करीब 10-15 लोग जो स्थान पर उपस्थित थे या सेवा कर रहे थे आये और उन्होंने गुरूजी से बर्फी का प्रसाद लिया। सब मिलाकर करीब 40 या उससे भी अधिक लोगों ने उनसे बर्फी का प्रसाद लिया। सभी लोगों को मिठाई देने के बाद, डिब्बा उन्होंने मेरे पिताजी को वापिस दे दिया (जिसमें अभी भी तीन पीस बाकी बचे हुए थे) और कहा, "ले बेटा, ज्योति आज नहीं आई है, उसके लिए ले जा।" ज्योति मेरी बहन का नाम है जो उस दिन स्कूल के काम के कारण हमारे साथ नहीं आ पाई थी ...लेकिन गुरूजी को वह भी भूली नहीं। वे सबका ध्यान रखते हैं।

...खैर, बीस टुकड़े चालीस लोगों में बंट गए और इसके अलावा तीन टुकड़े बाकी भी बच गये। यहाँ गणित तो फेल है...! गणित विज्ञान का एक अंग है, पर पूर्ण ज्ञान नहीं। उन्होंने क्या किया और यह सब कैसे हुआ, यह प्रश्न गुरूजी को स्मरण करें तो बहुत छोटा सा प्रतीत होता है। वे ईश्वर-तुल्य हैं, ऐसा करना तो उनका स्वभाव है। संसार के लोगों को ईश्वर के समीप लाने की एक छोटी सी कला मात्र है। ...लेकिन यह प्रत्यक्ष देखकर, मेरे पिता के हृदय की धड़कन रुक सी गयी।

जैन धर्म के संस्कारों के कारण ऐसा हो ही नहीं सकता था। परन्तु यह तो उनके सामने हुआ। जैन धर्म के अनुसार, 'केवल ज्ञान' की प्राप्ति हो जाए तो मनुष्य कुछ भी कर सकता है यानि गुरूजी ने जो किया उससे प्रमाणित हो गया कि उन्हें 'केवल ज्ञान' की प्राप्ति हो चुकी है।

भानू ने कहा : जैन धर्म में पले, बड़े हुए मेरे पिता जी, ...हालाँकि उन्होंने गुरूजी के कई चमत्कार देख रखे थे परन्तु आज का चमत्कार इतना असम्भव था कि ब्यान से बाहर।

अतीत में जैन धर्म के अनुसार अच्छे कर्म करना, मूर्ति पूजा न करना इत्यादि का पालन करने वाले मेरे पिता, किसी को आत्म-समर्पण नहीं कर पाए थे। यहाँ आने के पश्चात् भी वे पूर्णरुप से सुरक्षित नहीं समझते थे। पर आज की घटना सुनिश्चित सी लगती थी। शायद गुरूजी ने आज का दिन उनके संशय समाप्त करने के लिए ही चुना हुआ था।

सब लोग चले गए तो उन्होंने एक प्रश्न पूछा और सोचा कि इसका जवाब इतना आसान नहीं होगा।

उन्होंने गुरूजी से पूछा, "गुरूजी, आजकल बहुत से अपने को गुरू कहलवाते हैं और संसार में बहुत से गुरू स्थान बने हुए हैं। मेरी शिक्षा और ज्ञान के अनुसार करीब 90% तथाकथित गुरू या तो नकली हैं या धोख़ेबाज। बाकी बचे 10%, वे ना तो नकली ही हैं और ना ही धोखेबाज़। लेकिन उसमें से 99.9% को स्वयं पूर्ण ज्ञान नहीं है, वे मेरा मार्गदर्शन क्या करेंगे...?" उन्होंने आगे कहा, "गुरूजी, मैंने यह भी सुना है, "गुरू बिना गति नहीं।" अपना लक्ष्य अर्थातः 'मोक्ष' प्राप्त करने हेतु मुझे अपने गुरू के समक्ष पूर्ण

*आत्म-समर्पण करना आवश्यक है, लेकिन यदि गुरु ही नकली या अधूरा ज्ञान लिए हुए है ...और मैं उसे आत्म-समर्पण कर दूं तो मैं अपने आपको गुमराह और बर्बाद कर लूंगा।*

*गुरुजी बड़े धैर्य से सुन रहे थे और मेरे पिताजी ने अपना सवाल जारी रखा, "गुरुजी, जब केवल 0.01% लोग ही अपने को गुरु कहलवाने के लायक हैं तो ज़रुरी हो जाता है कि उसको अपना गुरु धारण करने से पहले उसकी पूरी जाँच कर लूं क्योंकि मैं नहीं चाहता कि किसी अधूरे ज्ञान या नकली गुरु के प्रति पूर्ण आत्म-समर्पण करुं। ...और यदि जाँच करने की यह योग्यता मुझ में है तो मैं स्वयं् पहले से ही उससे अधिक ज्ञान रखता हूँ तो वह मेरा गुरु कैसे हो सकता है...?"*

*समय की छोटी सी अवधि में मेरे पिताजी ने इस संवेदनशील विषय पर सांसारिक ज्ञान की बात गुरुजी से कह दी।*

*गुरुजी ने क्या कहा, वह हम सबकी समझ के लिए महत्वपूर्ण है। उनका एक-एक शब्द जादुई है--- तथा गुरु-शिष्य के सम्बन्धों को परिभाषित करता है। यह वो तरीका था जैसा मेरे पिताजी ने उस समय तक कभी सोचा भी नहीं था। उस समय समझ के मामले में, मैं बहुत छोटा था लेकिन उनके वे शब्द बचपन में ही मेरे हृदय में बैठ गये।*

*गुरुजी ने बहुत धैर्य, शान्ति तथा बहुत आसान और संक्षेप में उत्तर दिया,*

***"कई जन्म लेकर भी, गुरु को ढूंढा नहीं जा सकता। हर जन्म में, गुरु ही अपने शिष्य को ढूंढता है।" वे आगे बोले, "तू क्या सोचता है, तूने मुझे ढूंढा है...? ...नहीं, मैंने ही तुझे ढूंढा है। जब सही समय आया, मैंने तुझे ढूंढ लिया और यहाँ तक ले आया।"***

*गुरुजी के पास आने से पहले मेरी माताजी को माइग्रेन की दर्द थी, जो उन्होंने ठीक कर दी। लगता है वह दर्द गुरुजी की ही एक रचना थी। मैं उस समस्या का धन्यवाद करता हूँ, जिसके कारण आज हम गुरुजी की शरण में हैं।*

*हे भगवान...!! विषय की क्या पूरी समझ है।*
*अद्‌भुत शब्द...! अद्‌भुत शैली...!!*

*भानू आगे बताते हैं---*

इसके बाद गुरुजी ने कहा कि कुछ चीजें ऐसी हैं जो शायद ही मैंने किसी को बतायी हों।

उन्होंने कहा, "पिछले 1000 सालों से मैं तेरे साथ हूँ।" तब उन्होंने मेरे पिताजी के पिछले 1000 सालों का इतिहास बता दिया। उनके इस समय के कई 'जन्म' और उनमें गुरुजी ने उन्हें कैसे ढूंढा। यहाँ तक बता दिया कि एक स्थान जहाँ पर मेरे पिताजी की फोटो पिछले सैंकडों सालों से टंगी हुई है।

वह दिन मेरे पिताजी की जिन्दगी में एक महत्वपूर्ण मोड़ था और मेरा भी।

हे मेरे महान प्रभु, आप क्या करते हो और कैसे करते हो, ये सब हमारी समझ से परे है। गुरुजी मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि हमेशा हमें अपनी शरण में रखें और अपनी कृपा बनाये रखें।

....प्रणाम गुरुजी

गुरूजी आये और कहने लगे, "राज्जे ने काम कर दिया।"

## 195. माताजी ने दो मार्च 2010 को एक आध्यात्मिक दिव्य दृश्य देखा।

2 मार्च 2010, सैक्टर-7, गुड़गाँव.....

माताजी अपने कमरे में बैठी हुई थी। मैं उनके दर्शन पाकर धन्य हो रहा था। उनकी उपस्थिति मात्र से मैं परम आनन्दित हो रहा था। तभी उन्होंने मुझे चाय का प्रसाद दिया और कहने लगीं... "राज्जे, किसी ने एक लड़के को भेजा था और वो कहने लगा कि उसे यहाँ रहने के लिए भेजा है। मैंने कह दिया, कोई बात नहीं, रह जाओ।"

माताजी ने आगे कहा, "इतने में तू आ गया और उसको गुस्से से डाँटने लगा और कहा, भाग जा यहाँ से, और वो भाग गया।" थोड़ी देर के बाद ऊपर से गुरूजी आये और कहने लगे, "राज्जे ने काम कर दिया।"

यह कोई ख़ास सन्देश था, ऐसा मेरा अनुमान है और मैं बड़ी उत्सुकता से इसका सारांश पाने की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

मैं अपने सुपर मास्टर 'गुरूजी' से बड़ी बेसब्री से यह जानने की प्रतीक्षा भी कर रहा हूँ कि वे मुझे बताऐं कि वह लड़का कौन था और उसे किसने भेजा था और दूसरी बात यह कि जब माताजी ने वहाँ रहने की अनुमति दे दी थी, तो मैंने उसे क्यों डाँटा और इस तरह उसे स्थान से क्यों भगा दिया। जबकि माताजी का निर्णय हम सब शिष्यो के निर्णय से ऊपर है।

पर पूरी बात समझ नहीं आ रही, कोई तो भेद है।

निश्चित रुप से इस उत्तर की अपेक्षा मैं सिर्फ गुरूजी से ही कर सकता हूँ।

दिल, दिमाग और मन से प्रार्थना करो तो आपकी आवाज़ गुरुजी तक पहुँच जाती है।

## 196. न्यूयार्क के गोपाल को उसका खोया हुआ जेवरों का बैग, वापिस मिल गया --चंद मिनटों में...

जेवरों का व्यापारी गोपाल किसी दूसरे शहर में नुमाईश के अभिप्राय से न्यूयार्क से रवाना हुआ। नुमाईश हेतु बहुत सारे जेवर एक बड़े से कंधे वाले बैग में भर कर हवाई जहाज़ की लग्गेज केबिन में रख कर निश्चिंत हो गया।

दूसरे शहर में जहाज़ पहुँचा और गोपाल ने उठ कर अपना बैग लिया और बाहर के लिए रवाना हुआ। अचानक उसे लगा कि बैग का वज़न कुछ कम है, उसने रुक कर बैग को खोला और स्तब्ध रह गया। ये बैग उसका नहीं था... सोचने लगा कि शायद किसी और के साथ बदल गया है।
परेशान होकर जहाज़ से बाहर की ओर भागा और दूसरे यात्रियों के हाथों में बैग देखने लगा। मगर कोई लाभ नहीं। बैग का कोई पता नहीं चला। बांवरा सा, खड़ा का खड़ा रह गया। ...लाखों के ज़ेवर खो गए।

...अब क्या करूं...?
...कुछ समझ नहीं आया तो

**गुरुजी का ध्यान किया और दत्त-चित्त होकर पुकार की, "रक्षा करो गुरुदेव" दूसरे हाथ से कड़े को पकड़कर अपने माथे से छुआ। आँखें बन्द कीं और रोते-रोते प्रार्थना करने लगा, "...ओ दाता, ...हे मेरे गुरुदेव, मेरा बैग किसी और के साथ बदल गया है, ...कृपा करें, ...मेरा बैग दिला दीजिए।"**

...और अचानक आँखें खोलीं तो सामने देखा, सामने ही किसी के कंधे पर ठीक वैसा ही बैग है। वह भागा और उसके सामने खड़ा होकर कहने लगा, श्रीमान, मेरे बैग के साथ आपका बैग बदल गया है, कृपया अपना लेकर, मेरा बैग मुझे लौटा दीजिए।

बात उसकी भी समझ में आ गई। उसने तुरंत बैग गोपाल को लौटा दिया और अपना बैग ले लिया। दोनो बैगों का ब्रांड और रंग बिलकुल एक जैसा था इसलिए गलती की संभावना थी।

एक अति विशाल तथ्य, गोपाल के सामने था। वह आँखों में खुशी के आँसू भर कर कहने लगा, "गुरुजी, आपने मेरी आवाज़ सुन ली...!! आवाज़ सुन ली या आप मेरे

साथ ही थे हर समय..? मैं आँखें बन्द करके खड़ा था और मेरे बैग वाला वो आदमी मेरे सामने आ गया, क्या करिश्मा किया आपने ...हे मेरे दाता।
फिर क्या था, सांस और दिल की धड़कने फिर से चलने लगीं!

* दिल, दिमाग, और मन से प्रार्थना करो तो आपकी आवाज़ गुरुजी तक पहुँच जाती है।

* दूसरी बात यह कि गुरूजी अपने भक्तों की आवाज़ ऐसे सुन लेते हैं जैसे भगवान सुनते हैं।

आफरीन ---

अमेरिका से गोपाल ने फ़ोन पर मुझे पूरा वृतान्त सुनाया कि कैसे उसकी प्रार्थना गुरूजी तक पहुँची और उसका खोया हुआ जेवरों का बैग, ...चंद मिनटों में मिल गया।

गोपाल दो कारणों से अति प्रसन्न था :-

...एक तो उसका खोया हुआ बैग मिल गया।

...और दूसरा ये कि संसार के सबसे बडे गुरूजी उसके इतने पास हैं और इतने दयावान हैं और अपनी कृपा इतनी जल्दी करते हैं..!!

गुरूजी ने कहा, "मैं तेरा विश्वास दृढ़ कर रहा था कि एक बार मुझे कह दिया तो काम होगा ही होगा।"

## 197. गुरूजी ने बिट्टू की तरफ देखा और उसकी उदासी का कारण पूछा।

यह बात करीब 1987 की है जब बिट्टू गुरूजी के कमरे में आया तो वह परेशान लग रहा था। हालाँकि गुरूजी सबकुछ जानते थे लेकिन फिर भी सरलता से उसकी परेशानी का कारण पूछा। बिट्टू ने ऊपर देखा और कहा कि वह अपनी व्यापारिक समस्या के कारण परेशान है। कहने लगा कि उसने किसी को चैक दिये थे और उम्मीद है कि भुगतान के लिए उसके बैंक में सोमवार को आयेंगे। लेकिन उसके खाते में पर्याप्त धनराशि नहीं है, इसलिए उसे लग रहा है कि उसके चैक बिना भुगतान के वापिस (Bounced) हो जायेगें।

गुरूजी ने अपने बिस्तर के गद्दे को कोने से उठाया और उसके नीचे रखे नोटों के बंडल उसे दिखाये और कहा कि ये तुम ले लो और अपना काम चला लो। बिट्टू के मन को शान्ति मिल गई। बोला कि वह ये सोमवार को ले लेगा क्योंकि कल तो रविवार है और अब बैंक बन्द हो गया है।

सोमवार को गुरूजी सुबह ही निकल गये और रात को देर से लौटे। उन्होंने बिट्टू को हल्के से डाँटते हुए कहा कि उसने वह पैसे नहीं लिए थे तो फिर कोई और ज़रुरतमंद आ गया और मैंने वो पैसे उसे दे दिये।

बिट्टू चिंता में डूबा हुआ चला तो गया पर अगले दिन पता किया तो चेक बैंक में अभी नहीं आये थे। रात को बिट्टू फिर आया तो गुरूजी कहने लगे, "तू फ़िकर न कर...! जा, मेरी चैक बुक ले आ।" बिट्टू ने कहा, "रात के दो बजे हैं, मैं सुबह ले लूंगा चैक।"

सुबह जब वह कमरे में गया तो गुरूजी जा चुके थे और अगला दिन भी बीत गया लेकिन बिट्टू को चैक नहीं मिल सका। परन्तु उसके बैंक की स्थिति अभी तक सामान्य थी और कोई भी चेक भुगतान के लिए नहीं आया था।

...और इस तरह कुछ दिन और बीत गये।

अगले शनिवार खिले हुए शानदार मूड में बिट्टू गुरूजी के कमरे में आया। वह गुरूजी के चरण-कमल दबाते हुए बोला, "मेरी बिजनेस पेमेन्टस तो मेरे खाते में आ गयी हैं लेकिन कमाल है कि मेरे काटे हुए चैक, अभी तक मेरे बैंक में नहीं आए हैं।" उसने कहा,

*"गुरूजी, आप क्या करते हैं, ये मुझे नहीं पता लेकिन सात दिन तक भुगतान के चैक बैंक मे ना आये, ये समझ से बाहर है।"*

*...और अब गुरूजी ने दिखा दिया एक और करिश्मा। गुरूजी ने अपने गद्दे का वोही कौना फिर से उठाया और कहा, "देखो पिछले शनिवार के पैसे अभी भी वहीं हैं, मैंने यह किसी को नहीं दिये थे। तेरा गुरू पर विश्वास दृढ़ करने के लिए मैंने यह एक रचना की थी।*

*...एक बार मुझसे कह दिया तो*
*चिंता नहीं अपितु विश्वास ज़रुरी है*
*कि काम तो होगा ही होगा।*

*वाह-----। हे गुरूदेव....,*

*मैं आपकी महिमा का गुणगान कैसे करूं।*
*मेरी सीमाऐं तो आपने स्वयं् निधारित की हुई हैं।*

गुरुजी ने कहा, "तुम नहीं, स्कूल हम चलायेगे बेटा।"

## 198. गुरुजी ने तिवारी से कहा, "रहने दे कागज़ अपनी जेब में, ...मैं जानता हूँ उसमें क्या लिखा है।"

दिल्ली निवासी तिवारी, अस्सी के दशक से गुरुजी की भक्ति में संलग्न है। औरों की तरह वह भी बड़े गुरुवार की प्रतीक्षा करता तथा लाईन में खड़ा होकर उनके दर्शन करता और अपनी इच्छाऐं व्यक्त किया करता था। लोगों की लाईन लम्बी होने के कारण गुरुजी हर एक को मिलते तो थे पर समय थोडा सा ही दे पाते थे। अतः तिवारी अपनी पूरी समस्याऐं कह नहीं पाता था। गुरुजी से मिल चुकने के बाद एक-एक करके याद आतीं तो पछतावा सा होता था।

एक बार उसने एक कागज़ पर सारी की सारी समास्यायें लिख लीं। जैसे ही गुरुजी उसके सामने आये, उसने कागज़ निकालने के लिए हाथ जेब में डाला। गुरुजी फ़ौरन कहने लगे, "रहने दे, मुझे पता है जो कुछ भी तू लिख कर लाया है। इतना कह कर गुरुजी ने कागज़ पर लिखी सारी की सारी बातें सुना दीं...!! ...और कहा, ये ही लिख कर लाया है ना...? गुरुजी ने शुरु से अंत तक सारा का सारा ऐसे बोल दिया, जैसे स्वयं ही लिखा हो।

तिवारी देखता ही रह गया। बचपन से सुना था कि ईश्वर त्रिकाल दर्शी है-- अब मैं पूर्ण विश्वास से ज़ोर देकर कह रहा हूँ....

---**गुरुजी, त्रिकाल दर्शी हैं**--

अपने सामान्य जीवन में, यह दम्पति अपनी कोई भी समस्या गुरुजी के समक्ष रखते और फिर उनके आदेश का पालन करते थे।

एक रविवार दोनो गुडगाँव पहुँचे। उनके पास एक फ्लैट के कागज़ थे लेकिन गुरुजी ने मनाह कर दिया और कहा, यह ठीक नहीं। तिवारी ने कहा कि दस हज़ार रुपये पेशगी दिए हुए हैं, अगर इन्कार कर देंगे तो पैसे डूब जायेंगे। गुरुजी ने हल्का सा डाँटा और कहा, "क्या मुझसे पूछा था देने से पहले...?"

कुछ समय बीता और किसी मित्र के कहने पर तिवारी और उसकी पत्नी शशि एक जमीन देखने चले गए। तिवारी तो

मान गया पर शशि को जमीन पसंद नहीं आयी। बहस होने पर दोनों गुरूजी के पास पहुँच गए ...निर्णय के लिए। गुरूजी ने 'हाँ' कर दी और आदेश दिया कि चार दीवारी करके एक कमरा बना दो, स्कूल चलाने के लिए यह ज़मीन अच्छी है।

गुरूजी, "स्कूल के बारे में तो मैंने कभी सोचा नहीं, क्यूंकि हमें इसका कोई तजुर्बा है ही नहीं।" गुरूजी ने कहा, "तुम नहीं, हम चलायेगे बेटा।" शशि कहने लगी कि गुरूजी इस जगह का नाम है निहाल विहार, जो मुझे बिलकुल पंसद नहीं। गुरूजी मुस्कुराए और कहने लगे कि यही निहाल विहार तुम्हें निहाल कर देगा।"

अतः 100 गज़ का प्लाट ले लिया गया और गुरूजी की आज्ञानुसार चार दिवारी और एक कमरा बना दिया गया। एक छोटा सा बोर्ड, 'बाल विकास पब्लिक स्कूल' के नाम से लगा दिया गया। जैसे ही कमरा तैयार हुआ, तीन बच्चे दाखिले के लिए आ गए और स्कूल शुरु हो गया।

इस तरह कुछ समय बीतने पर तिवारी ने गुरूजी से कहा कि बच्चे सिर्फ तीन ही हैं, तो गुरूजी ने कहा कि थोड़ा इंतज़ार करो और देखते जाओ, बहुत बच्चे आ जायेंगे। अब बच्चे आने शुरु हुए तो इतने कि जगह छोटी पड़ गयी। अब बड़ी जगह की ज़रुरत थी। इतने में किसी पड़ौसी ने अपना एक प्लाट साढ़े पांच लाख रुपये में प्रस्तुत किया! लेकिन इतने पैसों का प्रबंध कैसे होगा..? ...और फिर पहुँच गये गुरूजी के पास।

गुरूजी ने कहा, "हाँ कर दो,
पैसों का प्रबंध हो जाएगा।"

कुछ दिन बाद एक मित्र ने दो लाख रुपये भेज दिए और किसी रिश्तेदार ने तीन लाख रुपये दे दिए और इस तरह देखते-देखते प्लाट खरीद लिया गया। कमाल की बात यह थी कि सारा पैसा बिना ब्याज के मिला।

अब बिल्डिंग बनाने के लिए पैसा चाहिए था और तिवारी सोच में डूबा, गुरूजी के पास पहुँचा। गुरूजी ने कहा कि जिस प्रकार पहले किया है, यह प्रबंध भी मैंने ही करना है, तू चिंता क्यूँ कर रहा है...?

तिवारी का एक मित्र बैंक में काम करता था और उसे तिवारी की ज़रुरत का आभास था। उसे पता था कि तिवारी को बिल्डिंग बनाने के लिए धन की आवश्यकता है।

अब एक अनोखी घटना घटी ---
उसकी ब्राँच का लोन मैनेजर किसी दूसरी ब्राँच में ट्रॉन्सफर हो गया और उसकी सीट पर तिवारी के मित्र को बिठा दिया गया। लोन मैनेजर की सीट पर बैठते ही उसने फ़ौरन

तिवारी को लोन अप्लाई करने के लिए कहा और देखते ही देखते दस लाख़ रुपये का बैंक लोन मिल गया। बिल्डिंग बननी शुरु हो गयी। उधर बिल्डिंग बन रही थी और इधर तिवारी और शशि एक दूसरे को देखते रहते और आश्चर्यचकित थे कि हो क्या रहा है...! कोई अपना धन दे रहा है और वो भी बिना ब्याज के, तो कोई बैंक का लोन दे रहा है। पैसे पास हैं नहीं, फिर भी ज़मीन भी मिल गयी और बिल्डिंग भी बन रही है...!! ---कौन सी अदृश्य शक्ति है, जो इतना सब कुछ करती ही जा रही है और हम दोनों को आभास तक नहीं होने देती...?

बड़ा स्कूल बन गया और कमाल का चलने लगा। तीन चार साल के अंदर सारे कर्ज़ उतर गए और तिवारी और शशि को पता ही नहीं चला।

...याद आया कि गुरुजी ने कहा था,

**"तुमने क्या करना है, स्कूल हम चलाएंगे।"**
**....हाँ! यही हो रहा है आज तक...!**

तिवारी और शशि ऑफिस में बैठते हैं, बहुत थोड़ा सा काम करते हैं और स्कूल बाखूबी-कामयाबी के साथ चल रहा है।

**स्वर्ण अक्षरों में लिखी-पढ़ी ---और स्मरण करने वाली बात यह है कि जो-जो गुरुजी ने कहा था, वैसा-वैसा होता गया और आज भी हो रहा है....**

---हे भविष्य के ज्ञाता, मेरे भगवन् !
--मेरे गुरुदेव, कृपा कीजिये
--कृपा कीजिये

प्रणाम साहिब जी--

गुरुजी ने कहा, ''कहीं ले जाने की जरुरत नहीं है, मैं अपने आप ठीक कर लूंगा।''

## 199. जब माताजी को एक कार ने टक्कर मारी।

गुरुजी ने गुड़गाँव के सैक्टर 10-A के स्थान का निर्माण कार्य वर्ष 1986-87 में शुरु कर दिया था।

एक दिन जब निर्माण कार्य चल रहा था, माताजी, चारु, रेनू, योगेश को साथ लेकर सैक्टर 10-A के निर्माण स्थल पर पहुँची। गाड़ी योगेश चला रहा था। गुरुजी की बड़ी बेटी रेनू ने ड्राईवर से उसे ड्राईविंग सिखाने के लिए कहा। वह ड्राईविंग सीट पर बैठ गई और स्वतंत्र रुप से कार चलाने लगी।
एक चक्कर लगाने के बाद जब वह वापिस आ रही थी तो गाड़ी रोकने के लिए ब्रेक का पैडल दबाने के बजाय घबराहट में एक्सीलेटर का पैडल दबा दिया और वह सीधी माताजी की ओर जाने लगी। तेज गति से कार माताजी से जा टकराई और माताजी ज़मीन पर गिर गईं।

यह देखकर योगेश और वहाँ मौजूद लोग घबरा गए और माताजी को उठाकर तुरन्त आर्यन अस्पताल ले गये। लेकिन माताजी ने वहाँ अन्दर जाने से मना कर दिया और कहा कि उन्हें पहले स्थान ले जाऐं। वहाँ के डॉक्टर के.पी. चौधरी ने अस्थि विशेषज्ञ डॉक्टर कोछड़ जो गुरुजी का भक्त था, को उनकी जाँच करने के लिए बुलाया ! पूरी जाँच करने पर पाया कि बहुत सी हड्डियाँ क्षतिग्रस्त हुई हैं। उसने सुझाव दिया कि उन्हें एक्सरे के लिए अस्पताल ले जायें।

इतने में गुरुजी स्थान पर पहुँच गये और उन्होंने कहा,''कहीं ले जाने की ज्रुरत नहीं है, मैं अपने आप ठीक कर लूंगा। बच्चों ने उनकी बाँह व शरीर पर पट्टियाँ बाँध दी। डॉक्टर ने माताजी से बिना घी और कम नमक का हल्का खाना खाने का अनुरोध किया। ...और कुछ दिनों तक माताजी बिना घी और नमक के खिचड़ी खाती रहीं। डॉक्टरों ने माताजी के चलने फिरने पर रोक लगा दी।

सबने गुरुजी से उन्हें जल्द ठीक करने की प्रार्थना की लेकिन गुरुजी माने नहीं। कहने लगे, ''तुम इन्हें पहले अस्पताल क्यों ले गये... मेरे पास क्यों नहीं लेकर आये...? अगर तुम सीधा मेरे पास लेकर आते तो मैं अपने आप इनके दर्द को भी दूर कर देता और

हड्डियों को भी ठीक से जोड़ देता। तुमने अस्पताल के बारे में पहले सोचा और मेरे बारे में बाद में।"

इसी तरह कुछ दिन बीत गये !
एक दिन जब माताजी कुछ खा रही थी तो गुरूजी कमरे में आये और माताजी के हाथ से कटोरी लेकर खिचड़ी चख़ी और हैरान होकर पूछा, "यह खा रही हो तुम... इसमें तो कोई स्वाद ही नहीं है..." कटौरी उन्होंने एक तरफ रख दी और इन्दु या बिट्टू को आदेश दिया कि अपनी माँ के लिए वैसा ही खाना लाओ जैसा उनके लिए बनाया गया है।

खाने के बाद उनका मूड़ एकाएक बदल गया और वे बोले, "चल मॉस्टर आजा, मैं अभी खोलता हूँ सारी पट्टियाँ और मिनटों में सब पट्टियाँ खोल दीं। इसके बाद उन्होंने माताजी के दर्द वाले हिस्सों को छुआ और वे तुरन्त दर्द मुक्त हो गये और उनकी सभी हड्डियाँ भी अपनी-अपनी जगह पर सुव्यवस्थित ढ़ंग से जुड़ गई। यह एक चमत्कारी दृश्य था और वहाँ पर खड़े सभी लोग बेहद़ खुश और हैरान थे।

माताजी ने अपना नियमित भोजन करना शुरु कर दिया और कुछ दिनों में धीरे-धीरे चलना भी शुरु कर दिया एक हफ़्ते के अन्दर-अन्दर ही वे करीब-करीब सामान्य हो गयीं।

कल्पना करो--
उन दिनों में माताजी के दर्द को गुरूजी ने कैसे बरदाश्त किया..? मैं यह जानता हूँ कि ऐसा वह पहले दिन भी कर सकते थे। लेकिन कोई विशेष कारण ही रहा होगा और दु-धटना का भी विशेष ही कारण होगा कि पिछले कुछ दिनों तक माता जी को इतना दर्द सहन करना पड़ा।
**सर्वज्ञ और स्वयं् कर्ता गुरूजी माताजी को सबसे ज़्यादा प्यार करते हैं। ...परन्तु ऐसा लगता है कि शायद अपने बच्चों के आध्यात्मिक ह्रदयों में विश्वास और अनुशासन को दृढ़ता से स्थापित करना चाहते थे ...साहिब जी।**

यह है स्वरुप...
...हमारे श्रद्धेय गुरूजी महाराज का।

ऐसे महानतम महान गुरूदेव को करोड़ों प्रणाम...

...हे गुरूओं के गुरू, कृपा निधान गुरूजी,
हमें अपनी शरण में रखना
...और अपनी कृपा बनाए रखना
...हमेशा ...हमेशा।

*गुरूजी ने कहा कि चलो कोई बात नहीं, सब ठीक हो जाएगा।*

## 200. *गुरूजी ने पप्पू सरदार की कटी हुई ऊँगली का घाव ठीक कर दिया।*

*पप्पू-बिट्टू-गग्गु और निक्कू, यह चार लोग ऐसे थे जो गुरूजी की व्यक्तिगत सेवा में संलग्न रहते थे। लोगों से मिलकर जब गुरूजी अपने कमरे में आते तो ये उन्हें चाय वगैरह पिलाते और उनके आराम का ध्यान रखते थे। प्रतिदिन की सेवा के कारण यह चारों, गुरूजी को अति प्रिय थे। अद्भुत घटनाओं में एक ऐसी घटना, जो बाकी सबसे भिन्न और ऊंचे स्तर पर देखी गयी, उसका वृतान्त दिया जा रहा है।*

*1980 की गर्मियों में रात के 9 बजे के करीब, पप्पू अपनी गुड़गाँव फैक्ट्री में प्रेस मशीन पर काम कर रहा था। उसे लगा कि शायद कुछ गिरा है। अचानक उसने अपने हाथ की ओर देखा तो पता चला कि उसकी ऊँगली कट कर गिर गयी है और हाथ खून से लथ-पथ है।*

*बिट्टू को साथ लेकर वह फ़ौरन गुरूजी के पास पहुँचा और सारी घटना का ब्यौरा दिया। गुरूजी ने कहा कि ऊँगली का कटा हुआ टुकड़ा दो। लेकिन पप्पू ने नकारते हुए कहा कि उसका कोई पता नहीं चला और वे तो जल्दी में भाग कर स्थान पर आ गए हैं।*

***गुरूजी ने कहा कि चलो कोई बात नहीं, सब ठीक हो जाएगा। जाओ अपना काम करो।***

***बस इतना ही...!***

*पप्पू डॉक्टर के पास नहीं गया और घर पर ही हल्दी तेल लगा कर घरेलू पट्टी बाँधता रहा। करीब तीन सप्ताह बीते और ऊँगली का घाव भर गया। आश्चर्य की बात यह हुई कि घाव भरने के साथ-साथ ऊँगली उग गयी और उससे बड़ा आश्चर्य यह था कि नाखून भी उग आया। ऐसा पहले कभी न देखा और न ही कभी सुना।*

*आज ग्यारह सितम्बर, 2011 को मैं पप्पू को पंजाबी बाग स्थान पर मिला और उससे उपरोक्त घटना का पूरा विवरण सुना। उसकी ऊँगली को अच्छी तरह से देखा जिस पर नाखून भी उगा हुआ है। मगर ऊँगली की लम्बाई कुछ छोटी है।*

बिना डॉक्टरी इलाज के घाव भर गया, यह तो समझ में आ गया, लेकिन ऊँगली उग कर लम्बी हो गयी और तो और नाखून भी उग आया, यह तो समझ से बिलकुल परे है ...और पहले कभी नहीं सुना।

* क्या किया होगा गुरूजी ने...?

* क्या कहा होगा ऊँगली को ...और

* उस ईश्वरीय शक्ति को जिसने ऊँगली उगा कर लम्बी कर दी और नाखून भी उगा दिया।

गुरूजी...,
ऐसा लगता है कि इन सबके साथ आपकी सीधी और खुली बातचीत है।

मेरा साष्टाँग प्रणाम व मेरी प्रार्थना सुनें और
मुझमें सामर्थ्य दें कि मैं आपकी शोभा का
गुणगान कर सकूं...।

प्रणाम जी...

गुरूजी गुस्से में कहने लगे, "सुबह-सुबह बच्चों का दिल दुखा कर आया है..? ...जा, वापिस जा, जिसको डाँट के आया है उसे और बाकी सब बच्चों को लेकर आ, तभी सेवा करने दूंगा।"

## 201. गुरूजी एक उच्चतम् अनुशासित और बच्चों के लिए एक सुकोमल हृदय रत्न।

बड़ा वीरवार था, हमारे जीवन का एक बहुमूल्य दिवस...।

हर महीने की तरह, मैं सुबह-सुबह गुडगाँव पहुँचा और गुरूजी के चरण-कमल छुए। मगर आशीर्वाद के बदले गालियाँ सुनने को मिली। गुस्से में कहने लगे, "सुबह-सुबह बच्चों का दिल दुखा कर आया है..? ...जा, ...वापिस जा, जिसको डाँट कर आया है उसे और बाकी के सब बच्चों को लेकर आ, तभी सेवा करने दूंगा।"

बात यह हुई थी कि मैं जैसे ही गुडगाँव जाने के लिए बाहर निकला तो गाड़ी नहीं थी। पता चला कि बिटिया अपनी स्कूल ड्रेस लेने के लिए धोबी के पास गयी थी। देर होने की सम्भावना से मैं क्रोधित हो गया था इसलिए उसे कुछ ज्यादा डाँट दिया।

अब तो कोई चारा नहीं था मेरे पास, अतः मैं वापिस दिल्ली आ गया।

पहले स्कूल गया, बच्चे की प्रिंसीपल को मनाया और बाकी बच्चों को लेकर, वहाँ से बड़ी बेटी पुन्चू को कॉलेज से लिया और पहुँच गया स्थान पर, चारों बच्चों को लेकर। अपनी गलती का पूरा आभास हो चुका था मुझे। क्षमा याचना की और वे मान गये और फिर सेवा पर बैठने की आज्ञा मिल गयी। इस छोटी से लगने वाली घटना ने मुझे गुरूजी का आकार और उनका छुपा हुआ रुप स्पष्टतया बता दिया।

1. पहली बात यह कि यह कहीं भी हों, जितनी दूरी पर क्यूँ न हों, मेरी हर गति विधि को देख लेते हैं।
2. दूसरी बात यह कि बच्चों की भावनाओं का कितना ध्यान रखते हैं।
3. तीसरी बात यह कि किसी भी बुराई को मेरे व्यक्तित्व पर छाने नहीं देते।

**अनेक रुपों वाले मेरे इस मालिक का, मेरे आराध्य गुरूदेव का ऐसा रुप ब्यान नहीं हो सकता। बिलकुल अनोखा है।**

ऐ मेरे हजूर, आपको कोटि-कोटि प्रणाम के बाद प्रार्थना है कि कभी भी बिसारना नहीं मुझे। हर पल मुझे देखते रहना।

ब्रह्माण्ड में सबसे महान-साहिब जी !

गुरूजी ने कहा, राज्जे, "मैंने तुम्हें इतना आध्यात्मिक खज़ाना दिया है कि जिसे तुम दिन रात भी लुटाओ तो भी तुम उसे समाप्त नहीं कर सकते।

## 202. अपने गुरू के होते हुए<br>तू दाता बन रहा है...?<br>हाथ नीचे कर और गाड़ी चला।

यह घटना गुरूजी के रुप और उनके असीम ज्ञान का विवरण है। ऐसा उद्हारण शायद ही कहीं और मिले।

हर एक गुरू अपने शिष्य को ज्ञान देते हैं लेकिन इस तरह का ज्ञान जो गुरूजी ने मुझे चलती गाड़ी में दिया, शायद ही सुनने में आया हो कभी। वो ज्ञान एक शिष्य को समझाने के लिए नहीं, उसे झिंझोड़ने के लिए था। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि लेश मात्र भी बुद्धि का प्रयोग बहुत बड़ी बाधा उत्पन्न कर सकता है। अतः बुद्धि का पैकअप अति आवश्यक था।

एक दिन कहीं जा रहे थे। गुरूजी साथ वाली सीट पर बैठे थे और मैं गाड़ी चला रहा था। रास्ते में कई चौराहे आते हैं जहाँ लाल बत्ती दिखने पर गाड़ी रोकनी पड़ती है। ऐसे ही एक चौराहे पर मैंने गाड़ी रोकी तो एक भिखारी ने मुझसे पैसे मांगे। मैंने डैश-बोर्ड पर से एक सिक्का उठाया और उसे देने ही वाला था कि गुरूजी ने आवाज़ दी, "राज्जे, हाथ नीचे कर और गाड़ी चला।" मैंने हल्का सा गुरूजी की तरफ देखा, सिक्का वापिस रखा और गाड़ी चलाने लगा।

चौराहा लाँघ कर मैंने पूछा, "गुरूजी, आपने उस भिखारी को पैसे क्यों नहीं देने दिये...?" गुरूजी ने मेरी तरफ देखा और संजीदा स्वर से कहने लगे, "बेटा, अपने गुरू के होते हुए तू दाता बन रहा था।

"गुरूजी, मुझसे कोई भूल हुई है क्या...?

गुरूजी ने कहा, "अपने गुरू के साथ होते हुए भी तुम, समर्पित हो अपनी 'मैं' में...!! भिखारी ने पैसे मांगे तो क्या तुम्हारे गुरू ने नहीं देखा था...?"

तुम्हारे मन में उसके लिए अगर करुणा या दया उत्पन्न हुई थी तो उसे अपने मन में रखते और प्रतीक्षा करते अपने गुरू के आदेश की। गुरू उसे अपने आप दे देता या फिर तुम्हें देने का आदेश देता।

...और दूसरी बात यह कि मेरे शिष्य से कोई कुछ माँगे तो हाथ से कुछ सिक्के देने की बजाये मुँह से दुआ दे दे, उसे इतना मिल जाएगा, जितना उसने सोचा भी न होगा।

*तृप्त हो जायेगा वो...। ...लेकिन तुम उसे सिर्फ 25 पैसे का एक सिक्का ही दे रहे थे। यही है भूल।*

*गुरु जब शिष्य के साथ हो तो शिष्य का धर्म है कि क्रिया शीलता से बच कर रहे और अपने गुरु को करते हुए देखे और आनन्द का अनुभव करे।*
*गुरु के साथ शारीरिक रुप में रहने का अवसर बहुत ही महत्त्वपूर्ण होता है। दिमाग लगाये बिना इस सुनहरी मौके व अवसर का भरपूर लाभ उठाये। सिर्फ आँखों और कानों का प्रयोग करे, दिमाग और मन का कभी नहीं। कारण... यह है कि इनके प्रयोग से बुद्धि काम करना शुरु कर देती है। लेकिन बुद्धि की सीमा निर्धारित है। बुद्धि की सीमा जहाँ समाप्त होती है, वहाँ से शुरु होता है गुरुजी का पहला निर्देश शब्द और फिर गुरुजी का ज्ञान, जिसकी सीमा है ही नहीं।*

*गुरुजी ने फिर मेरी ओर देखा और कहने लगे, "राज्जे, उसे भिखारी किसने बनाया है?"*
*मैंने उत्तर दिया, "भगवान ने।"*

*"क्या भगवान का न्याय गलत है...!!"*
*मैंने कहा, "...कभी नहीं गुरुजी"*

*गुरुजी ने कहा, "तू दान देकर उसे अमीर बनाना चाहता था...!!*

*इससे यह सिद्ध हो जाता कि भगवान ने गलती की और तूने उसका सुधार कर दिया। यानि भगवान् के निर्णय के बिलकुल विरुद्ध 'एक कोशिश'...? सर्वशक्तिमान्, सारे संसार का मालिक जिसकी रचना में तू भी मात्र एक जीव है ...अन्य जीवों की तरह।*
*...आज उसको चुनौती जैसा नहीं लगेगा...?*

*सुनकर मैं दंग रह गया। ऐसा विचार तो कभी आया ही नहीं मेरे मन में। असमंजस में मैंने पूछा, "तो गुरुजी, क्या दया धर्म गलत है...?"*

***गुरुजी ने कहा, "नहीं बेटा, संसारी लोगों के लिए दया धर्म, उत्तम धर्म है परन्तु गुरुशिष्य के लिए एक ही धर्म है, "हर समय अपने गुरु को निहारे और उससे आदेश लेकर उसका पालन करे।" कहाँ दया करनी और कहाँ शान्त रहना है, उसे गुरु ही निर्धारित करता है।***

*इतने में गुरुजी फिर कहने लगे, "बेटा, मैंने तुम्हें आध्यात्म का इतना बड़ा खज़ाना दिया हुआ है कि अगर तुम दिन-रात भी लगे रहो खर्च करने में, तो भी समाप्त नहीं हो सकता और तुम क्या देने लगे थे उस भिखारी को...*
*...केवल एक बार में सिर्फ एक सिक्का...?*
*बस इतना सा...!!*

*वाह--- गुरुजी वाह...!!*

आप, आप ही हैं।
आप जैसे सिर्फ आप ही हैं ...साहिब जी।

जिस तरह आपने शिष्य धर्म और भक्त धर्म का
अवलोचन पूर्ण विस्तार के साथ समझाया है,
ऐसा तो कभी पता ही नहीं था, मालिक।

एक गुरु भक्त के लिए दया और दान करना ऊँचा धर्म है और उसी तरह गुरु शिष्य के लिए अपने गुरु को समर्पित होकर माँगने वाले पर दया करना नहीं ...उसे दुआ देना धर्म है।

बारम्बार नत्मस्तक प्रणाम---

हे गुरुओं के गुरु, 'गुरुजी'

गुरूजी ने उसे कहा, "चारया, तू आपे ही ते मेनूं कया सी के गुरूजी, "मैं अपना ख़्याल आप रख लवांगी, मम्मी नूं जान दयो।"

## 203. गुरूजी चारु के मन में आये विचार भी जान गये।

मेरी सबसे छोटी बेटी चारु स्ट्रा की मदद से अपनी माँ को नारियल पानी पिला रही थी। उस समय उसकी माँ, गुलशन, बहुत अस्वस्थ थी। उसके एक्सीडेन्ट को हुए करीब पाँच साल बीत गये थे। उसने अपना एक हाथ उसके सिर के नीचे रखा हुआ था और दूसरे हाथ से उसके मुँह में स्ट्रा लगा कर नारियल पानी पिला रही थी।

लेकिन यह बहुत मुश्किल प्रतीत हो रहा था क्योंकि कमज़ोरी की वज़ह से उसका सिर स्थिर नहीं था। वह इधर-उधर झुक जाता था और चारु को दोनों कार्य एक समय पर करने पड़ रहे थे। अर्थात वह नारियल को स्ट्रा के साथ सम्भालते हुए उनके मुँह में लगाती और उसके सिर को इधर-उधर लुड़कने से रोक भी रही थी। चारु बार-बार इस कार्य को करने की कोशिश करती लेकिन यह मुश्किल कार्य था क्योंकि गुलशन का आत्म संतुलन खो चुका था।

चारु सोचने लगी और प्रार्थना करने लगी, "गुरूजी, यदि मेरी मम्मी सिर्फ मेरे कारण ही इस दर्दनाक स्थिति में है, तो उसे जाने दो। मैं अपना ख्याल स्वयं् रख लूंगी।" वास्तव में कुछ समय पहले चारु ने गुरूजी से प्रार्थना की थी कि उसकी माँ जीवित रहे, जब तक कि उसकी शादी तथा बच्चे हों। लेकिन उसकी आज की हालत देखते हुए उसने अपना विचार बदल लिया और गुरूजी से प्रार्थना की, कि यदि ऐसे ही जीना है तो उसकी माँ को चला जाना चाहिए। यह बात उसने सिर्फ सोची थी, गुरूजी से कही नही थी और कुछ ही दिनों में उसकी माँ चली गईं।

अपनी माँ के दुखद् निधन के बाद वह परेशानी और गहरे दुख के बीच, गुरूजी के पास गयी। वह बहुत अधिक दुखी थी। उसे इतनी परेशानी की हालत में देखने पर गुरूजी ने कहा, "चारया, तू आपे ही ते मेनूं कया सी कि गुरूजी, मैं अपना ख़्याल आप रख लवांगी, मम्मी नूं जान दयो।"

चारु यह सुन कर स्तब्ध रह गई। ऐसा उसने गुरूजी के समक्ष रु-ब-रु होकर कभी नहीं कहा था। माँ की दयनीय हालत देखकर उसके मन में विचार ज़रुर आया था कि वह प्रार्थना करेगी।

गुरूजी, "मुझे तो यह विचार आया था और मैंने आपसे प्रार्थना की थी, लेकिन आपने मेरे विचारों को भी सुन लिया...?"

आप परमेश्वर हैं गुरूजी....... ...प्रणाम जी

गुरूजी ने कहा कि पहले पी कर तो देखो... क्या है ये... !

## 204. गुरूजी ने एक भटके हुए भक्त की दिशा बदल दी और उसके जीवन की रक्षा की।

उन दिनों जब गुरूजी ऑफिस के काम से टूअर लगाते थे तो अक़्सर हिमाचल प्रदेश में ज़्यादा जाते थे। इसी तरह एक बार उन्होंने हिमाचल के एक छोटे से नगर में अपना कैम्प लगाया। कुछ दिनों बाद एक तांत्रिक जो उस इलाके में काफी प्रसिद्ध था, गुरूजी के कैम्प में आया और भक्ति के बारे में चर्चा करने लगा।

चर्चा के दौरान उसने अपनी इच्छा शक्ति का ज़िक्र किया और गुरूजी को प्रभावित करने हेतु कहने लगा कि वह जब चाहता है शराब की बोतलें अपने आप उसके पास चली आती हैं। बातों-बातों में उसके मुख से निकल गया के एक के बाद दूसरी और फिर, कभी-कभी तो तीसरी बोतल भी पी जाता है और उस पर कोई असर नहीं होता।

उसे पता नहीं था कि सुनने वाला कौन है ...शायद उसने समझा था कि कोई सरकारी अधिकारी (Government Officer) है, जिसे भगवान क़ी भक्ति का शौक है। वह तो सोच रहा था कि शराब का नाम सुन कर गुरूजी उसकी वाह-वाही करेंगे, लेकिन असर कुछ उल्टा ही हो गया। उसने गुरूजी को अपने स्थान पर आमंत्रित किया, जिसे गुरूजी ने स्वीकार कर लिया।

कुछ समय के बाद गुरूजी उसके स्थान पर पहुँच गए। वह खुशी से झूम उठा और कहने लगा, “बताईये क्या पीयेंगे...?” गुरूजी कहने लगे, “आज हम पिलायेंगे आपको।” ... और उन्होंने अपनी जेब से एक छोटी सी बोतल निकाली और उसमें से थोड़ी सी एक गिलास में डाल कर उसे दी। गिलास हाथ में लेकर वह हंस पड़ा... कहने लगा, “यह क्या...!! इससे तो मेरी दाड़ भी गीली नहीं होगी...” गुरूजी ने कहा कि पहले पी कर तो देखो... क्या है ये...!!
...और वो एक ही घूँट में पी गया।

अभी एक मिनट भी नहीं बीता था कि वह झूम उठा और गिरने जैसा लगने लगा और कहने लगा, “अरे यह क्या हुआ मुझे...? दो-दो बोतल पीने वाला, इतनी सी भी नहीं पचा सका,...यह क्या कर दिया आपने मुझे....?

.......कौन हैं आप...?”

**गुरुजी ने कहा, "आप एक भक्त हैं और आने वाले समय में इतनी ज़्यादा शराब आपका नाश कर देगी। आपके जीवन रक्षा हेतु ही मैंने ऐसा किया है, भविष्य में आप इससे ज्यादा कभी भी नहीं पी सकेंगे।"**

*...और फिर ऐसा ही हुआ, वह कभी भी उससे ज़्यादा शराब नहीं पी सका। इस तरह, गुरुजी ने एक ईश्वर के भक्त के जीवन और भक्ति-पथ की रक्षा की.....*

*...धन्य हैं गुरुदेव आप।*

*यह आपकी महिमा है कि*
*आपने एक अनजान व्यक्ति को भटकने से*
*इसलिए बचा लिया क्योंकि वह एक ईश्वर भक्त था।*

नोटः -
सभी कार्यक्रम की तिथियों के लिए, स्थान के नोटिस बोर्ड तथा गुरूजी की वेब साईट देखे--
www.gurujiofgurgaon.com

## गणेश चर्तुथी, महाशिवरात्रि, गुरूपूर्णिमा धनतेरस एवं प्रत्येक बड़े वीरवार पर सेवा के लिए :

हिमगिरी पब्लिक स्कूल,
सैक्टर 10-A, पटौदी रोड,
कादीपुर गाँव के पास,
गुड़गाँव। हरियाणा

## बंसत-पंचमी व निर्वाण दिवस पर भंडाराः

नीलकण्ठ धाम,
नजफगढ. - तिलकनगर रोड,
निकट साँई बाबा मंदिर,
नजफगढ़,
नई दिल्ली-110043

## गुरूजी का मुख्य स्थान 1

हिमगिरी पब्लिक स्कूल,
सैक्टर 10-A, पटौदी रोड़,
कादीपुर गाँव के पास,
गुड़गाँव। हरियाणा

## गुरूजी का मुख्य स्थान 2

हिमगिरि,
मकान नं0 702, सैक्टर 7,
जय सिनेमा के पीछे,
गुड़गाँव। हरियाणा

## गुरूजी का जन्म स्थान

शीतला मंदिर,
दिल्ली गेट,
ग्राम व पोस्ट हरियाना,
ज़िला होशियारपुर (पंजाब)

## “सबसे बड़े कलावान ...हे गुरुदेव”

*एक अछूते और अनुपम आनन्द की अनुभूति होती है जब,*
*मैं अतीत के उस समय की याद करता हूँ।*
*(गुरूजी के साथ उनका राज्जे)*